टी ऑस्टीन स्पार्क्स

परमेश्वर का आत्मिक घर (भवन)

God’s Spiritual House

यीशु मसीह की कलीसियाई सेवाकार्य के ऊपर एक स्मरणीय अध्ययन

अनुक्रमणिका

१	**प्राक्कथन**	
	टी ऑस्टीन स्पार्क्स से मिलिये	
२	**पहला पाठ**	
	परमेश्वर के पुत्र का उत्कर्ष	
३	**दूसरा पाठ**	
	मसीह में परमेश्वर के विश्राम तथा संतुष्टि का आश्वासन	
४	**तीसरा पाठ**	
	चुने हुओं के छुटकारे तथा जीवन में सेवाकार्य	
५	**चौथा पाठ**	
	हर एक स्थान में मसीह का प्रतिनिधित्व	
६	**पाँचवा पाठ**	
	परमेश्वर के घराने का अधिकृत कानून	
७	**छठा पाठ**	
	लेपालकपन के लिए उत्तराधिकार की पाठशाला	
८	**सातवाँ पाठ**	
	उत्तराधिकारी के स्कूल से स्नातक की उपाधि प्राप्ति	
९	**आठवाँ पाठ**	
	“सर्वश्रेष्ठ-विश्वास,” और अंतिम विचार	

प्राक्कथन

टी ऑस्टीन स्पार्क्स से मीलिए

टी. ऑस्टिन स्पार्क्स उन प्रकाश-स्तम्भो में से एक थे जिन्होंने १९३०-१९७० के बीच के वर्षो कों रोशन किया..... यह समय संयुक्तराष्ट्र अमरिका तथा ग्रेट ब्रिटन के लिए आत्मिक सूखा जैसा था।

कलीसिया के इतिहासकार, जैसे वे भूतकाल के इतिहास को लिखते है, भिन्न-धमविलम्बी (Dissenters) व्यक्तियों की तलाश में रहते है, यानी ऐसे लोग जो सांप्रदायिक कलीसिया के बाहर हो। नियमित रुप से, इतिहासकारों ने इस बात को नोट किया है कि ये लोग सचमुच अपनी सदी में जिसमे उन्होने जीवन बिताया, नई बातों को प्रकाशित किया है। टी ऑस्टीन स्पार्क्स उन में से एक था, और वह असाधारनों में असाधारन (Giant among giants) था।

बीसवी सदी में जिनके नाम अग्रसर है वे है चीन के वॉचमैन नी, नेपाल के प्रेम प्रधान, भारत के बख्त सिंग तथा ग्रेट ब्रिटन के टी. ऑस्टीन स्पार्क्स। वे सांप्रदायिक कलीसिया के बाहर होकर एकार्थक (unequivocally) रुप में खड़े हो गये। इन चारों में से सीर्फ नी तथा स्पार्क्स ने विस्तारित रुप से लिखा है। वॉचमैन नी ने करीबन २०० किताबें लिखी। टी. ऑस्टीन स्पार्क्स ने लगभग १०० किताबे लिखी। उनकी

किताबों से उन लोगों को उत्तेजना मिलती है जो सांप्रदायिक कलीसिया के बाहर रहकर सोचते है। यह बात और रोचक है कि ये दोनों मित्र थे, एक ही समय में रह चुके है, तथा एक-दूसरों के सलाहकार (mentors) थे।

वॉचमैन नी के विषय में काफी जानकारी है, तथा उनकी सम्पूर्ण सेवकाई को किताबों में पाया जा सकता है।नी की सेवकाई के इस खजाने को इस बात की ख्याति दी जा सकती है कि नी आशिया महाद्विप मे कलीसिया आन्दोलन के संस्थापक थे, जिसे 'छोटे झुण्ड' (The little flock) के रुप संदर्भित किया गया है। इसके विपरित, टी. ऑस्टीन स्पार्क्स ने सीर्फ एक ही काम को सिध्द किया है, जो "न्यु खिश्चन फैलोशिप", के नाम से जानी जाते है। यह सेवकाई हॉनर ओक स्ट्रीट पर होने के कारण "द हॉनर ओक मिनिष्ट्रि" के नाम से प्रचलित है।

यह बहुत ही रुचि रखनेवाली बात है कि परमेश्वर ने बीसवी सदी के पूर्वार्ध मे इन लोगों को प्रचारक के रुप में नियुक्त किया। वॉचमैन नी लगभग १९०० में पैदा हुए थे। उनकी प्रचार की सेवकाई १९५० मे खत्म हुई। टी ऑस्टीन स्पार्क्स १८८८ में पैदा हुए थे। बख्त सिंग भी बीसवी सदी के आरमी में पैदा हुए थे। इतिहास इस बात की प्रतिक्षा कर रहा है कि बीसवी सदी के उत्तरार्ध में परमेश्वर ने किन्हे इस्तेमाल किया..... और वे लोग जो इक्किस वीं सदी से बातें करे।

अब समय है मसीही लोगों का टी. ऑस्टीन स्पार्क्स की खोज करने का। इनकी सेवकाई एक उच्चकोटि की, अद्वितिय तथा विशेष है। उनकी सेवकाई में मसीह

को जिस प्रकार केन्द्र स्थान में रखकर उनपर प्रकाश डाला गया है, वैसा अन्य किसी सेवकाई में नही पाया जाता।

बहुत से कारणों से यह कहा जा सकता है कि टी. ऑस्टीन स्पार्क्स ने अंग्रेजी मे गहरी तथा मूल्यवान सेवकाई का प्रमाण साम्प्रदायिक कलीसिया के बाहर रहकर ही दिया।

टी. ऑस्टीन स्पार्क्स की सेवकाई को खोना मसीही परिवार के प्रति आधुनिक समय में की गई महानतम् कार्यवाही को खोना होगा। उन्हे पढ़िए, और ध्यान से पढ़िए।

- जीन एडवर्डस्

अमरिका के प्रसिध्द कथालेखक

पाठ पहला
परमेश्वर के पुत्र का उत्कर्ष

शास्त्रपाठ : २ इतिहास २२:१ १-१९; २८:२-७;
२९:२०, २२-२५, प्रेरित २:३०-३६;
७:४७-४९; २ पतरस २:४-५;
इब्रानि ३:६; १२:५,९; ईफिस १:२०-२३.

मैं परमेश्वर के घर के लेपालकपन (Sonship) के विषय बहुत ही व्यस्त हूँ, और मै इस नतिजे पर पहुँचा हूँ कि यह प्रभू की ओर से पैगाम है। इस आत्मिक घर की बहुत सी पहलुएँ है। उनमे से जितनों के ऊपर हम विचार करेंगे, सब दर्शनीय रहना चाहिए।

यह बिल्कुल साफ है कि यह विषय आज संसार में जो हो रहा है उससे काफी संगत है। विशेषकर, प्रभु के लोगों के लिये इसमे एक जीवित तथा सच्चा संदेश है, और मै विश्वास करता हूँ कि हम इस सच्चाई को हमारे जीवन में लागू करेंगे और इसे एक परिचित बाइबल अध्ययन पाठ के रुप में नही लेंगे।

मसीह का उत्कर्ष हुआ है –

गवाही की आधारशिला

हम परमेश्वर के घर की शुरुआती बिन्दू को मद्दे नजर रखते हुए धर्मशास्त्र क्या कहता है इस विषय के साथ आरंभ करेंगे, अर्थात, परमेश्वर के पुत्र का उत्कर्ष जो सार अधिकार तथा महिमा का शिरोमणी है। आत्मिक घर (जो हम लोग है) का एकमात्र उद्देश्य यह है कि हम मसीह के उत्कर्ष की सच्चाई में आनंदित हो तथा इसका प्रचार करे। पुराने नियम का जो अनुच्छेद हम ने पढ़ा है, जो कि भविष्यद्वक्ता की किताब से है, इसी आत्मिक घर को दर्शा रहा है, सभी इस हकिकत का इकरार करते हुए इसे अद्भूत तथा स्पष्ट रीति से प्रदर्शित करते है। दाऊद का जेष्ठ पुत्र-क्यों कि परमेश्वर ने उसे बहुत से पुत्र दिये थे परमेश्वर ने चुने हुए के रुप में अलग करके उसे ऊँचे स्थान में खड़ा कर दिया; और इस बात को देखना दिलचस्प होगा, जबकि सुलैमान को परमेश्वरने इस स्थान के लिए अभिषेक करके चुन लिया, तब भी जब तक उस स्थान के लिये कोई और कोशीश न करे, तब तक सुलैमान को प्रसिध्दि नही मिली। आप आदोनिजा की घटना को याद कर सकते है, जिसने सिंहासन पाने के लिये धूर्तता से काम लिया, जो परमेश्वरने सुलैमान के लिये रखा था। उस धूर्त प्रकार से दूसरे का सिंहासन लेने की कोशिस से, सुलैमान को ख्याति प्राप्त हुई तथा वह परमेश्वर का चुना हुआ के रुप मे जान गया। यह सीर्फ नाममात्र है; परंतु यह जानना दिलचस्प होगा कि यह उस समय भी या जब परमेश्वर के पुत्र की अपने पिता के साथ नियुक्ति (appointment) पर आक्रमण किया गया था, और छल से उसका पद

छिनने का षड़यन्त्र रचा गया था, जिसे परमेश्वर के पुत्र के चुने हुए के रुप में प्रकाश मे लाया गया था। यह बार-बार स्मरण होने वाली बात है। सुलैमान के बारे में भी ऐसा था। इस समय के आरंभ में प्रभु यीशु मसीह के बारे में भी ऐसा ही था। यह फिर एक बार होगा जब मसीह का विरोधी (Anti-Christ) संसार के ऊपर राज करने की कोशिश करेगा, और फिर परमेश्वर अपने चुने हुए तथा अभिषेक किये हुये पुत्र को प्रस्तुत करेगा, और फिर सब कुछ जो अब आत्मिक तथा सम्भावित रुप से उसके अधिक है, अधिन हो जाएगा।

वह घर जो सुलैमान द्वारा रचा गया था, विशेष तौर पर सुलैमान के उत्कर्ष के रुप मे जान गया, इस भूमि पर कि परमेश्वर ने उसका अभिषेक करके सबकुछ उसी में समा दिया था। जब सुलैमान उसके अपने राजभवन मे लाया गया, उसी समय घर अस्तित्व में आया और सुलैमान के बारे में जो कुछ कहा गया है वह सब अद्भूत है। वे सब उसकी महिमा, पराक्रम, संपत्ति परमेश्वर की उसके विषय की योजना के बारे में बताते है और वह घर स्वयं पनरमेश्वर की महिमा का चिन्ह (Exaltation) है। वह घर जो परमेश्वर के लिये बनाना है वह अत्यधिक सोभायमान होना चाहिए। वह घर उस राजा को प्रतिबिम्बित करता है जो उस घराने के पुत्र का नमुना (Type) है।

हम इन पुराने नियम की आयतों से नये नियम की सच्चाइयों को देखते है, और इस कारण हम तुरंम इस घर की प्राथमिक बातों पर आते है जिसके लिये हम जीवित

पत्थर है, कि हमारा अस्तित्व-जो कुछ हम है तथा हमारी गवाही-परमेश्वर के पुत्र के उत्कर्ष के लिये ही है।

अब, सबकुछ मसीह के उत्कर्ष के साथ ही शुरु होता है, और सर्वप्रथम स्वर्ग में। कलीसिया की शुरुवात तब हुई जब परमेश्वर के दाहिने हाथ उसके पुत्र का उत्कर्ष हुआ। सबकुछ उसी में से निकला, और शुरु में कलीसिया की आत्मिक बातें बहुत ही महिमा मय तथा अद्भूत थीं। मुझ इस बात का संदेह नही परंतु स्वर्गदूतो ने इस बात का लेखा लिया होगा कि परमेश्वर की महिमा और प्रशंसा को क्या हो रहा था, और हमे इस बात पर विश्वास करने के लिये भी कारण है, कि दुष्टात्माएँ (Demons) भी अत्यधिक प्रभावित हुए थे। इन सब का आरंभ परमेश्वर के पुत्र के उत्कर्ष के साथ ही हुआ है, यह "सुलैमान से भी अधिक महान" है।

स्वर्गिय उत्कर्ष का अत्यावश्यक प्रतिस्पधि

पर हमारे लिये, यह सच रहते हुए, और उससे जुड़े बहुत से आशिष, व्यवहारिक रुप से शुरुआत करने के लिये प्रभु यीशू का उत्कर्ष अन्दृनी बात होनी चाहिए, और सब चीजों की शुरुवात हमारे दिलों में प्रभु यीशु के प्रतिस्पर्धि होने की आवश्यकता को जागृत करती है। ताकि परमेश्वर जो अपने पुत्र को महिमामित करने के द्वारा हमे जो दिखा रहा है, वह एक आत्मिक सच्चाई हमारे अंदर बनी रहे। वह निरंकुश सबकुछ उसके अधिन हो जाता है। आप देखिए सुलैमान के राज्याभिषेक

(Enthronement) का समारोप किस प्रकार होता है। "और सब हाकिमों और शूरवीरों और राजा दाऊद के सब पुत्रों ने सुलैमान राजा की अधीनता अंगीकार की।" (१ इतिहास २९:२४) उसका दुगना राज्याभिषेक किया गया – " उन्होंने सुलैमान को दूसरी बार भी राजा बनाया।"

अब आपके पास आपकी भूमि है, अगनर कोई "दूसरी आशिष" है तो! च्म दूसरी आशिष के बारे में बताते है। तो यह रही दूसरी आशिष। परमेश्वर ने जो स्वर्ग में किया है वह हमारे हृदयों में भी किया है। हमे आनंद मनाने के लिये कारण है तथा महान आशिष प्राप्त हुए जाने की अहसास भी है कि परमेश्वर ने यीशु को मुर्दों में से जिलाकर अपने दाहिने हाथ बैंठाया है। हमारे लिये इसी के अन्दर अद्भूत आशिषें समाविष्ट है। परंतु "दूसरी आशिष" यह है कि यह हमारे लिए एक सच्चाई है, और स्वर्ग में भी यह सच है क्यों कि सारी बाते उसीके अधिन की गई है। और हमे भी उसी के अधिन होना है। यी पूरी रीति से आशिष पाने का मार्ग है।

सब बातें, जैसे कि मैने कहा, उसी के साथ ही होती है। जीवन स्वंय यीशु मसीह हमारे हृदय का निरंकुश प्रभु होने के साथ ही शुरु होता है। और जब तक हम प्रभु यीशु को उध्दारकर्ता से बढ़कर नही मानते तब तक हम परमेश्वर की आशिषों को पूरी तरह प्राप्त नही कर सकते। पूर्ण रुप से आशिष प्राप्त करने के लिये हमे यीशू की हमारे जीवन का राजा बनाना अनिवार्य है। यही आशिष का मार्ग है। देखिए, सभी आशिष जो परमेश्वर ने मनुष्य जाती के लिये रखी थी, शैतान के परमेश्वर के पुत्र का

स्थान छिनने की कोशिश करने के कारण खो गये। उसने मनुष्य को धूर्तता से फॅसाया। “आप स्वंय परमेश्वर क्यों नही बन जाते?” उसने कहा। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के अधिन होने से तथा उसकें ऊपर निर्भर रहने से यह जीवन इतना सीमित क्यों है! इसी के साथ मनुष्य ने अपनी पूर्णत: को खो दिया, और वही पूर्णत: परमेश्वर के पुत्र के निरंकुश अधिन होन के द्वारा वापस आती है। वही शैतान का सबसे बड़ा झूठ था, और इसी कारण से शैतान को यीशू मसीह का प्रभु होना अच्छा नही लगता, और क्यों वह ऐसी सेवकाई में जी-जान से कार्य करता है जिसका उद्देश्य यीशु मसीह यीशु मसीह के प्रभु होने से रोकना है, परंतु इसके विपरित प्रभु यीशु, परमेवर के घर मे सर्वोच्च प्रभु है इस बात को इसके द्वारा प्रमाणित किया जाता है। यह ऐसा करने से उसका झूठ उजागर हो जाता है और उसके झूठ से जो काम वह करता है, उसके ऊपर पानी फेर जाता है।

आज सबसे बड़ा प्रश्न यीशु मसीह के जागतिक प्रभुत्व (Universal Lordship) का है, और इससे पहले इस संसार के इतिहास में इतना बड़ा विषय कभी नही रहा है जितना कि आज है। परमेश्वर के जगत में कौन प्रभु होगा? शंसार के ऊपर कौन राज करने वाला है? शत्रु अभी भी इस अवसर की तलाश में है, और इसके पहले हम उसकी ‘झूठ’ की युक्ति को जो इतनी प्रभावशाली रीति से काम मे लाता है, नही जानते थे! यहाँ तक कि, कही महिनों से यह संसार यही सवाल पर अटका हुआ है। किसका विश्वास किया जा सकता है? किस पर भरोसा किया जा सकता है? कौन सच बोल रहा है? किस मनुष्य पर आप भरोसा रख सकते है? इस

पृथ्वी पर ऐसा वातावरण फैला है जो झूठ से प्रदूषित है। मनुष्य अपने ही परिवार की तरफ देखकर चकित कि वे उन पर विश्वास कर सकते है या नही। यही भयानक सच्चाई बहुत से देशों में पाई जाती है। वे अपना मुँह अपनों के सामने ही खोलने का साहस नही रखतें, क्यों कि सच्चाई हार जाती है, विश्वासयोग्यता को मार गिराया जाता है। झूठ, झूठ का प्रचार, और यह सब आपको इस अंत को मन में रखते हुए इंगित करता है, कि आप संसार के ऊपर राज करो। यही शैतान का काम हम देखते है, और जब हम यीशु मसीह को हमारे जीवन का निरंकुश राजा बनाते है तो शैतान हारा हुआ है इस बात की घोषणा परिणामों द्वारा की जाती है, और झूठ प्रदर्शित हो जाता है।

सच्चाई यह है कि यीशू मसीह के अधिन होना एक दास समान दयनीय जीवन जीने के समान नही है। यह विजय का जीवन है, जीत का जीवन है, महीमा का जीवन है, पूर्णत: का जीवन है। यह शत्रु (शैतान) का हमे अंधा बनाने का काम है कि हम विश्वास कर बैठते है कि प्रभु में विश्वास रखने से हम बहुमुल्य बस्तुओं को खो देंगे, और गरीबी में जीवन बिताएँगे और कंगाल हो जाएँगे। यह शैतान का झूठ है। पुराना नियम इस बात को यहाँ पर स्पष्ट करता है कि जो सबकुछ अधिन होना है, उसे राजा के अधिन करने में जो कि परमेश्वर का अभिषिक्त राजा है, उन्हे सबसे बड़ी खुशी मिलती थी। यही बात प्रभु यीशु को जब हम हमारे हृदय का राजा बनाते है, हमारे लिये सच साबित होती है।

उन दिनों में, पिन्तेकुस्त के बाद, कलीसिया ने आजादी, बढ़ौतो, समृध्दि, महिमा पराक्रम तथा सिध्दता का अनुभव किया, और यह सब यीशु होने के सच्चाई के द्वारा हुआ है। वे यही नींव पर तथा यही सच्चाई पर चलते रहे। वही जीवन की शुरुवात हुई, गवाही की शुरुवात वहाँ से हुई और से होती हैं, और हमारी परमेश्वर के प्रति जो सेवा है, वह सब इसी से ही निकलनी चाहिए। जो सेवकाई यीशु मसीह के प्रभुत्व से नही आती है, वह सेवकाई सच्ची नही हो सकती। आप देखिए, हरएक बेदारी तथा हरएक नविनीकरण प्रभु अपने स्थान पर वापस आने के बाद ही हुआ है। पुराने नियम में वापस जाइए, और हमे एक के बाद एक उदाहरण मिलेगा जब प्रभु को अपने स्थान में लाया गया था यह अद्भूत समय था। उदाहरण के तौर पर हिज्किया, योशिया के बारे में सोचिए, जब प्रभु को अपना स्थान अद्भूत रीति से दिया गया था। उन्होनें प्रभु को उनके जीवन के प्रभु के रुप में अपने मनों में पूरी रीति से अपनाया, और वे सफल रहे। अगर आप इतिहास के ऊपर एक नजर घुमाएँगे तो, हम इस बात को महसूस करेंगे कि जितनी भी बेदारियाँ या नविनिकरण हुआ है, यह सब प्रभु को अपने सही स्थान पर लाए जाने के बाद ही हुआ है। उसको निरंकुश प्रभु के रुप में अपनाया गया था, और लोग उसके साथ चले। यही इसका रहस्य था।

जो इतिहास में सच है, वही सब में सच है, और व्यक्तिगत जीवन में भी सच है। हमारे बहुतसे संकट, अवनति, आत्मिक निर्बलता तथा असफलता प्रभु यीशु हो हमारे जीवन मे प्रभुत्व न देने के कारण होती है। हम उसे अपना उध्दारकर्ता के रुप में जानने मे कृतज्ञ होते है, हम विश्वास करते है कि वह स्वर्ग में महिमामित है, परन्तु

हमारे अन्दर की प्रवृत्ति इसके विपरित होती है। इन सब को एक ही विषय में ला सकते है उसका निरंकुश प्रभुत्त्व जो हमारे अन्दर होना चाहिए और जब इन बातों को तथा विभिन्न मतों को हम स्थायी (Settle) करते है, हमे नये जीवन की सीढ़ी मिलती है। हम हमारे जीवन के ऐसे पहलू पर हमेशा विपरित (भिन्न) ठहर सकते है जिससे हमारे प्रभु सहमत नही है। परखकर देखिए। वह केवल एक ही बिन्दु हो सकता है, परन्तु आप जान लिजिए कि वह एक ही बात आपको विफल करती है। हमे उस एक बात को स्पष्ट करना है, और जब आप उस बात को लेकर प्रभु के चरणों के पास जाकर समर्पित करते है, तो आपके हृदय में आप एक बेदारी को महसूस कर सकते है, तथा आप एक नये जीवन, नई गवाही, और नई स्वतंत्रता को अनुभव कर सकते हो। यही सब बातों के ऊपर फैलाओं तो स्वर्ग के राज्य को आया हुआ महसूस करोगे। यह ऐसा ही है।

क्रुस तथा मसीह का प्रभुत्व

ठीक, यह, उसका आत्मिक घर, अस्तित्व में लाने का एकमात्र उद्देश यह है कि हम प्रभु यीशु के उत्कर्ष के प्रचार के आनंद में पूर्णतया खड़े हो। जब आप इसके विषय में सोचते हो, तो क्या यह क्रूस के उद्देश्य का प्राथमिक तथा गहरा अर्थ नही है? क्रूस बहुत कुछ कर सकता है, बहुत से प्रश्नों को उत्तर दे सकता है, परन्तू आप जब क्रूस की गहराई में जाते हो, तो आपको अन्य देवताओं को त्यागना पड़ता है। यह यहोशू के चौबीस वे अध्याय का बड़ा विषय था। यहोशू के सामने सभी इस्त्राएली थे,

और उसने इस्त्राएल के इतिहास को सीधा अब्राहाम के समय से शुरु किया। “अब्राहाम का पिता खलड़ियों के के ऊर प्रान्त में रहकर अन्य देवताओं की सेवा करता था। फिर अब्राहाम ने अपने पिता के देवताओं को छोड़कर नदी को पार करके इस देश में प्रवेश किया। इसके बाद पार करके इस देश में प्रवेश किया। इसके बाद आपके कुलपिता मिसर देश में आये और उन्होंने मिश्त्र के देवताओं की उपासना की; परन्तु बादमें वे भी उनमे से निकलकर नदी पार करके जीवित परमेश्वर की सेवा करने के लिये आए।” हर समय पूरा विषय अन्य देवता तथा अन्य देवता और प्रभु के बीच के नदी का था।

अब फिर, आपके विषय क्या? यहोशू कहता है। क्या आप उस नदी को जिसके लिए वह मायने रखती है प्रभावी रुप से खड़ी रहने की अनुमति देंगे। क्या आप सचमुच उस नदी को आप और उन देवताओं के बीच जिनकी आप मिस्त्र देश मे पूजा करते थे, खड़ीद रहने देंगे? “परन्तु मैं और मेरा घराना, परमेश्वर ही की सेवा करेंगे।” आपके विषय में क्या? इस प्रकार नदी हमेशा अन्य देवताओं से संबंध रखती थी। क्रूस अपने गहरे अर्थ से अन्य देवताओं, अन्य प्रभुओं तथा आराधना के अन्य वस्तुओं (Objects of worship) स्पर्श करता है, और उन सभों को अपनी गद्दी से हटाकर प्रभु को अपने स्थान पर लाता है, जिससे हम कहते है, “मै और मेरा घराना परमेश्वर ही की सेवा करेंगे।” यह रहा क्रूस का अर्थ। वह उसके प्रभुता के मार्ग में जो कुछ या जो कोई आता हे, उन सबके खिलाफ खड़ा रहता है।

प्रभु शिशु हमारे संबंधि के रुप मे उत्कर्षित

अब हमारे प्रभु यिशु के विषय एक और धन्य हकिकत है। वह हमारे संबंधि (Kinsman) के रुप में उत्कर्षित किया गया है मसीह का उत्कर्ष हमारे भाई का उत्कर्ष है। यह एक मानदण्ड(record) के रुप मे उभर आता है। दाऊद ने कहा,"और मेरे सब पुत्रों में से (प्रभु ने तो मुझे बहुत पुत्र दिए है) उस ने मेरे पुत्र सुलैमान को चुन लिया है, कि वह इस्त्राएल के ऊपर प्रभु के राज्य की गद्दी पर विराजे।" (१ इतिहास २८:५) बादमे सुलैमान की राजगद्दी के बारें में बताते हुए मानदण्ड (record) कहता है, और दाऊद के सभी पुत्रों ने सुलैमान को दण्डवत करते हुए अपने आप को समर्पित किया। महान बात-उसके भाई उसकी तरफ देखकर उसे राजा के रुप मे ग्रहण किया। प्रभु यिशु के उत्कर्ष के प्रकार (types) का कायम बिन्दु है।

शमुएल की किताब में, फिर, हम पाते है जहाँ अबशलोम राजगदी पर आकर उन लोंगों को जिन्दे वह बहुत कुछ करने का वचन दे चुका था, उन्ही पर बड़ा दु:ख और संकट लाता है; और फिर अबशलोम मारा गया और लोगों को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ा। कुछ समय तक सबकुछ संदेहास्पद था, जब तक लोगों के मध्य में सवाल पैदा न हो, और किसी ने कहा, "आप राजा को वापस लाने की बात क्यों नही करते?" यह एक अफवाद बन गई, और यह दाऊद तक पहुँच गई। दाऊद ने यह सुनकर झडोक और अबियाथर के पास लोगों के लिए संदेश भेजा, कि; मै आपका माँस तथा हड़डी हूँ; आप मेरे बन्धु है; आप राजा को वापस लाने के विषय

चुप क्यों हैं? उसका अपनी जगह (स्थान) का अनुनय उसके सगे संबंधो पर आधारित था और उन्होंने इसी आधार पर उसे वापस अपने स्थान में लाया।

अब इसका अर्थ तथा मूल्य क्या है? ठीक, परमेश्वर ने हमारे भाई को, हमारे सगे सम्बन्धी को ऊँचा किया है, और वह सगा-संबंधि परमेश्वर का पुत्र है, और वह, जैसे कि प्रेरित कहता है, बहुतों को महिमा में लाएगा क्यों कि वह स्वयं ही बहुत से भाइयों में से प्रथम-फल (first-born) है। हमारे संबंधि को उत्कर्ष का मतलब है परिवार का उत्कर्ष। उसका राज्याभिषेक (enthronement) होना हमारे राज्याभिषेक की भविष्यवाणी (earnest) है। और, प्रियों, हमे तब तक हमारी महिमा की खात्री नही होगी जब तक हम प्रभु यीशु को हमारे संबंधि-प्रति-निधि (Kinsman-representative) के रुप में पहचान नही पाते। यह एक उत्कर्षित परिवार है, यह एक घराना है, देखिए; परमेश्वर का घर पुत्र, और फिर पुत्रों के लिए। परन्तु पुत्रों को अपना स्थान तय करने के पहले पुत्र (यीशु) को अपना स्थान करना होगा। परन्तु पुत्र का अपना स्थान निश्चित करना पुत्रों के लिए गारन्टी है। हमारा संबंधि ऊँचा किया गया है, और इससे बहुत कुछ पता चलता है; क्यों कि उसे सीर्फ एक प्रधान, या औपचारिक तौर पर राजा के रुप में नियुक्त नही किया गया – स्वयं परमेश्वर ने ही उसे चुनकर उसी स्थान में खड़ा किया है; अब फिर, घुटना टिका! जी नही; वह हमारा बन्धु है, संबंधि है, और ऐसी घनिष्टता, ऐसी एकता कि हमारे बिना वह रह नही

सकता। उसके साथ हमारी अंदृनी आत्मिक एकता है जो हमारे लिये सबसे बड़ी बात है।

शायद इसे मै मरदकै का स्मरण दिलाकर आपको अच्छी तरह चित्रित कर सकता हूँ। इसमे आपको फिर हामन तथा उसकी यहूदी लोगों को नष्ट करने की बुरी युक्ति याद होगी। मरदकै को इन्कार करने की योजना बन चुकी थी। फिर परमेश्वर की दैवी शक्ति द्वारा राजा की उस रात जिसमें वह सो न सका, इतिहास को पलट देती है। काश हमारी वे सारी रातें जिसमें हम सो न सके, प्रभु के लिए लाभदायक ठहरती! उसने अपने सेवकों को इतिहास की पुस्तकों को उसके सामने पेश करके पढ़ने की आज्ञा दी; और उसने मरदकै के विषय में कुछ पढ़ा। किसी ने राजसिंहासन के विरुद्ध अपना हाथ उठाकर उसे नष्ट करने की कोशिश की और एक निश्चित – पुरुष, यहूदी ने राजा की नजर के सामने इस बात को प्रकाशित करके राजा की जान बचाई। फिर राजा ने कहा, "मरदकै के इस काम के बदले मे उसे किस प्रकार सन्मानित किया गया?" फिर कहानी विस्तारित होकर इस बिन्दु पर आती है जहाँ हामन जब अपनी पत्नी तथा मित्रों के पास घर जाता है और बिती हुई घटना को उन्हे बताता है। उसने सोचा राजा ने जो सन्मान उसके लिये रखा था, वो मरदकै को देनेवाला है, और जैसे ही यह बात वह उन्हे सुनाता है, वे सब इस नतीजे पर पहुँचते है: "अगर मरदकै यहूदियों में से है, जिसे तू दण्डवत करता है, तू उसे कभी भी नही हारा सकता, पर

जरुर तू उसे दण्डवत किया करेगा।" अगर वह यहूही है तो तू उसे हारा नही सकता, तेरे दिन गिने जा चुके है! इसके विषय कुछ है, देखिए। यह वही संबंध (Kinship) जो यहुदियों के साथ है जो मसीह में है, उन्हे शत्रु से छुड़ाकर जय देता है।

जी हाँ, इस संबंधी (Kinship) या रिश्ते का मतलब है हमारा उध्दार तथा शत्रु का पराभव। यीशु मसीह के उत्कर्ष के साथ बहुतकुछ जुडा हुआ है, और शैतान को यह मालुम है। उसको यह मालुम है कि जब किसी के जीवन में मसीह को ऊँचा स्थान दिया जाता है तो उसके दिन गिन चुके है। जब हम अपने हृदय में मसीह को ऊँचा उठाते है – तो शैतान निराश हो जाता है।

आनेवाले दिन के लिये सावधानी
तथा अनुशासन की आवश्यकता

अब ठीक है, हमें कहीं पर तो रुकना चाहिए, और मै सोचता हूँ कि हम यहीं पर इस बात को दर्शाते हुए रुके कि यह घर, उसके पुत्रत्व के सार महत्व, पुत्र तथा पुत्रों (sons) के लिये एक वर्तमान आत्मिक अर्थ है। यह कुछ ऐसी बात है जिसे अब हमें आत्मिक तौर पर महसूस करना होगा। यह सचमुच सभी विश्वासियों के लिये महान आत्मिक बात है। अगर हम पूछे, इस युग (समय) में जहाँ परमेश्वर तथा उसके लोग

संबंधित है, क्या विषय है, इसका निश्चित उत्तर यही होगा कि ऐसा आत्मिक घर है जहाँ प्रभु यीशु को ऊँचा स्थान दिया गया है।

परंतु मैं आपको इस बात का भी स्मरण दिलाना चाहुँगा कि, इसके प्रकाशन के बारे में सोचेंगे तो यह भविष्य में होगा; और इसके ऊपर ही यह अद्‌भूत तथा भयानक छोटा शब्द "यदि" लटक रहा है। "मसीह परमेश्वर के घराने के ऊपर पुत्र है; जिसका घर स्वंय हम है, यदि...." इब्रानी १२, जिसमे हमे परमेश्वर के पुत्र के रुप मे प्रस्तुत किया गया है, वही पर भी एक बड़ा "यदि" है। "अगर आप ताड़ना सह लेते है, तो परमेश्वर आपको पुत्र जानकर आपके साथ बर्ताव करता है।" यह शायद लिखने का एक अलग ढंग है। यह लगभग ऐसा लगता है कि हम जब तक ताडना सहन नही करते तब तक पुत्र साबित नही हो सकते। हाँ, यह ऐसा ही है। "यदि" यह शब्द हमे इस बात से परिचित कराता है कि जब तक हम ताड़ना सह न ले तब तक पुत्रत्व की पूर्णता को प्राप्त नही कर पाते। यह पुत्रत्व की पूर्णता को प्राप्त नही कर पाते। यह पुत्रत्व की पूर्णता का प्रकाशन है जो परमेश्वर के घर को महिमा से भर देता है। यह भविष्य की बात है, यह भावी जीवन के बारे मे है। यदि... यदि...

आप देखिए, इसके संदर्भ में इस्त्रायली लोगों को जंगल मे परमेश्वर ने कितनी बार चेथावनी दी। परमेश्वर के दिलचस्प विचार से वे उसका घराना नही बने। वे जंगल मे नाश हो गये। उन्होने ताड़ना न सह ली। वे परमेश्वर को उनके साथ पुत्र का-सा बर्ताव

नही कर देने के। वे पुत्र की नाई परमेश्वर के पास नही आये। वे परमेश्वर की सिद्ध योजना की महिमा को पाने के लिये अधूरे पाये गये। और यही बात कुरिन्थ तथा इब्रानियों में चिथौनी (warning) के तौर पर लाया गया है। हम उसका घराना है यदि... यदि... यदि...

अब, इसका महत्व क्या है? हाँ, वह यह है कि परमेश्वर का पुत्र जो महिमा में है, वह हम में अभी उन्नत रुप से (progressively) विद्यमान है; कि मसीह परमेश्वर के घर के ऊपर हमारे अंदर पुत्र के रुप में अधिक-और-अधिक विस्तारित हो रहा है। मेरे खयाल से इस बात को मद्देनजर रखते हुए, हमारे आत्मिक अनुभव के लिये यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। प्रभु में हमारी सभी कठिनाइयाँ, सभी बुरे समय, मसीह को हमारे जीवन मे जो स्थान देते है उसके ऊपर निर्भर रहता है। क्या यह ऐसा नही है? प्रभु हमे बालकिय प्रशिक्षण के जरिए हमें ढूँढ रहा है। एक बालको, लेकर उसे प्रशिक्षण (training) में डालिए, और आप जान जाओगे कि उस बालक में क्या हैख वह बालक आज्ञाकारी है या नही, वह बालक आपके साथ बराबर जा रहा है या नही। बच्चे को अनुशासन (discipline) मे डालिए और आपको उसके स्वभाव के सभी गुण-दोषों के बारे में पता चलेगा। इसी रीति से प्रभु भी हमारे साथ बर्ताव करता है।

"ताडना"(chastening) यह शब्द दुर्भाग्यशाली है, क्यों कि यह शब्द हमारे मन मे गड़बड़ी पैदा करता है। हम इसे सज़ा (punishment) की तौर पर इस्तमाल करते है।

इसक इससे कुछ भी संबंध नही है। परमेश्वर अपने बच्चों को कभी भी सजा नही देता है। इसका सही अर्थ है बालक – शिक्षा, (child training) पर शैतान हमेशा परमेश्वर के हमारे साथ के बर्ताव (dealings) को सजा (punishment) में बदल डालता है। वह हमारे मनों पर प्रभाव डालता है। परंतु परमेश्वर हमे उस जगह (स्थान) पर लाने में कार्यरत होता है जहाँ पर वह निरंकुश प्रभु है, और वह हमे उसकी इच्छा के अनुसार उपयोग करता है और हम उसे कुछ सवाल नही कर सकते। हम में से कोई भी इस स्थान मे नही पहुँचा है, पर प्रभु हमे उसी स्थान में पहुँचाने में कार्यरत है, और इस में एक बडा "यदि"(if) है। अगर हम कहे कि हमे किसी ताडना (discipline) की आवश्यकता नही है, तो हम उसके साथ नही चल रहे है। ठीक, इसमे सिंहासन सीर्फ उसके लिये नही पर हमारे लिये भी रखा गया है। परमेश्वर को उसके पुत्र के साथ जो संगी-वारिश है, उनके लिये बड़ा अभिप्राय (purpose) है। इन सब का केन्द्रबिन्दु यीशु मसीह जो स्वर्ग में और हमारे अन्दर प्रभु है इस सत्य घटना पर आधारित है। हमारी सभी शिक्षा (training) इसी दिशा में अग्रसर है। इसलिये यह भावी, भविष्यत् तथा "यदि" इस प्रकार है। हम प्रभु का घराना है यदि... प्रभु करे वह हममें विजयी हो ताकि "यदि" अपना वजन तथा शक्ति और स्थान को खोकर, ओर अन्ततः पूरी रीति से नष्ट होकर, हम उसका घर बन जाए।

दूसरा पाठ

परमेश्वर का निवास तथा मसीह मे संतुष्टता के विषय खात्री

... उसने अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमे अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र बने। जिस से उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें अपने 'प्रिय' में नि: शुल्क दिया है। ताकि हम जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी, उसकी महिमा के कारण हो।

(इफिस १:५-६, १२)

क्यों कि हम परमेश्वर के बनाए हुए है, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए है जिन्हे परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया है।

(इफिस २:१०)

अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो पृथ्वी की रचना होने से पहले मेरी तेरे साथ थी।

(यूहन्ना १७:५)

इस समय मे हम परमेश्वर के पवित्र (आत्मिक) घर के विषय गौर करेंगे, और हमारे पहले अध्ययन में हम प्रथम तथा अति महत्वपूर्ण बात के ऊपर विचार कर रहे थे, जिससे हम, मसीह मे जीवित पत्थर है, जैसे परमेश्वर के पुत्र के उत्कर्ष मे नमूद किया गया है। हमने देखा कि, जहाँ तक परमेश्वर के घर का सवाल है, यह उसकी

छलांग उत्कर्ष से ही लेती है। पिन्तेकुस्त के दिन जो हुआ वह सब परमेश्वर के पुत्र के स्फूर्तिदायक उत्कर्ष का परिणाम था, जिससे पता चलता है कि वह स्वर्गिय पिता के दाहिने हाथ विराजमान है; और कलिसिया के आरंभिक जीवन तथा इतिहास से भी इस बात का प्रमाण मिलता है। इसका जीवन इससे निकला, इसकी गवाही यही थी, कि यीशु परमेश्रव के पुत्र के रुप मे ऊँचा किया गया है। आप जानते है कि पिन्तेकुस्त के दिन पर पतरस की गवाही यही थी। आप स्तिफनुस के विषय में भी यही गवाही देते हो। आप इस बात की भी गवाही देते हो कि प्रेरितों ने भी इसी शिक्षा को निरंतर जारी रखा, कि परमेश्वर ने उसे प्रभु तथा मसीह ठहराया, उसे ऊँचा उठाया। मै इस बात को दोहराता हूँ कि सबकुछ उसी से आ गया, और इससे यह सुनिश्चित हो जाता है कि यह आप ही मे हमारे लिये खात्री है, जिसकी हमे निरंतर आवश्यकता होती है; और खस करके अभी इस समय मे हमे इसकी आवश्यकता बहुत अधिक है।

निश्चय के ऊपर हमला

(THE ASSAULT UPON ASSURANCE)

हमारे पिछले अध्ययन मे, हमने इस बात को संदर्भित किया कि बड़े आत्मिक शत्रु ने झूठ का प्रचार करते हुए तथा 'निश्चय' और 'विश्वास' पर हमला करते हुए, अपने आपको संसार का अधिपति बनने की अभिलाषा मन मे रखते हुए अपने लिये एक महामार्ग (headway) तय किया है।

उसने और एक काम किया है और अभी भी कर रहा है जिसके लिये वह आत्मिक तरिका अपना रहा है, जो कि इसी वर्तमान समय मे स्पष्ट रीति से देखा जा सकता है, और दरअसल जो अपने आपको मसीह (christ) होने की नकल करते हुए इस बात का दावा भी करते है। उन्होने इसके लिए एक राष्ट्रिय तौर पर अपने शत्रु को हराने के लिए बरसों से उनके बिच में फूट निर्माण करते हुए तथा विश्वास को नीचे गिराकर अपने आपको सर्वश्रेष्ठ बनाने की गुप्त कार्यपद्धति (secret strategy) को अपनाया है। मै सीर्फ सांसारिक, क्षणभंगूर तथा राजकिय पहलू पर अपनी नींव नही बनाना चाहता, परंतु ये सब शैतान की गतिविधियों को स्पष्ट करती है, जो धूर्त तथा गोपनीय रुप से पर्दे के पीछे विश्वास को नष्ट करने का ध्येय (लक्ष्य) मन में रखते हुए कार्य करते है। सचमुच वाक्यांश जो छपा गया है वह इस संबंध मे है कि हम हमारे शत्रुओं को उनके स्वयं के हाथो से हारते हुए देखेंगे। ठीक ऐसा बहुतसे राष्ट्रों मे हुआ है।

अब, आत्मिक तौर पर क्या हो रहा है इस विषय में सुराग लिजिए। ओह, शैताने ने किस प्रकार इस बात को प्राचिन काल से अपनाया है, ताकि वह हमारे विश्वास को नश्ट करें; क्यों कि विश्वास यह एक अत्यन्त जरुरी फॅक्टर (अंग) है। हम जानते है कि राष्ष्र्र किस प्रकार अपनी सीमा सुरक्षा क`लिये अपने लोगों को जागृत रखते है ताकि शत्रू उने ऊपर प्रबल न हो। लोगों में विश्वास की भावना जगाने के लिये वे क्या कुछ न करेंगे? शैतान जानता है कि उद्धार पाये हुए लोग (assured people) उसके लिये सबसे बड़ी समस्या है तथा वे उसके लिये असंभव परिस्थिति

का प्रतिनिधित्व करते है। अब, अगर आप प्रथम शताब्दि की कलीसिया के जीवन को देखेंगे तो उनमे खास बात यह थी कि वे आश्वासन पा चुके थे जिसका परिणाम उनके प्रतिदिन की गतिविधियों से प्रतित होता था। वे निस्संदेह थे। वे अधिकार के साथ बोल सकते थे क्यों कि वे स्थिर हो चुके थे। अंदृनी एकता के विषय में उनके मध्य मे कोई बैर नही था। और इस बात का प्रमाण यह था कि पवित्र आत्मा उनके अंदर सामर्थ के साथ कार्य करते हुए दर्शा रहा था कि मसीह सिंहासन पर विराजमान है। "यीशु... परमेश्वर की दाहिने ओर विराजमान है।" इसके विषय में उनके अंदर कोई संदेह न था, और इसलिये सभी शंकाएँ (doubts) दूर हो चुकी थी। यीशु मसीह का उत्कर्ष जब हमारे दिलों मे जड़ पकड़ता है, तब यह बात हमारे जीवन में, गवाही में, सेवकाई में सामर्थी साबित होती जिसके बगैर हम पूरी तरह से पराजित हो जाते है।

अब, इन दिनों में जिसमे हम जी रहे है, शैतान की कार्यपद्धति यह है कि वह हमारे विश्वास को झूठा साबित करे। अब में सांसारिक नही बल्कि आत्मिक बातें कर रहा हूँ। इसलिये परमेश्वर का घर यीशु मसीह के उत्कर्ष के ऊपर बनाया गया है, इससे तात्पर्य है कि मसीह का उत्कर्ष हुआ है इस विश्वास के ऊपर। इसके बगैर उसका भवन बनाना संभव नही है। दाऊद और सुलैमान के विषय सोचा जाए तो परमेश्वर ने किस प्रकार अपना राजा तथा उसका सिंहासन सुरक्षित रखा था जिससे परमेश्वर की महिमा प्रकट होती है। परमेश्वर ने दाऊद के साथ वाचा बाँधी। परमेश्वर ने दाऊद से वादा किया कि उसकी संतान उसके सिंहासन पर बैठेगा और उसका सिंहासन हमेशा तक बना रहेगा। अब, हम जानते है कि यह यीशु मसीह के ऊपर

स्थानांतरित किया गया है। सुलैमान के जीवन में इसका सीर्फ हम चिन्हात्मक तथा अपुर्ण रीति से चित्रण देखते है। सुलैमान अपने अंतिम दिनों में शर्मनाक की तरह जीवन बिताता है, परंतु उसकी महिमा के दिनों में वह किसी और का प्रतिक था। इसलिये प्रेरितों के कामों में हमे भजनकार का सन्दर्भ मिलता है:

> "प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा,
> मेरे दाहिने हाथ पर बैठ,
> जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को
> तेरे पावों तले की चौकी न बना दूँ।" (प्रेरित. २:३४, ३५)

प्रेरित इन शब्दों को दाऊद के दूसरे शब्दों के साथ संबंध जोडते हुए कहता है: "दाऊद... एक भविष्यद्वक्ता के रुप मे, यह जानते हुए कि परमेश्वर ने उससे वादा किया है कि उसका पुत्र उसके सिंहासन पर बैठकर राज करेगा; इस बातको देखते हुए वह ... मसीह के विषय कहता है, "इसके विषय मे कहा; और परमेश्वर ने अपने वचन को पूरा किया, परछाई में नही, चिन्हात्मक रीति से नही, पर सीधे दाऊद के इस महान पुत्र के रुप में। दाऊद का महान पुत्र सिंहासनों के सिंहासन पर विराजमान है और परमेश्वर के अपने राजा के उत्कर्ष तथा महिमा कायम करने से, कलीसिया का इतिहास शुरु होता है, और उच्चतम् नोट जिससे कलीसिया की स्थापना हुई है वह है परमेश्वर ने अपने पुत्र में हमे दिया हुआ महिमा का आश्वासन।

परमेश्वर का अपने पुत्र में विश्राम

आश्वासन हृदय के विश्राम से आता है। यहाँ फिर से एक बार हम महसूस करेंगे और धमशास्त्र कितना सच, कितना सटीक है – कि परमेश्वर ने सुलैमान को इस स्थान के लिये चुना यह कोई संयोगवश घटना नही थी। सुलैमान का अर्थ है "विश्राम"। अब आप स्तिफनुस को देखिए जो सुलैमान को संदर्भित करता है, वह प्रेरितों के कामों से एक दिलचस्प बात कहता है – प्रेरित ७:४७ – ४९

> "परन्तु सुलैमान ने परमेश्वर के लिए घर बनाया। परंतु परमप्रधान परमेश्वर हाथ के बनाए हुए घरों में नही रहता, जैसा कि नबी ने कहा है: 'प्रभु कहता है, स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे पावों तले की चौकी है। मेरे लिये तुम किसी प्रकार का घर बनाओगे? मेरे विश्राम का कौन सा स्थान होगा?"

फिर सुलैमान का और एक नाम था – जोदिदियाह, "परमेश्वर का प्रिय"। इसी बात को हम इफिसियों में पढ़ते है – "उसने हमे उसके प्रिय में ग्रहनयोग्य बनाया है"। देखिए, यीशु मसीह सुलैमान के दोनों नामों की किस प्रकार पूर्णता करता है। वह परमेश्वर का विश्राम है, "मेरे विश्राम का स्थान"; और वह परमेश्वर उस बात को प्राप्त करता है जिसपर उसका हृदय केंद्रित है। यह परमेश्वर के उस विश्राम पर आधारित है जो उसके पुत्र में पाया जाता है।

अब, आपको और मुझे परमेश्वर के उस स्थान में पहुँचना है जो उसके पुत्र में है, इसके पहले कि हम उसके घर के विषय कुछ कहे। हम उसका आत्मिक घर है: "हम किसका घर है।" परन्तु इसका यह मतलब नही कि परमेश्वर हमें इटों की नाई एकत्रित करता है। उसके पास जीवित पत्थर होना जरुरी है और वे "जीवित पत्थर" हम १ पतरस २:४-५ में पाते है, कि मुख्य कोने के पत्थर के साथ जीवित संबंध रखने से ही घर बनता है। इमारत के तौर पर हमे हमारा चरित्र कोने के मुख्य पत्थर से लेना चाहिए जिसको परमेश्वर ने चुना है। "मै सिय्योन में एक कोने का मुख्य पत्थर रखता हूँ, चुना हुआ, बहुमुल्य।" परमेश्वर उसकी तरफ तथा उसकी तरफ से कार्य करता है। आप और हम उसके लिए तथा उसके साथ कार्य करते है। परन्तु यह क्या है जो इस घर को चरित्र प्रदान करता है? वह है परमेश्वर का अपने पुत्र में पूर्ण तथा संतुष्टतापूर्वक विश्राम। परमेश्वर ने सातवें दिन सभी कामों से विश्राम लिया, और परमेश्वर ने सृजी हुई सब वस्तुएँ देखी और वे सब बहुत अच्छी थी।

अब इस बात को हम इस आत्मिक सत्य के साथ जोडेंगे जो परमेश्वर का घर है। और आपने लम्बे समय से यह सुना होगा: "कि वह अपनी कलीसिया को तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ा करे जिसमे न कोई कलंक, न झुर्री और न कोई दोष हो।" यह सब कहावत है, यह सब बहुत अच्छा है! सर्वप्रथम परमेश्वर जिस बात से संपूर्णत: प्रसन्न तथा संतुष्ट है वह बात यह है कि उसे पुत्र ने उसके सभी सवालों का उत्तर आत्मिक और नैतिक तरिके से दिया है। यह परमेश्वर का विश्राम है, और प्रभु यीशु का उत्कर्ष परमेश्वर के इस बात को प्रमाणित करने का चिन्ह (seal) है।

परमेश्वर संतुष्ट है, परमेश्वर विश्राम पा चुका है। इस प्रकार, प्रभु यीशु अपनी जीवन की अंतिम यात्रा क्रूस पर करते हुए कहते है, “हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो पृथ्वी की रचना होने के पहले मेरी तेरे साथ थी।” (यूहन्ना १७:५)। “मेरी महिमा कर!” हाँ, यह अचानक जीवन-मार्ग के सबसे अंधकार वाले रास्ते से आता है। यही मार्ग महिमा का मार्ग है। यह क्रूस की अंतिम यात्रा, परमेश्वर की प्रसन्नता तथा संतुष्टि की भा अंतिम चरण है।

यीशु के लहू का मूल्य

अब तक मै जो कुछ भी बता चुका हूँ, वह सीर्फ यह कहने के लिए कि परमेश्वर का निरंकुश विश्राम केवल प्रभु यीशु के लोहू के कारण ही सिद्ध हुआ है। ओह, प्रिय भाइयों, आपको और मुझे प्रभु यीशु मसीह के लोहू का मूल्य जानने के लिए और अधिक बोधगम्य होना चाहिए। अंतिम दिनों में यीशु मसीह के लोहू का मूल्य एक बहुत बड़ा कारक (factor) होगा। वह हृदय के विश्राम में महान कारक है, और हृदय का विश्राम ही जय की पृष्टभूमि है; और इसलिए शैतान हमेशा परमेश्वर की संतान को हृदय के विश्राम के आत्मिक बातों में फँसाने की तलाश में रहता है। मै इस समय आप सभी से यह गुजारिश करना चाहूँगा, यद्यपि कुछ और बातें किसी अन्य समय में कही जा सकती है, परन्तु मै यह निवेदन आपसे करना चाहता हूँ, कि हम अब ऐसे स्थान में पहुँचना जरुरी है जहाँ हमारा परमेश्वर के साथ का संबंध स्वीकार में, शांति में, विश्राम में तथा सहभागिता में निरंकुश (absolute) होना चाहिए।

हम हमारी आत्मिक अनुभव की दूसरी बाजू को इस छेदन रेखा (dividing line) को पार करने की कोशिश कभी भी नही करनी देनी चाहिए। मेरा मतलब है कि वहूं ऐसी दूसरी बाजू है जहाँ प्रभु हमें उसके पुत्र के स्वरुप में बना रहा है। उसके लिए हमारे अन्दर बहुत बड़ा काम है, और जैसे भी वह यह काम हात में लेता है, हम इस बात को अद्भुत रीति से महसूस कर सकते है। हम अपने आपको संशोधन करते है, हम इस बात की गहराई में पहुँच जाते है कि हम कितने बड़े पापी थे। यह हमारे लिये भयानक बात बन जाती है। परंतु परमेश्वर के हमारे जाँचने के द्वारा जो कुछ उजियाले में आता है, उसे हमारे स्वीकार, हमारा मसीह में स्थान तथा हमारा परमेश्वर के साथ जो मेल है इन बातों को कभी भी लाँघने न दे।

बहुत से लोग इस बारे में चूक जाते है तथा वे शत्रु के दोषारोपण को स्वीकार करते हुए उनका मसीह में जो स्थान है उसे भूल जाते है क्योंकि परमेश्वर उनसे इस प्रकार व्यवहार करता है। उन्हे खास करके हमारे सामने बहुत बुरा लगता है। आत्मिक घर का एकमात्र उद्देश्य है कि वह परमेश्वर की मनसा को उसके महिमा के लिए प्रकट करे। इफिसियों की पत्री में “ताकि हम उसकी महिमा का कारण हो”; “उसकी अनुग्रह की महिमा की स्तुति” इन वाक्यांश का प्रयोग किया गया है। इससे परमेश्वर प्रसन्न हो, उसका हृदय आनंदी हो, उसकी महिमा हो। इस प्रकार, आत्मिक घर इतिहास में जो कुछ हो चुका है उसका परमेश्वर द्वारा दिया गया उत्तर है।

परमेश्वर की नई सृष्टि

पहली सृष्टि में जो आदम मे समाई हुई है, हम परमेश्वर को अपने कार्य का सर्वेक्षण करते हुए देखते है, यह बहुत अच्छा है! उसके बाद विच्छेदन हुआ और सृष्टि में गड़बड़ी तथा विनाश आ गया। इसी विनाश हुई सृष्टि से परमेश्वर ने एक राष्ट्र को उभारा, और इस्राएल के विषय परमेश्वर ने उच्चतम दृष्टिकोन रखते हुए कहा था, "इस्राएल मेरी महिमा।" क्या ही अद्भुत बात है। इस्राएल मेरी महिमा! और सुलैमान के आरम्भिक दिनों मे इस्राएल परमेश्वर की महिमा थी। फिर विच्छेदन हुआ, असफलता, विनाश। अंत में हम परमेश्वर को इस्राएल के पास, मसीह में जो नई सृष्टि है, उसके पास आता हुआ नजर आता है। प्रथम, मसीह के स्वयं के प्रति जब वह कहता है, "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मै प्रसन्न हूँ", मै पूरी रीति से संतुष्ट हूँ। दूसरे शब्दों में, यह मसीह में नई सृष्टि है, और परमेश्वर कहता है, यह बहुत अच्छा है, मै इससे प्रसन्न हूँ।

फिर कलीसिया में, जो मसीह की देह है, जो उसकी नई सृष्टि का विस्तार है जो उससे जुड़ा हुआ है, और इसके विषय अंतिम बात है कि यह स्वर्ग से नीचे आती है जिसमे परमेश्वर की महिमा है, या, दूसरे शब्दों में, "उसको महिमामय कलीसिया के रुप में प्रस्तुत किया", या फिर, "यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने, और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा; क्यों कि तुमने हमारी गवाही पर विश्वास किया है।" (२ थिसलुनिका १:१०)।

वही अंत है। इसलिए यही अंतिम उत्तर है। अब सृष्टि में और गड़बड़ी या विनाश होनेवाला नही है। यही परमेश्वर का बिते हुए विनाश को अंतिम जवाब है। और यह है कलीसिया, परमेश्वर का आत्मिक घर, एक नई सृष्टि।

कलीसिया क्या है

फिर, यह आत्मिक घर क्या है? हम इसके विषय में निष्पक्ष मनोवृत्ति नही रखेंगे और सोचेंगे कि यह हमारे समझ से परे है। यह क्या है? उत्तर बहुत ही सरल है। परमेश्वर का आत्मिक घर मसीह स्वयं है। हाँ, पर मसीह व्यक्तिगत तौर पर अकेला नही, पर मसीह आप में, मुझ में, जो महिमामय आशा है। हाय! यही पर सभी भारी गलतियाँ कलीसिया के बारे में किसी जाती है। कलीसिया, परमेश्वर का घर, यह मसीह स्वयं ऐसी एकता में है जो कभी टूटती नही जिनमें मसीह वास्तव में निवास करता है। यही सत्य है। यह कलीसिया है। इसके अलावा आपके मन में कोई और कल्पना हो तो उसे जड से मिटाने का प्रयत्न करो। यह ऐसा मसीह नही जो हजारों या लाखों में बाँट दिया हो। यह अभी भी एक ही मसीह है। आप और मै कलीसिया नही है। यह मसीह जो आपमे और मुझमें रहता है वही कलीसिया है। हम अभी भी हमारी नैसर्गिक भूमि पर मसीह के बगैर कलीसिया के बाहर होंगे, पर यह मसीह जो हमारे अंदर रहता है जिससे कलीसिया बनती है, आत्मिक कलीसिया, आत्मिक घर, एक मसीह जो एक आत्मा के द्वारा विश्वासियों के अंदर रहता है। वही कलीसिया है। परमेश्वर ने उस कलीसिया मे मसीह (अपने पुत्र) को छोड़ अन्य किसी को कभी नही

देखा। वह परमेश्वर का मंदिर है और जब तक मसीह हमारे अन्दर नही होता तब तक हम कलीसिया के भागी नही हो सकते। मैं जानता हूँ कि यह कहने के लिए सरल बात है, पर यदि हम इसी बात पर टिके रहेंगे और देखेंगे कि इसका अर्थ क्या है; तो यह निस्संदेह शत्रु के विरुद्ध बड़ी शक्ति होगी, यदि हम इसी के आधार पर जिएँगे, और इसी में बने रहेंगे।

इस विषय को प्रस्तुत करने के दो मार्ग है, और मै फिर देखता हूँ कि इसमे शैतानी प्रचार की सफलता का अंतर्भाव है। मैं नही जानता कि आप प्राचिन मसीही इसके विषय ही बोल सकते है जिसे हमने अपने जीवन काल में मान्यता दी है, पर हम इन बातों को मंजूरी देने के लिए बहुत साल जीए है, और मुझे ऐसा लगता है कि पिछले कई वर्षों, दशकों, में मसीही लोगों में शक इतने बढे है कि जिसकी कल्पना तक नही कि जा सकती। इस कारण आज हम क्या बोलते है इस विषय लोग हमेशा हैरान रहते है। इस प्रकार शक का वातावरण बना हुआ है। मुझे लगता है कि जो इतना शुद्ध नही है। मुझे लगता है कि जो इतना शुद्ध नही है उसके विषय लगातार सावधानीपूर्वक सूँघ होती है, और जो कुछ परमेश्वर से जुड़ा हुआ है, उसके विषय भेदभाव की प्रवृत्ति बनी हुई है। परमेश्वर की सच्चाई को इस संदेह के कारण अवसर नही मिलता कि यह पूरे विश्व में मसिहियों के बीच फैला हुआ है। क्या यह बिल्कुल सही है? इसमे गलती क्या है? यह वैसा ही है। वही सकारात्मक रेखा है, वही सकारात्मक रेखा बनी है, और, प्रियों, मेरा मानना है कि यह शैतानी प्रचार का एक चिन्ह है अंदृनी विनाश करता है, क्यों कि इससे अभिप्राय है कि अंदृनी फूट है, कोई

मेलमिलाप नही है, परमेश्वर के लोग हजारों भागों में विभाजित हुए है जो यह संदेह तथा भेदभाव के वातावरण का नतिजा है। इस कारण कलीसिया में ठोस एकता नही है।

सचमुच ऐसे बहुत ही कम मसीही है जो सौ प्रतिशत एकसाथ चल सकते है। शैतान हमेशा मसीही जीवन में तथा सहभागिता में रुकावट लाता है। हाँ, वह अंदर तक पहुँचा है, और वह बहुत ही शान्त रीति से अंदूनी विभाजन तथा विनाश करता है, पर धुर्तता से सालोसाल कार्य करने से वह बिना खून बहे बहुत से युद्ध जीत सकता है। वह एक क्षेत्र को आसानी से छिनकर उसके ऊपर अपना अधिकार जमा लेता है।

इसी धरती पर आधारीत और एक सांसारिक उदाहरण लीजीए। हे प्रियों, क्या आप नही देखते कि दूसरे विचार के लिये वहाँ पर कोई गुंजाईश नही है? ऐसा व्यक्ति पिछले सात सालों से जो ऐसा विचार, ऐसा मन तथा ऐसी कल्पना रखता है, दूर किया गया है। शायद आप दो मनवाले न हो। हमे तानाशाही मन के खिलाफ कुछ राय नही होनी चाहिए। जो दुय्यम है उसके लिए कोई गंजाइश नही है। वह एक है। शैतान एकता की शक्ति तथा मूल्य से भली-भाँती परिचित है, और यही उन्नति का, सफलता का रहस्य है; हरएक विकृत कल्पनाओं से लडनेवाला तथा उन्हे पराजित करनेवाला एक ही मन होना चाहिए। क्या आप इसके विपरित सोचने की हिम्मत रखते हो? क्या आपके पास अपना स्वयंका मन है? ठीक, आप उसे अपना सकते है, पर आप इस विषय मे सतर्क रहे कि आप इसे प्रकट न करे। वही शासन-पद्धति (regime) है, और अब जिसके विषय हम सोच रहे है उसके लिए क्या शक्ति है!

ठीक है, वही एक आत्मिक प्रणाली का दैहिक उदाहरण है। इसे हम कलीसया के क्षेत्र मे लाएंगे। आज कलीसिया क्यों निकम्मी (paralysed) तथा निर्बल बन चुकी है? क्यों यह एक विजयी सेना की नाई आगे नही बढ़ सकती? क्यों कि इसमे एकनिष्ठता नही है और गुप्त रुप से शैतान का कार्य इसके अंदर जारी है। मेरा सुझाव है कि अगर आप शैतान के राज्य को नीचे गिराना चाहते हो, तो हम सकारात्मक सोच को अपनाना होगा। हम अब संदेहवादी होकर अपने आप को यह सवाल नही पूछते बैठेंगे कि, क्या गलत है? क्या संदेहस्पद है? यहाँपर असुरक्षित क्या है? परंतु सकारात्मक, इसमे मसीह का क्या है? मै इसमें ही लगा रहूँगा! इस विषय में मैं मसीह के बारे में क्या देख सकता हूँ? मैं इसी में ही व्यस्त हूँगा, सहभाग दूँगा। हाँ, अगर हम सीफ यह सकारात्मक चाल चलेंगे तो शैतान हिल जाएगा, कलीसया जल्द ही अपनी गरिमा को प्राप्त करेगी। प्रारंभी की कलीसिया का एक गुण विषेश देखा जाए तो वह था एकात्मता। उनके संभाषण का विषय एक था, वे सब एक मन तथा एक विचार के थे। परंतु, जैसे ही शैतान ने अपना "पाँचवा" गुप्त कॉलम शुरु किया, कलीसिया में संदेह, भेदभाव ने प्रवेश किया। फिर उसने कलीसिया को नीचे गिराकर उसके अधिकार (शक्ति) को बिखर दिया।

ओह, आज हमे प्रार्थना करने की सख्त जरुरत है कि एक मसीह, एक आत्मा हम में राज्य करे। हम न तो उस धरती पर जी जो हमे प्रकृति की ओर से (स्वाभाविक) मिली है – क्यों कि हम जो स्वाभाविक रिति से है, उसका असर हमपर हमेशा होता रहेगा; पर उस धरती पर जिसमे मसीह हमारे भीतर रहता है; ना तो हम

संभाव्य गलतिओं, संभाव्य गलत शिक्षा, और हर समय उसकी संभाव्यता तथा वैसा कुछ देखने में व्यस्त न हो। हाँ, हमे इस विषय में परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। हे प्रियों, मेरा विश्वास है, कि सबसे सुरक्षित मार्ग, गलतियों से बचने का मार्ग प्रभु के साथ बने रहना है। हमारी स्थिति (position) ऐसी होनी चाहिए – मैं प्रभु के साथ चल रहा हूँ, और गलतियों के विषय (झूठी शिक्षा) मैं उसी पर भरोसा रखूँगा, जब हम प्रभु के साथ चलेंगे, तब हमें गलति का एकसास अपने आप होगा, क्यों कि पवित्र आत्मा हमें इस विषय खात्री देगा, और हम सबकुछ जान लेंगे। हम सकारात्मक धरती के आधार पर आगे, बढ़ना चाहिए, जो कि प्रभु स्वयं है, और वही कलीसिया में महिमा है, जब हम उसे प्रभु मानते है, "मसीह तुम में जो महिमामय आशा है।"

हम इस बात को बहुत ही सरल रीति से जानते है, कि यह सत्य है। हम एक दूसरे को मिलते है, जिन्हे हम पहले कभी मिले नही। हमे हमारे आत्मिक इंद्रिए से पता चलता है कि हम प्रभु के लोग है, और फिर उसी सरल धरती पर हम बहुत ही प्रसन्न रह सकते है। हम एकसाथ चलते है क्यों कि हम प्रभु के है, और अगर हम इसपर अटल बने रहे तो हम निरंतर प्रसन्न रहेंगे, परन्तु वर्तमान हमने बहस करनी शुरु किई और जान गए कि हम सहमत नही है। सभी महिमा चली जाती है, सहभागिता का विच्छेदन होता है। ओह, प्रभु हमे उसी से पकड़े रहता है।

अब, मै कहता हूँ कि यह आत्मिक घर मसीह स्वयं है, और ऐसी सभी चीजें जिनमें मसीह नही है, अपने अपने स्थान पर ही रखी जाए, और हमें उस धरती पर जीना है जिसमें मसीह हम में वास करता है, और यही परमेश्वर की महिमा है, ताकि

हम सब उसकी अनुग्रह की महिमा का कारण बने। यही से शुरुआंत होती है – उसका अनुग्रह। मुझे ऐसा कही सालों से लग रहा है, (मै नही जानता इस वक्त मै सैद्धान्तिक दृष्टि से सही हूँ या नही, अगर इसमे गलती है तो वह माफ करने योग्य हो), परन्तु, सालों से मुझे ऐसा लग रहा है, कि प्रभु ने स्वयं उसके अनुग्रह के कारण हमे बचाने के लिए दु:ख उठाया है, और इससे मेरा अभिप्राय है, उसने मुझे अनुभव में मालूम कराया है, पर उसके अनुग्रह के लिए मै एक खोया हुआ मनुष्य हूँ, सिद्धान्त नही, सत्य नही।

ओह, आज, मेरे लिये यह बुरी बात होती थी अगर यह परमेश्वर का अनुग्रह के लिए न होता! हाँ आज उसके लहू को पूकारने, उसके अनुग्रह को पुकारने, क्यों कि बहुत से साल गुजरने के बाद भी वह हमे छुडाऩे के लिए सक्षम है। हाँ, आज यह अनुग्रह है, और यह वह है जो परमेश्वर के नाम को महिमा लाता है, जिससे हमे पता चलता है कि हम कितने नीच है, कितने बुरे है, और यह भी पता चलता है कि उसके लहू के कारण हम ऐसे होने पर भी उसे कोई पड़ता। यह परमेश्वर की महिमा है। मै नही जानता कि आपके हृदय की गहराई में क्या हलचल है, पर यह हलचल मेरे हृदय की गहराई में कई सालों से चल रही है। ओह, यह परमेश्वर का अनुग्रह है जो मेरे हृदय की महिमा है, उसके अनुग्रह की महिमा है। वह महिमामित होता है जब हम उसके अनुग्रह को पहचानते तथा उसके आधार पर जीवन जीते है। जब हम इस धरती को छोड़कर अन्य धरती (groune) पर चले जाते है तो यह महिमा हमसे दूर हो जाती है।

प्रभु जल्द ही हमे नीचे गिराएगा यदि हम उसी तरह अपने आप को ऊँचा करेंगे। क्यों कि ऐसा करने से हम उसकी महिमा चुराते है। जब हमारा जीवन परिवर्तन होता है, तब उसे महिमा मिलती है। पौलुस कहता है, "हम... आईने में देखने के समान प्रभु की महिमा देखते है, और उसी प्रतिमा में (समानता) हमारा परिवर्तन होता जाता है।" (२ कुरिन्थ ३:१८)। महिमा परिवर्तन शब्द से जुड़ी हुई है। जैसे-जैसे हम उसके पुत्र की सदृश्यता में बदल जाते है, वैसे-वैसे उसको महिमा मिलती है। जब हमारा जीवन फलदायी होता है तभी उसकी महिमा होती है। "इससे मेरे पिता की महिमा होती है, कि तुम बहुत फल लाओ।" (यूहन्ना १५:८)। और पहले स्थान में फल शब्द का इस्तेमाल यीशु मसीह के स्वभाव के साथ जुड़ा हुआ है, यह फल आत्मा का है – प्रेम, आनंद, शांति, धीरज, दया, भलाई, विश्वास, नम्रता, संयम। "इस से मेरे पिता की महिमा होती है।" हमे सेवा में तथा जीवन में भी फल लाना है।

हाँ, अब हम इसे हमारी अंतिम आज्ञा के रुप में हमारे हृदय में रखेंगे। अगर सचमुच में हमे इसे पहचाना है तो। जब हम उसके वास्ते दु:ख उठाते है तौभी उसकी बड़ी महिमा होती है। ऐसा समय कभी-कभी आता है कि हम कुछ नही कर सकते। हमारे पास करने के लिये एक ही चीज होती है, औरवह है छोड दे या पकड़े रहे; जाने दे या सहते रहे। पतरस को इसके विषय में बहुत कुछ कहने के लिए है। "अगर हम उसी के वास्ते दु:ख सहन करते है – तो यह परमेश्वर का अनुग्र है।" और ऐसा करने से हम उसके नाम को महिमा लाते है। यह बड़ी कहानी होगी। स्वर्ग के ग्रंथालय में यह एक बड़ी किताब की श्रृंखला होगी। 'संतों की दु:ख – सहन करने की कहानी'

जिससे परमेश्वर की इतनी महिमा हुई है। हाँ, यह कहानी एक रोमांच भरी रहेगी! उससे कितने अविश्वासी विश्वास में आ गए। उनके भयंकर परिक्षाओं से गुजरने के कारण अन्य कितने संतों का भली-भाँती समर्थन हुआ है। हमारे प्रभु को भी इस प्रकार की परिक्षाओं में से गुजरना पड़ा। हाँ, यह सब परमेश्वर की महिमा के लिए है। सभी युगों मे कलीसिया में मसीह यीशु के द्वारा परमेश्वर की महिमा होती है, और हम भी इस प्रकार उसके महिमा के लिए सचमुच एक ऐसा ही घर बनेंगे।

पाठ तीसरा

बचाव की सेवकाई और चुने हुओं का जीवन

(MINISTERING TO THE DELIVERANCE AND LIFE OF THE ELECT)

"उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया, परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ, और बहुमूल्य जीवंत पत्थर है। तुम भी स्वयं जीवंत पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसी आत्मिक बलि चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य है।"

(१ पतरस २:४-५)

"फिर लेवीय याजक जो सादोक की सन्तान हैं, और जिन्होंने उस समय मेरे पवित्र स्थान कीरक्षा की जब इस्राएली मेरे पास से भटक गए थे, वे मेरी सेवाटहल करने को मेरे समीप आया करें, और मुझे चर्बी और लोहू चढ़ाने को मेरे सम्मुख खड़े हुआ करे, प्रभु परमेश्वर की यही वाणी है। वे मेरे पवित्र स्थान में आया करें, और मेरी मेज के पास मेरी सेवाटहल करने को आए और मेरी वस्तुओं की रक्षा करें। और जब वे भीतर आंगन के फाटकों से होकर जाया करें, तब सन के वस्त्र पहिने हुए जाएं, और जब वे भीतरी आंगन के फाटकों में या उसके भीतर सेवाटहल करते हों, तब कुछ ऊन के वस्त्र ने पहिनें। वे सिर पर सन की सुन्दर टोपियाँ पहिनें और कमर में सन की जांघिया बाँधे हों; किसी ऐसे कपड़े से वे कमर न बाँधे जिससे पसीना होता है।"

(यहेजकेल ४४:१५-१८)

हम प्रेरित के "मसीह पुत्र के सदृश उसके घर का अधिकारी है, और उसका घर हम है" (इब्रानी ३:६) इन शब्दों को स्मरण रखते हुए इस आत्मिक घर के मुख्य लक्षण (features) को देखना चाहते है। उन लक्षणों का जिनके ऊपर हमने मनन किया है उद्देश्य प्रथम यह है कि प्रभु यीशु को उत्कर्षित किया जाए, तथा दूसरा यह है कि हम स्वयं (अपने आप) को एक ऐसा वाहन (vehicle) बनाए जिसके द्वारा परमेश्वर की महिमा निरंतर होती रहे।

आत्मिक घर की उपस्थिति

शैतानी विरोध के लिए इशारा

अब थोड़े समय के लिये हम उन मुख्य लक्षणों के तीसरे बिन्दु पर विचार करेंगे, जो परमेश्वर के अभिप्राय में, यह आत्मिक घर का उद्देश्य चुने हुओं के उद्धार से निगडित है। जो अंतिम शब्द "चुने हुए"(the elect) के ऊपर हम ज्यादा विचार नही करेंगे। हम उस शब्द से विशेष प्रभावित होने की आवश्यकता नही है। वे (चुने हुए) परमेश्वर के लोग है जिनके विषय चर्चा जारी है; कलीसिया जिसका परमेश्वर को पूर्वज्ञान है, पिता के पूर्व ज्ञान के अनुसार उसने उसे चुना है, संसार (सृष्टि) के बनाने के पूर्व उन्हे चुना है, और यह आत्मिक घर उन्ही लोगों के उद्धार तथा जीवन के लिये अस्तित्व में है। परमेश्वर के लोगों के लिए यह बड़ा व्यवसाय (Vocation) है। इतना बड़ा, इतना महत्वपूर्ण, कि कलीसिया के प्रवेश से पूरा नर्क उसके विरोध में नीचे से हिल गया। कलीसिया का संसार मे प्रवेश शत्रु के लिये एक बड़ा इशारा सा

साबित हो गया जिससे वह उसकी सारी शक्ति के साथ कलीसिया के विरोध में खड़ा हो गया है, इन दिनों में उसका विरोध भारी मात्रा में महसूस किया जा रहा है। शत्रु की ओर से यह दुहरी चाल जो शुरु से है उसका कारण प्रथम यह है कि कलीसिया को उसके धूर्त चाल के जरिए अंदृनी रुप से नाश कराना, और दूसरा, उसकी पूरी शक्ति के साथ उसपर कब्जा बनाना। मेरे खयाल से चिन्हों को देखते हुए हम इसके विषय और कुछ कहने की आवश्यकता नही है। वह सचमुच एक शैतान पद्धति (Satanic method) है।

कलीसिया के इतिहास में सबसे पहला संकेत वही अंदृनी, धूर्त चाल जिसे गोपनीय रुप से शैतान (शत्रु) ने अनन्या तथा सफीरा के जीवन के द्वारा प्रविष्ट किया, और उसे तुरन्त शैतानी चाल के रुप में घोषित भी किया गया। "शैतान ने तुम्हारे हृदय में यह बात कैसे डाली यह कुछ शैतान की धूर्त चाल थी जिससे उसने अंदृनी विनाश (internal collapse) करने का प्रयास किया। परन्तु परमेश्वर के तुरन्त (शीघ्र) न्याय के कारण वह एक रोग (Canker) की नाई फैला जा सकता था। यह तब तक चल सकता था जब तक कलीसिया इस प्रकार की शिक्षा का समर्थन करती थी। फिर, बहुत जल्द ही, शैतानी शक्ति का दूसरा रुप प्रकट हुआ, जो खुला, प्रत्यक्ष तथा आक्रामक था जो परमेश्वर के हथियार के खिलाफ था। यह स्पष्ट है कि शैतान स्वयं तथा कलीसिया के विषय हमेशा परिचित रहता है; ये दोनों एकसाथ कभी नही चल सकते।

मै फिर से कहना चाहूँगा कि वर्तमान घटनाएँ जो घट रही है वे न केवल राजनैतिक और क्षणभंगूर है, अपितु आत्मिक गुण से भी हुई है, औज जैसे संसार के लोग इन्हे पहचानते तथा उनका उच्चारण करते है, तो वे ऐसा पता चलता है कि वे अपनी पृष्ठभूमि की तौर पर शैतानी (satanic) लगती है। अगर यह सच है, तो हम इस नतिजे तक पहुँच सकते है, जो, कि ऐसे सीर्फ कुछ निश्चित लोग ही नही जो शैतान के खिलाफ़ है। यह लोगों के मध्य से शैतान के विरुद्ध है। अगर इस बात को हम ठीक रीति से हमारे हृदयों में ग्रहन करने पाए है, और भीषण परिस्थिति के दबाव द्वारा इसे और अच्छि तरह समझ पाए है, तो हमे इस बात का जिक्र करना चाहिए कि न केवल हमारा कलीसियाई अस्तित्व खतरे में है, अपितु हम एक ऐसी परिक्षा का मुकाबला कर रहे है जो सबसे बड़ी, शायद हमारे जीवन की अंतिम परिक्षा जिससे हम हमारी स्वर्गिय बुलाहट की पुर्ति कर रहे है।

मसीह के घर पर शैतान का हमला

(THE ASSAULT OF SATAN AGAINST CHRIST IN HIS HOUSE)

आप देखते है कि शुरु से शैतान का पूरा प्रवास यही रहा है कि वह इस पृथ्वी के ऊपर से परमेश्वर के लोगों को नष्ट करे। इस समय में मसीह का कलीसियाई जीवन शैतान का लक्ष्य (objective) बन चुका है, और जितना कि कलीसिया परमेश्वर के शाश्वत उद्देश्य को पूरा करने हेतु बुलाई गयी है – क्यों कि कलीसिया सीर्फ इसी उद्देश्य से नही बुलाई गई पर यह उस उद्देश्य का सफल कराने हेतु

परमेश्वर का चुना हुआ पात्र (elect instrument) है - यही हकिकत उस भयंकर शक्ति जो परमेश्वर के उद्देश्य के खिलाफ है, उस बात को प्रकट करती है।

परमेश्वर के मसीह की महानता

(THE GREATNESS OF GODS CHRIST)

परमेश्वर का उद्देश्य क्या है? ठीक, इसका संबंध उस पहली चीज से है जिसके विषय परमेश्वर के घर के संदर्भ में हम सोच रहे थे – संसार के सिंहासन पर परमेश्वर के पुत्र का उत्कर्ष। वही परमेश्वर का मुख्य उद्देश्य है, और कलीसिया को इसमें न केवल भाग लेने हेतु बुलाहट है, अपितु इस उद्देश्य को पूरा करने हेतु माध्यम (instrumental) के रुप में बुलाहट है।

अगर यह सच है, तो, हम दोहराते है कि उसमें शैतानी शक्ति का समावेश है; क्यों कि प्रभु यीशु का उच्चतम पद को पहुँचना कोई मशीनी (mechanic) या स्वयंचलित (automatic) चीज नही है। यह आत्मिक चीज है तथा आत्मिक शक्ति से ही इसकी पुर्ति होती है। यही कारण है कि हमे "जीवित पत्थर"(Living Stones) की संज्ञा मिली है। हम सीर्फ एकत्रित किई हुई ईंटे नही है; हम वही ख्रिस्त के जीवन के महत्वपूर्ण अंग है तथा मसीह विषयक परमेश्वर के उद्देश्य का भी अंग है, और यह उसका अंतिम जीवन जो कलीसिया में प्रभु यीशु मसीह की महिमा के वास्ते प्रकट हुआ है। जब तक सभी चुने हुए लोग मृत्यु के ऊपर जयवंत होकर नही आते तब तक

प्रभु यीशु सर्वोच्च प्रभु के रुप मे अपनी महिमा प्रकट नही कर सकते। इसी कारण कलीसिया की जीत मसीह की महिमा को प्रगट करती है। यह, इस कारण एक जीवित विषय, आत्मिक विषय है, केवल ठंडी, जीवन रहित, मशीनी (mechanical) चीज। हम अब कुछ बहुत ही हकीकत में है। हम यह जानने पर है, कि परमेश्वर तक पहुँचने के लिए, ऐसा हथियार जो शैतानी षड्यंत्र को तोडते हुए इस उद्देश्य को पूरा करने मे सक्षम हो। इसमें शैतानी शक्ति को पूरा करने मे सक्षम हो। इसमें शैतानी शकित को पूरी रीति से बाहर निकालना है ताकि परमेश्वर इस बात को प्रदर्शित करे कि उसका मसीह कितना शक्तिशाली है।

यही तत्व परमेश्वर के वचन मे सीखाया गया है। हम इसे परमेश्वर के वचन में प्रमुख उदाहरणों द्वारा देख सकते है। उनमे से एक है फिरौन राजा के प्रति: मैने इसी उद्देश्य से तुझे ऊँचा किया है ताकि मै अपने सामर्थ्य को तुझमें प्रकट करुँ। इस कारण फिरौन को भरपूर आजादी दी गई थी। जब फिरौन पहली बार परमेश्वर के विरोध में खड़ा होकर परमेश्वर का इन्कार किया, उस समय परमेश्वर उसे तुरन्त अपने हाथों से नाश कर सकता था, और वही फिरौन का अंत हो जाता था। परन्तु परमेश्वर ने उसे बचाया, उसे बाहर निकाला, एक बार, दो बार, तीन बार, यहाँ तक कि दस बार, ताकि फिरौन की सभी शक्ति का इस्तेमाल हो। परमेश्वर इससे दिखाना चाहता था कि उसके विरोध मे क्या कुछ हो सकता है, तौभी उसकी शक्ति शैतानी शक्ति से बहुत अधिक प्रभावशाली है। यह सीर्फ एक प्रतिक (type) है।

पर, आप देखिए, हमे सीर्फ फिरौन या तानाशाहों से ही नही लड़ना है। हम शैतान की सभी शक्तियों के विरोध में है। मै कहता हूँ कि कलीसिया उसके विराध में है, और कलीसिया जो परमेश्वर के उद्देश्य को सफल (पूरा) करने का हथियार है, उसे शैतान से अधिक प्रभावशाली साबित होना चाहिए। जहाँ परमेश्वर अपने लोगों में अपनी जान डालता है, उन्हे एक बात का सामना अवश्य करना पडेगा, और वह है मृत्यु। यह सच है। यह उल्लेखनीय है। आप शायद आश्चर्य करेंगे कि जितना हम परमेश्वर के नजदिक चलते है, उतनी ही करीब मृत्यु हमारे रहती है। एक बात जिसके विषय हम विरोध मेंरहते है वह है शैतान की मृत्युविषयक गतिविधी। वह हमारे पेशे का हिस्सा है। हम अंदृनि संकोचस्पद परिकल्पना नही चाहते है, और हमारे विषय जो स्वाभाविक है वह सबकुछ बुरा लगता है; परंतु हमे यह सब एक तरफ डालकर सच्चाई का सामना करते हुए प्रभु पर विश्वास करना चाहिए। हमे आत्मिक सच्चाइयों का सामना करना है। इसलिये, हम इस बात पर ध्यान देते है, कि, अगर यह सच है कि यह आत्मिक घर, यह कलीसिया, यह मसीह का शरीर परमेश्वर के उद्देश्य (योजना) को मसीह यीशु मे पूरा करने हेतु अस्तित्व में है, तो इसका परिणाम यही होगा कि शैतान की सारी शक्ति नष्ट हो गई होगी, यहाँ तक कि, कलीसिया में, मसीह के मृत्यु पर प्राप्त किये हुए विजय का प्रकटिकरन स्वयं मृत्यु के शक्ति से भी अधिक प्रभावशाली होना चाहिए। फिर आप इसकी सीढ़ी (steps) देखिए। सबसे पहले आत्मिक घर की उपस्थिति शैतानी कार्यवाही के लिए एक प्रकाश स्तम्भ (Signal) है। दूसरा यह कि शैतान की सारी शक्ति कलीसीया, जो मसीह का शरीर तथा जीवन है, उसके विरोध में है। तीसरा यह है कि परमेश्वर का अभिप्राय जो

कलीसिया के जरिए है, वही शैतान की शक्ति को हराता है। इसी रीति से यह कलीसीया के लिए एक भयंकर अनुभव है जो शैतान की नही परन्तु परमेश्वर की महानता को प्रकट करता है। यही इसका लक्ष्य है।

संघर्ष की प्रगति

(THE COURSE OF THE CONFLICT)

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि, इतिहास के मुताबिक शैतानी हरकतों पर शैतान का पूरा अधिकार है। उसने कैन से आरंभ किया। धर्मशास्त्र बताता है, "कैन दुष्ट जन था जिसने अपने भाई का खून किया।" (१ यूहन्ना ३:१२) पूराने नियम मे अगर हम झाँककर देखेंगे तो पाएँगे कि शैतान किस प्रकार अपनी बुरी युक्तियों का इस्तमाल करके जय पाता है। बार-बार हमें यही देखने को मिलता है। ये युक्तियाँ इसी इंतजार में रहती है कि कब शैतान के हाथों द्वारा इस्तमाल होके किसी की जान ले। वहाँ पर दोएग है जो परमेश्वर के अभिषिक्त राजा पर दृष्टि लगाए हुए है कि उसका घात करे। वहाँ पर हेमान अगाती है, जो सारे यहुदियों को नष्ट कराने का षड्यंत्र रचाता है। इस प्रकार हम देखते है कि शैतान आज कि किस रीति से परमेश्वर के लोगों को नष्ट करने की कोशीश में है। वे आज भी कार्यरत है और हम उन्ही के नाम भी जानते है। परन्तु परमेश्वर के पास हाबील के समय से ही अपनी उत्तराधिकार का सिलसिला था। अब इन सबने विरोधी (adversary) की शक्ति का निष्कासन किया। हाबील ने कैन से मृत्यु की शक्ति को निकाला। ऐसा लगता है कि जैसे वह स्वयं उसके वश में

हो गया, पर ऐसा नही है। क्यों कि आगे चलकर हम इसके विपरित जानते है, और वह, मरने पर भी बोलता है। उसकी गवाही बनी रहती है। इसी प्रकार इससे जुडे हुए परमेश्वर के सभी उत्तराधिकारीयों ने विरोधी की शक्ति को निकालकर उसका प्रदर्शन किया, और अन्त में, यद्यपि ऐसा प्रतित होता था कि उन्होने पृथ्वि पर रहते हुए अपने आप को उन्हे सौंप दिया है, पर जीत उस जीवन में थी जो उनके अन्दर था, जो उस परमेश्वर का था जिसकी वे सेवा करते थे। यह बात आज भी सच है।

हमे अपने निष्कर्ष लगाने में, विशेषत: इस बात में अनुमान लगाते हुए सावधानी बरतनी चाहिए कि परमेश्वर हमारे शत्रु की रस्सी सैल रखता है ताकि वह इस जीवन में काफी हद तक सफलता पा सकता है। परन्तु, स्मरण रखे कि शैतान की शक्ति तथा शैतान की सफलता परमेश्वर के बावजूद नही बल्कि परमेश्वर के कारण ही है। अगर आप इस फर्क को जान सकते हो तो आपकी बड़ी सहायता होगी। शैतान की शक्ति परमेश्वर के बावजूद नही बल्कि परमेश्वर के कारण है। परमेश्वर उसे अनुमति देता है। यह परमेश्वर की प्रभुता (sovereignty) के आधिन है। परमेश्वर यूं ही उसे निकालता है, बढ़ाता है, और जब उसके पाप का घडा भर जाता है तो परमेश्वर स्वयं को प्रस्तुत करते हुए दिखाता है कि वह कितना प्रबल (overwhelming) है। यही अंत है। इसलिए जब आप दुष्ट जन को सफल होते हुए देखते हो तो उसके विषय अनुमान लगाते समय आप सावधान रहे। परमेश्वर के कार्य को जाने। वह किसी भी चिज में उसकी शैशव (infancy) अवस्था में उसके खिलाफ अपनी शक्ति का प्रदर्शन नही करता। वह परमेश्वर की क्या शक्ति होगी? नही,

परमेश्वर अपनी शक्ति का प्रदर्शन तब करता है जब विरोधी परिपक्व (full grown) हो जाता है।

अब, मै अन्य विषय की ओर न मुडते हुए एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू की ओर ले चलता हूँ। यह गोद लेने (Sonship) विषयक एक भौंचक्का करनेवाली बात है। जब कि गोद लेना, जो एक प्रौढ मनुष्यत्व है, ईश्वर के हाथ में है, और उसी के साथ हमे महिमा भी मिलती है। (वह यह कि, जब चीजें पूर्ण हो जाती है, तब महिमा प्रगट होती है – "परमेश्वर के पुत्रों की महिमा को प्रगट होने की प्रतिक्षा करते है") गोद लेने वाली बात का तत्व शैतान की तरफ भी लागू होता है। प्रभु यीशु ने उन यहुदी प्रधानों को कहा, "हे पाखंडी शास्त्रियों और फरिसियों, तुम पर हाय! तुम एक जन को अपने मत में लाने के लिये समुद्रों को लाँघते और पृथ्वी की खाक छानते हो, और जब वह तुम्हारे मत में आ जाता है, तो उसे अपने से दूना नारकीय बना देते हो।" (मत्ति २३:१५) वह अपने शब्दको चुनता है – नर्क की बढ़ती हुई अभिव्यक्ति। भयंकर बात! पर, आप देखिए, यह सब परमेश्वर के प्रभुत्व (sovereignty) के नीचे होता है ताकि उसका न्याय प्रकट होने के पूर्व इन चीजों की परिपक्वता हो। परमेश्वर की प्रभुता के लिये यह जरुरी है कि पाप अपनी पूर्णत: को पहुँचे। यह परमेश्वर के होने के बावजूद नही बल्कि परमेश्वर के होने के कारण है। और परमेश्वर शैतान की शक्ति के योगफल (Sum) का उत्तर कलिसिया के माध्यम से देनेवाला है। इस प्रकार अन्त में, "उसकी महिमा कलीसिया मे, और मसीह यीशु में पाढी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे।" (इफिस ३:२१)

कलीसिया का व्यवसाय

(THE CHURCH'S VOCATION)

अब फिर, इसी संबंध में कलीसिया का व्यवसाय क्या है? जैसे कि मैने पहले कहा, हम यहाँ पर चुने हुओं के उद्धार तथा उनके जीवन के उद्देश्य से मौजूद है। सही सेवकाई ऐसे ही दिनों में उभरती है। यह एक याजकीय माध्यस्थि (priestly intercession) की सेवकाई है: "एक आत्मिक घर, पवित्र याजकत्व जो आत्मिक बलिदान चढ़ाने के लिए जरुरी है।" हम शायद अभी इस प्रकार सेवकाई में उतरे है जैसे पहले कभी नही थे, जैसे कि हम देखते है कि हमारा शत्रु भयानक रुप धारण करके हमारे विरोध में (कलिसिया) आता हुआ नजर आता है। हम यहाँ पर परमेश्वर में मजबूत पकड़ लिए हुए खड़े होना है, और हमें इस विषय में बहुत ही सावधानी बरतनी चाहिए, ताकि हम शैतान (शत्रु) की किसी चाल में फँसकर यह सेवकाई कही छोड़ न दे। हम इसके गोपनीय अंदृनि गतिविधि के विषय में ज्यादा कुछ कह नही सकते, ताकि इस आत्मिक शक्ति के प्रचार के माध्यम द्वारा अंदृनि कमजोरी की वजह से परमेश्वर के लेाग निकम्मे हो जाए, और यही उद्देश्य के साथ हमे हमारी परमेश्वर के पास जो पहुँच है, उसके द्वारा हमे खात्री तथा प्रोत्साहन दिया गया है। हम इस बात को स्मरण रखे कि ये सान्त्वना देनेवाले शब्द सीर्फ हमारे शान्ती और आनंद के लिए नही है।

यही व्यवासायिक दृष्टिकोण है, और मै विश्वास करता हूँ इसे शत्रु की चाल से फिर एक बार प्रमाणित किया गया है। क्या वह बारंबार लोगों को उनके संदेह, उनकी मसीह से पहुँच (access) तथा उनको इल्जाम लगाकर उन्हे अपनी प्रार्थना की सेवकाई से अलग नही कर देता? वह ऐसी परिस्थिती हमारे जीवन मे लाता है जिससे पूरा हृदय प्रार्थना से अलग किया जाता है। "प्रार्थना का क्या लाभ है? वहाँ यह है और वहाँ यह है और मेरे विषय में कुछ अन्य बात; मेरी परिस्थिती मुझे प्रार्थना से दूर रखती है।" और, हाँ, यदि हम उस इल्जाम का प्रतिकार करेंगे तो, एक तरफ लहू के मूल्य का साफ इन्कार है, जो शैतान चाहता है, और दूसरी तरफ उसके हाथों में खेलना है और उसे परमेश्वर के लोगों के ऊपर उसको अधिकार देने के बराबर है। याद रखिए, हमारी प्राथनाओं में जो रुकावटें आती है ये सब शत्रु कीचाल है जिससे वह हमारे व्यवसाय (Vocation) को नष्ट करना चाहता है तथा परमेश्वर के लोगों के ऊपर अपना अधिकार जताना चाहता है। हम यहाँ पर परमेश्वर के लोगों के छुटकारे तथा उनके जीवन के लिये मौजूद है। कलीसिया के अस्तित्व का यही मुख्य उद्देश्य है।

अब, क्या आप इसे केवल कहने से अधिक मान सकते हो? क्या आप इसे बारकाई से सुनेंगे? अगर आप सचमुच में परमेश्वर की संतान है, तो क्या आप इस समय प्रार्थना करेंगे ताकि आप इसके इस हकिकत के अर्थ को देखें और स्वीकार करे कि आप मसीह की कलीसिया का अंग है, आत्मिक घर में जीवित पत्थर और आपके अस्तित्व का सीधा संबंध परमेश्वर के सभी जगहों के लोगों के उद्धार से जुड़ा हुआ

है। आप सीर्फ एक व्यक्ति (Individual) नही है, आप एक घर का अंग है, और यह घर संसार के सभी चुने हुए लोगों के उद्धार के लिए सृजा हुआ परमेश्वर का औजार (Means) है। हम इसी उद्देश्य से अस्तित्व में है, और अगर हम इसी उद्देश्य की ओर कार्यरत नही है तो, हम हमारे अस्तित्व के उद्दिष्ट (Object) का इन्कार करते है। इसे हमे हृदय की गहराई से समझना होगा, क्यों कि इसके लिए कोई पर्याय नही है। यह कोई पर्यायी (Optional) विषय नही है ज्यों कि हम हमारी मध्यस्थी की प्रार्थना की सेवकाई करने का कार्य पूरा करे या न करें, और हर समय सभी विश्वासियों (Saints) के लिए प्रार्थना करे। आपको इसलिये न्योता नही दिया गया कि अगर आप चाहों तो आप इसे करे। यह परमेश्वर का घर नही हो सकता। हमे देखना है कि परमेश्वर का घर कोई निर्जिव वस्तु नही है। यह जीवित है, और इसके जीवित रहने का लक्षण है कि यह सजीव, सतर्क तथा आत्मिक रुप से कर्मठ (energetic) हो; और इसे मध्यस्थि की आत्मा (Spirit of intercession) के द्वारा चित्रित किया जाता है। ऐसी स्थिति नही है कि जहाँ हम अलग-अलग समय पर प्रार्थना करते है और लोग अपने मन की भावनाओं के मुताबिक प्रार्थना करे या न करे। यह घर मध्यस्थी वकी प्रार्थना के द्वारा चित्रित होता है, और यही बात इसे प्रमाणित करेगी कि हम परमेश्वर की संतान होने के नाते हमारे स्वभाव में तथा जीवन में परिवर्तन कहाँ तक हुआ है। अगर हम सचमुच में मसीह में हमारी स्थिति (Position) के अनुसार जीते, तो जब कभी प्रार्थना का अवसर मिलता, हम प्रार्थना के लिये तैयार रहते। कम से कम हमे प्रार्थना में जीवित रहना चाहिए, और, हम चाहे श्रवनीय (audible) रुप से हो या नही, प्रार्थना करते रहे; यह उस्फूर्त (spontaneous) होगा। जीवन उस्फूर्त है, और मध्यस्थि

की प्रार्थना जीवन का एक अंग है जो कि उस्फूर्त है। अगर परमेश्वर की आत्मा सचमुच में हमारे अंदर कार्यरत है, तो हम प्रार्थना करनेवाले लोग बनेंगे। इससे कोई चुक नही सकता, ऐसा ही होगा।

परन्तु इसके लिये, हमे इन बिन्दुओं पर ध्यान देना होगा जहाँ पर हमारी प्रार्थना अक्रामक है, और ऐसे बिन्दु जिनके कारण हमारी प्रार्थना अक्रामक हुई हो। याद रखे, मुख्य बात इसी पहुँच (access) की है। हमे परमेश्वर के साथ हमारी जो पहुँच है, उसकी खात्री होनी चाहिए, और उस खात्री के लिये हमे उस बहुमुल्य लोहू से परिचित होना चाहिए, और हमे किसी बात से निराश नही होना चाहिए; क्यों कि मसीह का लहू हमे इसके लिए मना करता है। वह लहू हमे निराश में डालनेवाली हर एक बात का सामना करने के लिये ही अस्तित्व में है। हाँ, हम असफल हो सकते है, गलती कर सकते है; ऐसी बातें हमारे जीवन में हो सकती है जो हमे तथा हमारे प्रभु को खेदित करे, पर हमे इस बात को जानना होगा कि मसीह का बहुमुल्य लोहू हमे हरएक समस्या से छुड़ा सकता है तथा हमे इस लोहू को हमारे जीवन मे लागू करना चाहिए।

हम स्मरण रखेंगे कि हमे नीचा दिखाने हेतु शत्रु के प्रयास में हमे नीचा दिखाने से भी कुछ अधिक है। वह यह है कि हमे नाश करे और इसी प्रकार हमारे प्रार्थना का जीवन भी नष्ट करे। परमेश्वर के लोगो के जीवन तथा छुटकारे के लिये हम जिम्मेदार है। इसी उद्देश्य के साथ हम अस्तित्व रखते है।

कलीसिया तथा सिंहासन की शक्ति

(THE CHURCH AND THE POWER OF THRONE)

यह देखते हुए, हमारे लिये वह आवश्यक है कि हम समझे कि, हम पापियों के लिये परमेश्वर का सिंहासन 'अनुग्रह का सिंहासन' है, यह शत्रु के लिये 'न्याय का सिंहासन' भी है। हमारे लिये जो दया का आसन है वह शैतान के लिये विनाश का आसन है। हमे सीर्फ इस दयासन के पास हमारे खातिर की दृढ़ता के साथ नही आना चाहिए, पर हमे वही दृढ़ता के साथ शैतान के कामों को नष्ट करने हेतु परमेश्वर के सिंहासन के पास आना चाहिए। हमेशा याद रखिए कि उस सिंहासन की दो भुजाएँ है। हम विश्वासियों के लिए दयासन क्यों कि परमेश्वर का मेमना हमारे लिये कुर्बान हुआ, और शत्रु (विरोधी) के लिए न्यायासन।

यह सिंहासन की दूसरी भुजा है जो एस्तेर के साथ प्रभावी रुप से उभर आती है। यह हमान के द्वारा रचे गए षड्यन्त्र को नष्ट करती है। हमे यह पहचानना होगा कि यह आसन सिर्फ कलीसिया मे दया के आसन के रुप में ही नही, बल्कि यह आसन शैतान के कामों को नष्ट करने हेतु भी मौजूद है। यह प्रार्थना का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पहलू है। मुझे और आप को इस आसन के छूने से शत्रु पर क्या असर होता है, इस बारेमे जानकारी चाहिए। यह सिंहासन कलीसिया के अन्दर ही होना चाहिए।

कलीसियाई आदेश पर अंतिमक उपदेश

(A FINAL WORD ON THE TRUST COMMITTED TO THE CHURCH)

ठीक है, अब हमे इस बात का समारोप करना चाहिए, और उसे हम इस प्रकार करेंगे। परमेश्वर के लोगों को सारा जीवन कलीसिया को सौंपा गया है। यह बहुत ही विशाल तथा असाधारन बात है, तथा इसके ऊपर मनन करना भी उतना ही असाधारन है। मै जानता हूँ कि, मसीह में महिमा के साथ सब कुछ सुरक्षित है, परन्तु ईश्वरी प्रकाशन के अनुसार यह बात भी उतनी ही सच है, कि इसकी कार्यवाही होनी चाहिए, और यह कार्य कलीसिया को सौंप दिया गया है। हम परमेश्वर के सहकर्मी है। हम मसीह मे इसलिए सृजे गये थे कि वे काम करे जो परमेश्वरने हमारे करने के लिए पहले से ही ठहराए थे। परमेश्वरने यह असाधारन काम अपने लोगों को सौंप दिया है ज्यों कि अपने लोगों की कार्यवाही, जो अपने लोगों का उद्धार (छुटकारा) तथा जीवन है – जो उन्हे अंतिम महिमा तक पहुँचाएगा। यही मसीह की महानता का प्रदर्शन है जो अपने लोगों के लिए अपने लोगों के द्वारा है।

आप देखिए, जब मसीह आता है वह सीर्फ महिमा में दिखने के लिये, महिमामय ख्रिस्त; के रुप में ही नही वह इसलिये आता है कि अपने संतो तथा अपने विश्वास करनेवालों के जीवन में महिमा पाए। मसीह की कलिसियामें महिमा सबसे अन्त में है। उसी के लिऐ आपको और मुझे और प्रभु के सभी लोगों को इसकी कार्यवाही (outworking) सौंप दी गई है। प्रभु हमे ज्योति देता है। फिर, जब पीछे रहकर कहता है, अभी, फिर, आपका काम है; मै आपको ज्योति दे चुका हूँ, अब

उसीके साथ चलो! हम हर समय प्रभु को मदद की माँग करते है। प्रभु, मेरे जीवन में आ और कार्य कर! प्रभु कहता है, ज्योति के साथ चलते रहो! मै यहाँ हूँ, मै आपको आत्मा की पूर्तता करुँगा, परन्तु मैने आपको अपने व्यवसाय (business) के बारे मे बताया है: आपका व्यवसाय करो! (Do your business!)

ओह, प्रभु के लोग उठे और जाने कि परमेश्वर ने उन्हे महान कार्य सौंपा है। यह महान कार्य परमेश्वर की योजना (उद्देश्य) को पूरा करना है जिससे परमेश्वर की महिमा होती है। यही हमारा व्यवसाय है। इसलिये हमे निरंतर परमेश्वर को अपिल करने की अपेक्षा अपने आप को प्रार्थना तथा मध्यस्थी (intercession) की सेवकाई के लिए देना चाहिए, और इसी रीति से उसका जीवन उसके लोगों के लिए सेवाकार्य में दे, जिससे उसके लोगों का प्रार्थना के द्वारा पाप और मृत्यु से छुटकारा मिले।

अब, अगर वही छुटकारा एवं परमेश्वर के लोगों का जीवन उसकी नियुक्ती के अनुसार हमारे पास पहुँचा है, तो यह बहुत ही बड़ी बात है। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि यही उद्देश्य के साथ कलीसिया का अस्तित्व जुड़ा हुआ है; ताकि परमेश्वर की महिमा, प्रभु की जय, प्रभु की महानता अन्त में अपने लोगों के जीवन में प्रदर्शित हो। यह हमारा उत्तरदायित्व है। परमेश्वर का स्वीकार करे तथा इसके प्रति समर्पित हो। परमेश्वर करे हम इस प्रार्थना की सेवकाई के लिए आलसी नब ाने परन्तु फुर्ती के साथ आत्मा से भरकर इस मध्यस्थी (intercession) की प्रार्थना से भरकर इस जिससे हमारे जीवन के द्वारा परमेश्वर के महान छुटकारे का कार्य प्रमाणित हो।

पाठ - चार

हरएक स्थान में मसीह का प्रतिनिधित्व

(A REPRESENTATION OF CHRIST IN EVERY PLACE)

और शिमौन पतरस ने उत्तर दिया, "आप जीवित परमेश्वर के पुत्र मसीह है"। यीशु ने उसको उत्तर दिया, "हे शिमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है! मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रकट की है। मैं भी तुझसे कहता हूँ, तू पतरस है। मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाउँगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।

(मत्ति १६:१६-१८)

"यदि वह उनकी भी न माने तो तू कलीसिया से कहना। यदि वह कलीसिया की भी बात न माने तो तू उसको अन्य जाति और महसूल लेनेवालों के समान मानना।"

(मत्ति १८:१७)

"क्यों कि जहाँ दो या तीन व्यक्ति मेरे नाम से इकठ्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में उपस्थित होता हूँ।"

(मत्ति १८:१०)

“इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो।”

(१ कुरिन्थ १२:२७)

“तुम प्रेरितों और नबियों की नेव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं है, बनाए गए हो। यीशु में ही सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मंदिर बनती जाती है। उस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो।”

(इफिसियों २:२०-२२)

“जैसा वह है वैसे ही संसार में हम भी है।”

(१ युहन्ना ४:१७)

आत्मिक घर के संदर्भ में हमारे अध्ययन को जारी रखे हुए, प्रभु के ऊपर विशेष रुप से मेरे मन में बल (emphasis) है। कुछ ही लोगों के लिए यह शायद नई सच्चाई नही है, परन्तु यह नया बल प्रभु की ओर से है। कोई भी विषय हो, उन्हे उनके विषय जो इससे सहमत है, योगदान देना चाहिए। फिर भी, हम सब एक नए तरिके से वचन में प्रवेश करेंगे।

परमेश्वर के घर से जिससे हम संबंध रखते है, हम कुछ मुख्य पहलुओं तथा उद्देश्यों की ओर देखते है, यह वही घर है जिसमे हम अभी शामिल होना है क्योंकि यह

घर हर एक जगह में आत्मिक रुप से हमारा प्रतिनिधित्व करता है। वह कलिसिया है, वह परमेश्वर का मंदिर है, निवासस्थान है। उसी में हम परमेश्वर को पाते है। वह कलीसिया के सभी अभिप्राय की पुर्ति करता है। कलीसिया ही मसीह है। पर अभी, जहाँ तक संसार का खयाल है, कलीसिया वितरित है, यद्यपि वह विभाजित नही है, यानी, मसीह आत्मा में हरएक सदस्य के साथ है; फिर भी बहुतसे मसीह नही, परनतु एक ही मसीह है। प्रेरित पौलुस कुरिन्थ की कलिसिया से सवाल करते है, आप जानते हो – क्या मसीह विभाजित है? – और मसीह विभाजित होने की गुँज करिब-करिब इसमे सुनाई देती है। वह एक है, और एक ही रहेगा, यद्यपि वह हर एक सदस्य में वास करता है। यह एकता की आत्मा हम कलीसिया में पाते है। लोग तभी प्रभु को पाएँगे जब हम मसीह की नाई सोचेंगे। वही कलीसिया का उद्देश्य है।

स्थानिक कलीसिया का सजीव चरित्र

(THE VITAL CHARACTER OF THE LOCAL ASSESSMBLY)

पर अब हम मसीह के स्थानिय अस्तित्व के महत्व पर विचार करेंगे। यह हमारे बीच एक सुपरिचित तथा सुगम्य चिज है कि जो कुछ प्रभु यीशु ने सुसमाचारों में कहा था वह एक बीज (germ) रुप में कहा था। क्यों कि आत्मा तब तक नही दिया गया था, वह सीर्फ एक वास्तविक रुप से (objective way) बात करता था, सभी बातों को तुलनात्मक तथा अविकसित रुप में डाला करता था। सुसमाचारों में यही सबकुछ है,

जो इस प्रतिक्षा में है कि पवित्र आत्मा विश्वासियों में वास करें ताकि इससे भी बड़ा अर्थ इसी घटना के द्वारा प्रदर्शित हो। और, बाकी सभी में, हमने पढ़े हुए अनुच्छेद जो कि मत्ती १८:२० है, सम्मिलित है – "क्यों कि जहाँ दो या तीन व्यक्ति मेरे नाम से इकट्ठे होते है, वहाँ मैं उनके बीच में उपस्थित होता हूँ।" अगर हम इसको सुसमाचारों में जिस रीति से लिखा है उस प्रकार लेंगे या समझेंगे तो हमे बड़ी हानि होगी। वह सीर्फ इसी रीति से समझने के लिए कभी भी नही लिखा था।

पवित्र आत्मा के पुन: प्रकाशन में, यह अनुच्छेद बाकी अनुच्छेदों के साथ तुलना करते हुए देखेंगे तो उसका अर्थ साफ़ और सरल हो जाता है, और हमारे पास जो पूर्ण प्रकाशन रह जाता है वह यह है कि, जहाँ दो या तीन मसीह के नाम से इकट्ठा होते है तो वहाँ मसीह विशेष रुप से उपस्थित होता है, क्यों कि उसने अपने देह (Body) के लिए अपने आप का समर्पित किया है। इसको दूसरे शब्दों में अगर डाला जाए तो, यह मसीह की देह है जो मसीह की सिध्दता को लाने हेतु अनिवार्य है। प्रेरित कहते है, "वह देह एक नही बल्कि अनेक अंग है।" (१ कुरिन्थ १२:१४) परन्तु वही प्रेरित आगे कहता है, "आप मसीह के देह हो।" (१ कुरिन्थ १२:२७); और वह यहाँ पर स्थानिक मंडली के विषय में कहता है। मसीह की विशेष उपस्थिति संगठन में होती है। प्रभु ने अपने प्रकाशन के लिए अपने आप को मंडली के साथ जोड लिया है। यह सही बात है कि प्रभु व्यक्तिगत रुप से हमारे अंदर है, और यह भी उतना ही सही है कि प्रभु व्यक्तिगत रुप से हमारे अंदर तथा हमारे द्वारा प्रकट होता है, परन्तु प्रभु मर्यादित है, और जब नीजि मामला होता है तो वह और भी अधिक मर्यादाशिल

होता है। उसका विचार कुछ और है, इसलिए वह इस प्रकार का विधान करता है। और जब वह कुछ कहता है, तो जरुर उसका कुछ अर्थ होता है। उसका हरएक शब्द का बडा महत्व होता है। उसने "कलिसिया" (church) शब्द का प्रयोग किया है। कुछ लोगों का व्यवहार सीधा कलीसिया से संबंधित है, और जब कलीसिया उनका न्याय करती है, तो इसका मतलब प्रभु ही उनका न्याय करता है। यही बात यहाँ पर स्पष्ट की गई है।

आपको इन दोनों बातो को यहाँ पर लाना होगा। यहाँ पर कर्तव्यदक्ष न होने के कारण किसी को अपने आत्मिक जीवन में अपराधी महसूस होगा। ठीक, कोई जाकर उसे समझाए, और वह न माने तो, एक या दो साक्षिदारों को लेकर समझाएँ, और फिर भी वह न माने तो उसे कलीसिया को सौंप दो।

"यदि वह उनकी भी न माने तो तू कलीसिया से कहना। यदी वह कलीसिया की भी बात न माने तो तू उसको अन्य जाति और महसूल लेनेवालों के समान मानना। मैं तुम से सच कहता हूँ: जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बंधेगा। जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा। मैं तुमसे सच कहता हूँ, यदि तुम मे से दो व्यक्ति पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर प्रार्थना में माँगोंगे, वह मेरे पिता की ओर से, जो स्वर्ग में है, उनको प्राप्त हो जाएगा। क्योंकि जहाँ दो या तीन व्यक्ति मेरे नाम से इकट्ठे होते है, वहाँ मै उनके बीच में उपस्थित होता हूँ।"

प्रभु कलसिया के प्रशासन में एक प्रशासकीय अधिकारी के रुप में प्रस्तुत होता है, जहाँ दो या तीन इकट्ठे होते है। मै इस कार्य के विषय में बताने नही जा रहा हूँ,

परन्तु मै इस बात को सिध्द करते हुए इस तत्व को इस्तमाल कर रहा हूँ कि मंउली के मध्य मसीह की उपस्थिती का विशेष महत्व होता है।

परमेश्वर के उद्देश्य के विरुद्ध कुछ घातक बाधाएँ

(SOME FATAL HINDRANCES TO GODS PURPOSE)

(अ) व्यक्तिवाद (INDIVIDUALS)

अब, मुझे यहाँ मध्यावकाश (Parenthesis) के लिए रुकने दीजिए। ऐसी कोई प्राणघातक त्रृटियाँ (Mistake) है जिसमे मसीही लोग गिरे हुए है, और उन गलतियों में से एक है मंडली में व्यक्ति की जगह। मैं कहता हूँ कि यह एक घातक (Fetal) गलती है। यह आत्मिक उन्नति के लिए, आत्मिक पूर्णता के लिए, आत्मिक शक्ति के लिए, आत्मिक ज्योति तथा आत्मिक जीवन के लिए जानलेवा (Fatal) है। ऐसे बहुतसे मसीही है जो केवल व्यक्तिगत तौर पर ही गौर करते है। व्यक्ति के लिए विचार करना सही है, परन्तु परमेश्वर व्यक्ति को सीर्फ कलीसिया को मन मे रखते हुए बचाता है। हम इन बात मे बिल्कुल साफ़ होना चाहिए कि यह समय (dispensation), जो कि प्रभु यीशु के स्वर्गारोहन तथा महिमा प्राप्ति (exaltation), और पवित्र आत्मा के दिए जाने से कलीसिया के उठाने समय तक, के समय को परमेश्वर ने सारे इतिहास के कार्यकाल में निदेशित किया है, ताकि उद्धार पाये हुए लोग अलग-अलग व्यक्तित्व के रुप में नही पर जो उद्धार पाते है वे सब एक देह में – कलीसिया (Church) में सम्मिलित होते है। परमेश्वर विश्वासियों को सीर्फ कलीसिया के रुप में

ही देखता है जो कि एक देह (body) है। अगर इस बात को हम ठीक रीति से नही समझेंगे तो हमे आत्मीक रुप से बड़ी हानि होगी।

मैं आशा रखता हूँ कि आप इस बात को समझ चूके है। यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात है जिसे हमे सही रीति से समझना अनिवार्य है। हम इस बात की टिप्पणी कर सकते है कि ये दोनों बातें सामान्यत: एकसाथ जाती है। यह व्यक्ति का उद्धार है जो बहुतों को व्याप्त करता है, और जब वे उन व्यक्ति यों का उद्धार करते है, प्रभु के पास लाते है, तो उनकी फिर कुछ भी चिन्ता न करते हुए और जगह में जाकर दूसरे व्यक्तियों को उद्धार के मार्ग में लाते है। ये दोनो बाते साथ-साथ चलती है, व्यक्तित्ववाद और उद्धार। उसके बाद और कुछ नही होता। यही बात हम परमेश्वर की कलीसिया के इतिहास मे एक घातक रुप से जानते है, और आज हम इसे मंडली में परमेश्वर की सेवा करते हुए सबसे बड़ी कठिनाई के रुप में जानते (महसूस करते) है। मेरा मतलब है कि आप कही भी जाएँ, आप इस बात का अनुभव कर सकते है। आज उनके पास सीर्फ उनका व्यक्तिगत उद्धार, यानी उनके पापों की क्षमा का अनुभव, परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप, सुसमाचार की रुढ़ी-परंपरा (rudiments of the Gospel), और वे इसी के साथ दस, बीस, तीस, चालीय, पचार वर्ष तक जिवन बिताते है; और आज जब आप उनसे मिलते है तो वे इन दोनों में से एक के विरुद्ध जरुर उठते है।

एक ओर देखा जाए तो उद्धार के मूल तत्व को पाने की सम्पूर्ण असमर्थता; उनके पास ऐसी शक्ति नही है। सभी आत्मिक इंद्रिए जिन्हे बढना चाहिए था, वे बढ़

नही पाए, और वे हमेशा सीर्फ एक शिशु (Infant) की तरह रही है। मै सीर्फ इस बात का जिक्र करते हुए एक वचन कहता हूँ। आप जानते है पौलूस को भी कुरिन्थ की कलीसिया से यही बात कहनी पड़ी थी – "हे भाइयों, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका, जैसे आत्मिक लोगों से की जाती है। परन्तु जैसे सांसारिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में शिशु है।" (१ कुरिन्थ ३:१) इब्रानियों को भी यही कहा: "अब समय के मुताबिक आपको स्वयं शिक्षक बनना चाहिए था, परन्तु आपको अभी भी परमेश्वर के वचन की प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता है; और आप बिल्कुल दूध पीनेवाले बालक की नाई बन गए है ... ठोस भोजन (Solid food) प्रौढ मनुष्य के लिए है जो भले – बूरे के बीच का फर्क जानते है।"

दूसरी तरफ, जरुर, हम ऐसों को पाते है जो हमारी तरफ मुडकर कहते है, काश! हम इन बातों को पहलेसे जानते! काश, किसिने हमे पहले बताया होता! क्यों नही? यह सब हमेशा यही था। इस घातक व्यक्तित्ववाद के कारण यह हुआ है। परमेश्वर का सभी बड़ा काम जो कलीसिया से संबंध रखता है, इसी से संबंधीत है ता कि लोग उद्धार पाए। यह उन सभी के लिए घातक है जिन्हे परमेश्वरने पहलेसे ठहराया है। काश! मै पहले से जानता! ठीक है, फिर हमे सोचना होगा, जब कि एक व्यक्ति बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है, जिसे दूसरे व्यक्ति के प्रकाशन में न्याय पाना है, हम इस बात को उल्लेखित करना चाहिए, कि यदि एक व्यक्ति को समूह (Corporate) के स्थान में डाला जाता है तो इसका नतिजा बड़ा दु:खदायी होता है। यह एक घातक भूल (गलती) है।

(ब) स्वीकृत "कलीसिया प्रणाली"

(THE PREVAILING "CHURCH-SYSTEM")

दूसरी घातक चीज है जो वर्तमान "कलीसिया-प्रणाली" द्वारा प्रतिनिधित्व को गई है। आप की जो प्रणाली है वह जो सबसे बडी तौर पर मंडलियों तथा प्रचार की जगहों पाई जाती है; लोग सुनने के लिए आते है और फिर अपने स्थान में चले जाते है। अब, जब कि इस प्रणाली में अलग-अलग प्रकार तथा प्रभाव है, वह ज्यादातर स्थान (Position) है, और यह मसीह का कलीसियाई उच्चारण (Corporate expression) नही है। यह एक मंडली है। यह देह नही है। यह देह स्थानिक तौर पर कार्यरत नही है। यह उससे कुछ कम है। इसका परिणाम क्या है? वही जो दूसरी तरफ है, यानी बहुत ही कम आत्मिक वृद्धि।

मैं अब बहुत ही स्पष्टवादी (Frank) हूँ। मैं अपने हृदय को खाली करना चाहता हूँ क्यों कि मुझे लगे रहा है कि हम कुछ नतिजे पर आ पहुँचे क्यों कि प्रभु की इच्छा यही है। और इसके लिए मुझे बुद्धिवाद करना होगा। इसका आत्मिक परिणाम व्यक्तिवाद के सदृश्य ही होगा, और आज हम इसी कलीसिया-प्रणाली के लोग सभी जगहों पर पाते है, जिन्हे अब तक उनके उन में से बहुतसे इसके प्रति उदासिन है। यह बात, यही चर्च जाना, यही मंडली, इसी समयपत्रक (rota) का पालन करना यही आराधना की जगह प्रभु यीशु मसीह के देह का एक स्थानिक उच्चारण बन चुकी है। आज, कलीसिया को इसके विषय में सोचा जाए, तो कलीसिया भयंकर खतरे में है। यह आत्मिक रौशन (spiritual infancy) में तथा आत्मिक रुप से अंधकार में है।

इसलिए शेकड़ों सालों से इनके मध्य जन्मे हुए लोग आत्मिक रीति से बढ़ नही पाते। मैं जानता हूँ कि कुछ लोग इस परिस्थिति के बावजूद भी आत्मिकता में बढ़ते है, परन्तु मैं इसी के विषय बता रहा हूँ। यह परमेश्वर के उद्धेश के लिए खतरनाक बन गया है।

(क) "सुसमाचारीय सेवा" को सबकुछ बनाना

(THE MAKING OF "THE GOSPEL MISSION" TO BE EVERYTHING)

अब, तीसरी बात यह है कि जो "सुसमाचार की सेवा" से निगडित है, जो स्थानिक कलीसिया जो आत्मिक रुप से बनाई गई है, जगह लेती है। अब, मै गॉस्पल मिशन्स को नीचा नही देखता, और यह नही कहता की गॉस्पल मिशन्स नही होने चाहिए। मै अब उनके विषय में नही कह रहा हूँ जो समय-समय पर सुसमाचार सभाएँ लेते है, परन्तु उनके विषय जिन्होंने अपने आप को इस कार्य करने का स्थायी संगठन होने का दावा किया है। फिर यदि आप सुसमाचार की सेवा को सबकुछ मान लेते हो, और आप अविश्वासियों को सुसमाचार सुनाने में ही अपने आप को संतुष्ट समझते हो, और इस कार्य को सीमित करते हो, तो आप अपने स्वयं के आत्मिक जीवन को बौना बना देते हो। यह बात बहुतसी बार अनेकों के लिए आत्मिक तौर पर सृजे गए मसीह के उच्चारण एक पर्याय (substitute) बन चुकी है।

मसीह इसी से बढ़कर है, और हम देखते है कि जो लोग सुसमाचार कार्य कर रहे है वे भयंकर रुप से अपरिपक्क (immature), आत्मिक रुप से अनजान तथा

अंधकार में है। जी हाँ, मसीह में अपने उद्धारकर्ता के साथ आनंद मनाते हुए – मै इस पर सवाल नही करता – व्यक्तिगत उद्धार में घमण्ड करना; परन्तु बुलाहट कहाँ है, मसीह की परिपूर्णता कहाँ है, परमेश्वरला शाश्वत उद्देश्य कहाँ है? नही है। वह सीर्फ एक कदम आगे जाता है, और एक कदम परमेश्वर के अन्त को पहुँचने तक काफ़ी नही है। ये बाते होनी चाहिए पर इन्हे मुख्य बातों के लिए सहाय्यक (auxiliary) के रुप में होना चाहिए। अगर ऐसा न हो तो वे परमेश्वर के लोगों के जीवन तथा उनके आध्यात्मिक वृद्धि के लिए बाधात्मक हो सकती है।

आप देखिए, फर्क यह है। एक फूलों का गुच्छा लिजिए, गुलाब या किसी अन्य फूलों का। वे एक ही प्रकार (जाति) के हो, और उन्ही के अन्दर एक ही प्रकार का जीवन हो। यह एक समाज है, देह नही। एक गुलदस्ता फूल तथा उसके जड़ और पौधे के बीच का अन्तर बहुत बड़ा है। मुझे एक गुलाब, उसका जड़ और पौधा दीजिए, और मेरे पास क्या होगा या मैं उसका क्या करुँगा? ठीक, मै यह फर्क साबीत करुँगा की गुलदस्ता फूलों में जीवन है जो कुछ समय तक रहेगा और फिर नाश हो जाएगा। उसके बाद वह फिर कभी न जीएगा। मुझे एक पौधा दीजिए, और वह बढ़ेगा। हो सकता है कुछ समय तक वह मृत्यु-कासा अनुभव करे, पर अगले वर्ष वह फिर उठेगा और उसके साथ और भी बहुतसे पौधे उगेंगे; और फिर मृत्यु तथा पुनरुत्थान का और एक अनुभव, और फिर बहुतसे पौधे उसी एक पौधे के द्वारा निर्माण होंगे। यह है शरीर (देह)। यह एक गुलदस्ता नही बल्कि एक जीवित प्राणी (organism) है। और यही फर्क समाज (Congregation) तथा कलीसिया (Church) के बीच पाया जाता है।

पर हाँ, प्रभु के लोग बहुधा गुलदस्ता (bunch) की नाई पाए जाते है। यह सही है कि वे एक ही जाति (species) के होते है - यानी वे मसीही होते है, परमेश्वर के लोग होते है; उनके अन्दर एक ही प्रकार का जीवन होता है; परन्तु वे एक ही जगह में परमेश्र की वृद्धी से नही बढ़ते, जिस प्रकार वह पौधा मृत्यु तथा पुनरुत्थान के अनुभव में से पार होकर जीवन में प्रवेश करता है। अभी मैने वर्तमान कार्यप्रणाली तथा सुसमाचारीय सेवकाई विषयमें जो भी कहा है वह यह है कि यह कार्य बिल्कुल गुलछतस फूल (bunch of flowers) जैसा चल रहा है। परमेश्वर चाहता है कि हम उस जड़ तथा पौधे की नाई फूलें-फलें। पौधा उगता है और वृद्धि पाता है, पर गुलदस्ता केवल कुछ समय तक ही जीवन अनुभव करता है और नष्ट हो जाता है।

अब शैतान ऐसी सभाओं के खिलाफ नही, परन्तु वह परिवारों, छोटी-छोटी मंडलियों (local expression of the body of christ) के खिलाफ है। इस प्रकार हम कलीसिया के इतिहास में इस महान सच्चाई को देखते है कि शैतान किस प्रकार परमेश्वर के लोगों को विभाजित करता है और कलीसिया के 'प्रात्यक्षिक कार्य' (practical functioning) में बाधा डालता है।

कलीसिया का उद्देश्य तथा कार्य

(The purpose and function of the church)

इसलिए हमे यह जानना अनिवार्य होगा कि कलीसिया (स्थानिक) का, परमेश्वर के आत्मिक घर का उद्देश्य तथा कार्य क्या है। और इसे हम उस परछाई

(type) में देखते है जो हमें हकीकत (antitype) की ओर ले चलती है। चिन्ह के रुप मे जो पुराना मंदिर था, वही कलीसिया आत्मिक सच्चाई है, और चर्च जो आत्मिक सच्चाई है, उसी प्रकार स्थानिक कलिसिया होनी चाहिए। इस बात को सम्पूर्ण नए नियम की कलीसियाओं के द्वारा प्रमाणित किया गया है। इसी कारण पौलुस कुरिन्थ की कलीसिया को इस प्रकार कहता है, "आप मसीह की देह है।" पवित्र बाइबल हमे सीखती है कि हर एक छोटी स्थानिक कलीसिया मसीह के सम्पूर्ण देह का प्रतिनिधित्व करती है; परमेश्वर की दृष्टि में जो सम्पूर्ण देह है वह यहाँ, वहाँ और हरएक जगह में दिखना चाहिए।

अ) परमेश्वर तथा मनुष्य का मिलनस्थान

(The meeting place between god and man)

अब हम मंदिर से एक तुलनात्मक रीतिसे जारी रखेंगे। मंदिर क्या था? सबसे पहले जगह में मंदिर परमेश्वर तथा मनुष्य के मिलने (भेंट करने) वाला स्थान था। यही मंदिर का, परमेश्वर के घर का प्रथम कार्य है। यह घर पुराने मंदिर से कई गुना बढ़कर मसीह स्वयं था। वह एक ही व्यक्ति में मनुष्य तथा परमेश्वर के पुत्र का ढाँचा था। मत्ति १६ अध्याय में इसका बड़ा महत्व हम देखते है। वह हकिकम सामने (ज्योति मे) आ जाती है। मसीह, अपने चेलों से सवाल करते हुए एक शब्द का प्रयोग करते है, और, स्वर्गीय प्रतिसाद प्राप्त करते हुए दुसरे शब्द का इस्तमाल करते है।

“लोग मेरे विषय में क्या कहते है? पतरस ने कहा, “आप जीवते परमेश्वर के पुत्र मसीह है।” “मनुय का पुत्र,” “परमेश्वर का पुत्र”: और यह ईश्वरीय प्रकाशन के द्वारा है। यहाँ पर मनुष्य और परमेश्वर एक ही व्यक्तित्व में मिलते है, एक ही स्थान मे मिलते है। अपने विषय में प्रभु यीशु ने कहा था, आप इस मंदिर को ढा दीजिए, और तीन दिन के अन्दर मैं वापस इसका निर्माण करुँगा। सांसारिक यहुदियों ने सोचा वह उस भौतीक (material) मंदिर के विषय कह रहा था, पर वह अपने स्वयं के विषय कर रहा था। यह मंदिर - यरुशलेम के मंदिर से व्यक्तिगत रुप से मसीह यीशु तक, मनुष्य और परमेश्वर का मिलनस्थान (Meeting Place) है — वही मसीह है।

अब मसीह सामूहिक रुप से कलीसिया में दिखाई देता है जो नया नियम के प्रकाशन द्वारा प्रमाणित है, और जहाँ मसीह कार्यरत है वहाँ परमेश्वर स्वयं कार्यरत है, तथा उसके कार्य में हमें परमेश्वर की भेट होनी चाहिए। ऐसी गवाही जिनके पास है उन्हे परमेश्र जरुर मिलेगा। और यही उत्तर है। यही काफी है। क्या आपको कलीसियामें प्रभु मिले है? क्या उसने वहाँ अपनी भेंट की है? हाँ, यही महत्वपूर्ण बात है। क्या आप कलीसिया के लोगों के मध्य परमेश्वर से भेंट कर पाते है? अगर ऐसा है, तो हम बड़े भाग्यशाली है।

क्या आपने ए जे गॉर्डन द्वारा लिखित “मसीह कलीसिया में कैसा आया” पुस्तिका पढ़ी है? वह पढ़ने से शायद आपको आत्मिक लाभ होगा। परंतु मुझे बहुत ही जल्द आपको इस किताब सारांश बताना है। डॉ.गॉर्डन एक शनिवार के दिन पवित्र शास्त्र अध्ययन कर रहे थे, कुछ समय बाद उन्हे नींद आ गई, और उन्होने एक सपना

देखा और स्वयं को रविवार के दिन पुलपीट में पाया। उनका चर्च बहुत ही सुंदर था। चर्च लोगों से खचाखच भरा हुआ था, और वे पुलपीट में खडे होकर आराधना का आरंभ करने पर थे, जब कि एक अजनबी खुले हुए दरवाजे से अंदर घुसा और वह बैठने के लिए जगह ढूँढ रहा था। जैसे ही वह पास आया किसी ने उन्हे खाली कुसी दिखाई और उन्हे वहाँ पर बिढाया।

डॉ.गॉर्डन आगे बताते है कि किस प्रकार उन्होने उस सभा को चलाया, और किस प्रकार उनकी आँखे बार-बार उस अजनबी व्यक्ति की ओर फिर जाती थी। अगर वे किसी अन्य जगह देखते तो भी वे पाते थे कि उनकी आँखे उसी अजनबी पर टीकी हुई है। डॉ.गॉर्डन ने कहा, "इस सभा के समाप्त होने के बाद मैं उस अजनबी को जरुर मिलूँगा।" सभा के खत्म होते ही डॉ.गॉर्डन दरवाजे पर पहुँचे और उस अजनबी के बाहर आने का इंतजार करने लगे, परंतु वह अजनबी उनके पहुँचने से पहले ही निकल चुका था। बडी निराशा के साथ उन्होने चौकीदार से पूछा, क्या आप उस अजनबी को जानते है जिसे तुमने आज सुबह अंदर छोड़ा? उसने कहा, क्या आप नही जानते वह कौन था? वह नासरेथकर यीशु था। ओह, डॉ.गॉर्डने कहा, आपने उसे क्यों नही रोका? मुझे उससे बात करनी थी। ओह, उस आदमी नें कहा, चिन्ता न करे; आज वह यहाँ आया था, वह वापस आएगा। (ठीक, परिणामत: डॉ.गॉर्डन द्वारा उस दोहरे प्रतिसाद (double reply) के कारण दो किताबे लिखी गई; एक "पवित्र आत्मा का कार्य", तथा दूसरी "प्रभू का आगमन" के ऊपर)

डॉ.गॉर्डन कहते है कि वे इसी विचार के साथ गए – नासरेथकर यीशु आज मेरी कलीसिया में आए थे। मैं क्या कर रहा था? मैं उसके विषय में बता रहा था। मैने उसके विषय में कैसा कहा? क्या मैने उस के विषय कुछ गलत तो नही कहा? क्या मैने उसकी उपस्थिती का खयाल न रखते हुए उसके बारे में कहा? उसने मेरे शिष्टाचार, विषय वस्तु तथा मेरे सभा चलाने के चरित्र (conduct) के बारे में क्या सोचा होगा? उसने हमारे गायक वृंद (choir) तथा गितों के विषय में क्या सोचा होगा? यह सब कुछ उसी के विषय में क्या सोचा होगा? यह सब कुछ उसी के विषय में था पर क्या यह सब कुछ उसकी महिमा के लिए था? मैं हैरान हूँ, उसने हमारी शानदार इमारत (Gothic Building) के बारे में क्या सोचा होगा?

यह रही संक्षिप्त कहानी। परन्तु मेरे पास जो आ पहुँचा वह यह है: क्या हम भी इसी प्रकार विचार रखते है? अगर हम सोचते है कि कलीसिया कुछ बातों में भिन्न है, और मसीह भी भिन्न है तो वह परमेश्वर की कलीसिया नही हो सकती। कलीसिया ही मसीह है, और यदि मसीह को मंडली में प्रथमस्थान दिया जाता है तो वह परमेश्वर को दिया जाता है। यह सीर्फ मसीह की धरती पर ही संभव है कि मनुष्य और परमेश्वर की भेंट हो जाए। आप और मै जानता हूँ कि मनुष्य स्वयं परमेश्वर से भेट नही कर सकता। हम स्वयं मनुष्यों को परमेश्वर से मिला नही सकते। कोई भी याजकीय सेवा (priesthood) हमे परमेश्वर से मिला नही सकती। परंतु यदि प्रभु यीशु हमारे अंदर है, और हम लोगों को यीशु के पास ला सकते है, तो हमने उन्हे परमेश्वर के पास लाया है। परन्तु यदि वह (Jesus) हमारे अंदर न हो, तो हम न्याय के दिन तक उसके

बारे में बातचित करने से भी मनुष्य और परमेश्वर का मिलन (भेंट) न होगा। कलीसिया की यही खासीयत है। मैं विश्वास करता हूँ कि जिन लोगों में मसीह वास करता है, (Christ – indwelt men and women) वे जब पवित्र आत्मा में एकत्रित होते है, उनकी शक्ति निश्चय ही उन लोगों से कई गुणा बढ़कर होगी जो दूर होकर छोटे – छोटे दलों में रहते है। परमेश्वर और मनुष्य का मिलने का स्थान एक दैवी वाहन (Divine vehicle) है जो जीवन प्रदान करता है।

आप यहेजकेल के मंदिर को देखिए। परमेश्वर के विचार से भवन का निर्माण हो चुका है, बाहर निसर्गरम्य वातावरण है, नदियाँ बहती हुए दिखाई देती है। और जहाँ – जहाँ नदियाँ जाती है, वहाँ – वहाँ जीवन पाया जाता है। नदियों के दोनों किनारे पेड-पौधे दिखाई देते है जब तक कि वह नदी स्वयं को मृत सागर में खाली न करे; और वह मृत्यु भी उस जीवन ने निगल लिया है जो पवित्रस्थान से आता है। यह मसीह का सामूहीक (Corporate) उच्चारण है, यह कलीसिया है जिससे परमेश्वर स्वयं अपना प्रशासन (ministration) देखता है, और यही कारण है कि शत्रु उसे तोडना चाहता है। यह हमारे पूर्व अध्ययन का विषय था। प्रभु के लोगों को तितर-बितर करना, उनमे वैरभाव उत्पन्न करना, उसकी एकता का भंग करना यह शत्रु (satan) की रननीति है। हम हमारे अनुभव से जानते है कि अगर वह शत्रु हम दोनों के बीच भी आता है तो हमारा जीवन गिरफ्त में आ जाता है और तब तक जिवन की नही हमारे अंदर बहती नही होगी जब तक हम उस टूटे हुए पुल का पुन: निर्माण न करे यानी उस टूटे हुए रिश्ते को न सुधारे। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। शत्रु ऐसी ही चाल चलता है। वह

जीवन के खिलाफ है, क्यों कि कलीसिया परमेश्वर के जीवन का वाहन (Vehicel) है।

ब) परमेश्वर के विचार का साकार रुप तथा अभिव्यक्ति

(THE EMBODIMENT AND EXPRESSION OF GOD'S THOUGHTS)

फिर एक बार, मंदिर परमेश्वर के विचार का साकार रुप तथा अभिव्यक्ति थी। हर एक पत्थर, जो कुछ इस्तामला किया गया था वह सब कुछ, सभी आकार, सभी नाप, सभी वस्तुएँ परमेश्वर के विचार का प्रतिनिधित्व करती है। परमेश्वर की भावनाएँ (mind) उसी के द्वारा प्रकाशित हुई। वह एक आत्मिक चरित्र का चिन्ह (Symbol) था।

पतरस इस शब्द का प्रयोग करते हुए हमे बताता है – "आत्मिक घर" (१ पतरस २:५) यह घरका उद्देश्य "उसके महान कार्य को प्रकट करना है जिसने तुम्हे अंधेरे मे से अपनी अगम्य ज्योति में बुलाया है।" मंदीर परमेश्वर की महानता को प्रकट करने हेतु बनाया गया था। उसी प्रकार परमेश्वर के लोग भी जहाँ कही हो, परमेश्वर के विचारों को तथा उसकी सच्चाई को प्रकट करे। सीर्फ भाषण तथा व्याख्यान नही, बल्कि पवित्र आत्मा के प्रकटीकरण की सेवकाई के माध्यम से खुले स्वर्ग का प्रकाशन होना चाहिए। यह प्रभु एवं उसके लोगों के लिए मुल्यवान है। पर उसके लिये जीवित मंडली होनी चाहिए और हम उसे कैसे जानते है! कभी-कभी हम

सब कुछ ना कुछ कारणवश मंडली में जीवित नही पाए जाते। हो सकता है हमे थकान महसूस होती है, या हम चिंता करते है; और इसकी वजह से यद्यपि परमेश्वर ने हमारे लिए उत्तम भोजन तैयार किया है, वह हमे कुछ प्रकट करना चाहता है पर इस रुकावट के कारण हम उसको ग्रहण नही कर पाते। पर आइए, हम आत्मा में एक हो जाएँगे, प्रभू में जीवित होगे, तो प्रभु के विचार हम पर प्रकट होंगे और हम दूसरों के लिये भी आशिष का कारण ठहरेंगे। प्रभु की मंडली की स्थिति बड़े पैमाने पर हमारे समय को निर्धारित करती है। यह हमारे ऊपर निर्भारित है कि हम प्रभु से कितना प्राप्त करें। प्रभु के मंडली का कार्य प्रभु के मनोविचारों का साकार रुप तथा अभिव्यक्ति को प्रकट कराना है। इसी उद्देश्य के साथ वह आज अस्तित्व में है।

क) स्वर्गीय शासन एवं अधिकार की सीमा

(THE SPHERE OF DIVING GOVERNMENT AND AUTHORITY)

फिर मंदीर परमेश्वर के शासन (Government) का स्थान था। वहाँ पर निर्णय लिये जाते थे, न्याय किया जाता था: और पतरस कहता है, "न्याय परमेश्वर के घराने से शुरु होना चाहिए"; और वह मत्ति १८ फिर हमे बताता है। आप उसे कलीसिया से कहे, कलीसिया उसका न्याय करे। यह स्वर्गीय शासन का स्थान है। मै यहाँ पर ही रुक नही सकता, पर आप देखिए कि सामूहिक मंडली, जो मसीह के द्वारा स्थापित है वह एक सच्ची है तथा व्यावहारिक परिणामों को जो परमेश्वर से संबंधित है प्रकट करती है: और फिर यह कितना आवश्यक है कि जीवन के लिये, ज्योति के लिये,

और सामर्थ के लिए हम ऐसे स्थानिक अभिव्यक्ति (Local expression) जो परमेश्वर की कलीसिया है, हम हिस्सा बने।

मै मेरी हृदय की गहराई से तुम्हे बताना चाहता हूँ कि तुम्हे जीवित रहना है तो इस कलीसिया का हिस्सा बनना अनिवार्य है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। कलीसिया को इसी अभिप्राय से रखा गया है, और हरएक बात जब परमेश्वर की योजना के तहत कार्य करती है तो परमेश्वर का कार्य उसी में प्रकट होता है। इसलिये, यदि हमे इसी कार्य के लिये बुलाहट है तो हमे ऐसी कलीसिया बनना चाहिए ताकि हम हमारे महान उद्देश्य को जाने और पूरा करे। मै चहता हूँ कि आप इस बात पर गहराई से सोचे। क्यों कि यह कोई मामूली बात नही है, यह परमेश्वर के लोगों की 'स्थानीय सहभागिता' (Local Fellowship) है।

मै जानता हूँ कि आप में से कुछ लोगों को इससे समस्या खड़ी हो सकती है। "हमारे पडोस में ऐसा कुछ नही है और मै नही जानता यह कैसे संभव हो सकता है।" परन्तु इसके लिये उत्तर है, वह उत्तर बहुत ही सरल है, हालांकि वह आपको परख सकता है। यदि यह परमेश्वर का विचार है, तो आप इसे प्रभु के पास ही ले चले। "प्रभु, अगर यह आपकी इच्छा है, तो आप मुझे उसके (Church) पास ले चले, या उसे (Church) मेरे पास ले आए।" परमेश्वर को पकड़े रहे।

भाई नी (Brother Nee), जब यहाँ पर थे, उन्होने इस बात का जिक्र किया कि किस प्रकार प्रभु ने उनके जीवन में कार्य किया और धीरे-धीरे परमेश्वर ने इस अभिव्यक्ति (expression) को उनके जीवन में हकीकत (reality) बना दिया। यही

हमारी सेवकाई (ministry) है कि हम प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के अभिप्राय को पूरा करे। अगर हम इस बात की अपेक्षा करते है, तो इसका मतलब यह बात हमारे हृदय के गहराई तक नही पहुँची, हमारे पास कुछ दर्शन (Vision) नही है। यह सीर्फ उभर आनेवाली समस्या को सुलझाने हेतु कहा गया है। हम कलीसिया के द्वारा प्रयोग किये जाने चाहिए तथा कलीसिया हमारे लिए बड़ा महत्व रखे। कोई भी समस्या से बढ़कर कलीसिया को जब हम महत्व देगें, तो हमे जरुर राहत मिलेगी।

पाठ – पाँच

परमेश्वर के भवन का अधिकृत कानून

(THE GOVERNING LOW OF THE HOUSE OF GOD)

शास्त्रपाठ : येहेज्केल ४७:१-१२; १ पतरस २:४-५

हम अभी परमेश्वर के आत्मिक भवन संबंधी बातों को बढाना नही चाहते, पर उन्हे अन्य समय के लिये छोड़ देते है। हम उन्ही बातों को जिन्हे हमे अध्ययन किया है उन्हे परमेश्वर के अधिकृत कानून के पास लाकर उनका जीवन तथा आत्मिकता का नापतौल करेंगे। "जीवित", "आत्मिक", ये दोनो बडे शब्द इस अनुच्छेद में है – "जीवित पत्थर", "जीवित पत्थर", (plural) "आत्मिक भवन", "आत्मिक बलिदान।"

नही तो कोई उस दूसरे शब्द "आत्मिकता" के विषय में कठिनाई पड़ सकता है, इसलिये हम कहेगे कि "आत्मिकता" का अर्थ है 'पवित्र आत्मा द्वारा किया गया शासन', परन्तु इसके लिये हमे आत्मा के साथ एकरुप होकर काम करना पडता है, उसके सभी कामों में, चीजों को देखने में, निर्णय लेने में ताकि उसके साथ एक हो जाने से, हम पाकृतिक या स्वाभाविक न्याय से, स्वाभाविक अनुमान से स्वाभाविक विचार से कभी प्रभावित न होंगे, पर हमारे सभी न्याय पवित्र आत्मा से प्रेरित होंगे। यह संक्षिप्त रुप से आत्मिकता का अर्थ है।

ठीक, अब हम परमेश्र के आत्मिक भवन विषयक चार महत्वपूर्ण पहलूओं पर विचार करेंगे। यह आत्मिक भवन हम स्वयम् है यदि हम प्रभु के है और उसी के जीवन प्रकाश में तथा आत्मिकता में उसे देखेंगे।

यीशु मसीह का उत्कर्ष

(THE EXALTATION OF THE LORD JESUS)

सबसे पहले हमने जिस बात पर मनन किया वह यह था कि परमेश्वर के आत्मिक भवन का उद्देश्य प्रभु यीशु मसीह को पिता के सिंहासन पर बैठा हुआ देखकर उसके नाम को ऊँचा करना है। कलीसिया इसी उद्देश्य के साथ अपना अस्तित्व रखती है, और यदि हम उसके आत्मिक भवन है तो हमारे अस्तित्व का भी यही अभिप्राय है। परन्तु यह सीर्फ कोई सत्य या सिद्धान्त नही जिसका हम प्रचार-प्रसार करे। यह सीर्फ कलीसिया के विश्वास वन (Church Creed) का एक अंग ानही है – "यीशु मसीह मृतकों में से जी उठकर स्वर्गिय पिता के दाहिने हाथ विराजमान है।" हमारा सीर्फ यह एक ही विशस नही है। इसके द्वारा हमारी आत्मिकता बनती है और इसकी अभिव्यक्ति हमारे जीवन के द्वारा होती है। यीशु मसीह का उत्कर्ष सभी चीजों के पूर्व तथा सभी चीजों के ऊपर है। यह तभी हुआ जब स्वर्गीय पिता ने उसे अपनी दाहिनी ओर बैठाया, उसे प्रभु और मसीह ठहराया, सभी अधिकार उसे प्रदान किए; यह तभी हुआ जब पवित्र आत्मा उसकी उपस्थिति से निकला और जो स्वर्ग मे

था उसे कलीसिया में आत्मिक सच्चाई के रुप में प्रस्तुत किया, और उसी पराक्रमी शक्ति को उसके कार्य के द्वारा प्रकट किया। हमे मसीह के उत्कर्ष की धरती पर ही आत्मिक नींव डालनी चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि हमारे अंदर ऐसा कुछ होना चाहिए जिससे हम मसीह के साथ एक होकर आत्मिक एकता को महसूस करे, उसकी प्रभुता तथा सर्वोच्चता को जाने।

हमे हकीकत में ऐसा होना चाहिए, और हमने उसको दर्शाया है, प्रथम शताब्दि की कलीसिया ने संसार पर प्रभाव डाला था। यह सीर्फ कोई सिद्धान्त या शिक्षा का नही बल्कि यह प्रभाव इस कारण था कि प्रभु यीशु का उत्कर्ष हुआ है। इसको हम वर्तमान संसार की स्थिति में और भी अधिक स्पष्टता से देखते है। यहाँ पर एक आत्मिक क्रम है जो सभी चीजों को काबू में रखता है। पीछले कुछ महिनों से कुछ लोंग शैतानी चाल कहते आए है। मसीह यीशु को उत्कर्ष को पहला पंजिकरण यहाँ से आरंभ होता है। मनुष्यों को गिरफ्त करने, चीजों को गिरफ्त करने, हेतु हमे पीछे रहकर कुछ श्रेष्ठ सच्चाई को उन शक्तियों के खिलाफ पंजीकृत करना चाहिए।

यही आत्मिकता है। प्रेरित पौलुस इसके विषय बहुत कुछ बोल चुके है, और हमे उसकी भाषा है जिसमे वह इस सच्चाई की अभिव्यक्ति करता है। उदाहरणार्थ, “हमारी लढ़ाई के हथियार शारीरिक नही है। फिर भी गढ़ों को ढ़ा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा हम सामर्थी है।” (२ कुरिन्थ १०:४) उसने दरअसल इस शब्द का प्रयोग नही किया, परंतु उसका अभिप्राय यही था कि हमारे लड़ाई के हथियार ‘आत्मिक’ है। यहाँ पर कुरिन्थ के लोग स्वाभाविक ज्ञान, सांसारिक ज्ञान तथा सामर्थ

की खोज में थे, ताकि उन्हे स्थान, प्रभाव और पद मिले। वे दैहिक विचारधारा के लोग थे तथा सांसारिक तौर पर उच्चकोटी तक पहुँचना चाहते थे। इसी कारण पौलुस को इसी संसार के हथियार तथा ज्ञान के विषय बड़ा भाषण (Discourse) देना पड़ा, और उसने कहा कि इस संसार को जीतने के लिए हमे सांसारिक हथियार से बढ़कर कुछ चाहिए। देहिकता के ऊपर जय पाने हेतु हमारे पास दैहिक हथियार से बढ़कर कुछ चाहिए। क्यों कि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नही है, परंतु परमेश्वर के द्वारा सामर्थी है। दूसरे शब्दों में वे आत्मिक है। क्यों कि हमारा युद्ध माँस और लोहू से नही है जो सांसारिक ज्ञान तथा सामर्थ से संबंध रखता हो, "परंतु शासकों से, अधिकारियों से, इस संसार के अंधकार के अधिपतियों से, और उस 'दुष्ट' की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है।" (इफिसियों ६:१२)

इसलिये हमारे हथियार आत्मिक होना चाहिए। परमेश्वर का भवन (घर) आत्मिक है जो आत्मिक अभिप्राय से है, ताकि हम मसीह की महिमामय सामर्थ को इस भवन मे लोकर उस दुष्ट शक्ति के खिलाफ लड़ सके। फिर वही आत्मिक दुष्ट शक्ति के सभी हथियार गिरफ्त हो जाएँगे। प्रत्यक्ष रुप से उनके खिलाफ होकर कुछ फायदा न होगा। पहले हमे उसके पीछे जो कारण है उस पर प्रहार करना होगा, और फिर परमेश्वर की इच्छा के मुताबिक, उसका या तो नाश होगा या फिर उसको नियंत्रण मे लाया जाएगा। आइए हम अपने आप को इस सेवकाई के प्रति समर्पित करे। कलीसिया इसी उद्देश्य के लिए अबतक बनी हुई है।

परमेश्वर के भवन की सेवकाई

(THE MINISTRY OF THE HOUSE OF GOD)

दूसरी बात जो हम देख रहे थे वह यह है कि परमेश्वर के आत्मिक भवन का एक हिस्सा यह है कि यह भवन परमेश्वर की प्रसन्नता तथा महिमा के उद्देश्य से रचा गया है। कलीसिया की स्थापना इसलिए की गई है कि वह परमेश्वर की महिमा करे। कलीसिया के जीवन तथा आत्मिकता से ही पमरेश्वर प्रसन्न रहता है तथा आत्मिकता से ही परमेश्वर प्रसन्न रहता है तथा उसकी महिमा होती है। जहाँ कही सच्चा जीवन पाया जाता है वही परमेश्वर की महिमा होती है।

यह जरुर धर्मशास्त्र के मुताबिक है। स्मरण रखे कि यही बिन्दु है जिसे प्रभु यीशु ने लाजर को जिलाते समय क्रेन्दिय तथा सर्वोच्च स्थान में रखा था। "यह बीमारी मृत्यु के लिए नही, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिए है"; और जैसे – जैसे वह स्वयं तथा लाजर के बीच में होनेवाली सभी संदेह को पार करते हुए, शानत स्वर से परमेश्वर की ओर अपना हृदय लगाकर कहा, "हे पिता, तू अपनी महिमा प्रकट कर!" फिर उसने ऊँची आवाज मे पुकारा, "लाजर, बाहर निकल आ!" लाजर का पुनरुत्थान और मृत्यु की हार, प्रभु की महिमा के लिये था, और यह आत्मिक चीज थी, यह मसीह में जीवन का विजय था। अब, यह परमेश्वर की महिमा है। ऐसा कहा गया है कि इस घटना के बाद बहुतों ने उस पर विश्वास किया। मृत्यु को जीतने के द्वारा परमेश्वर की महिमा बड़े पैमाने पर प्रकट होती है।

ठीक, हम इस सत्य के बहुत से पुराने नियम के अन्य उदाहरणों को लेकर उन्हे आत्मिक रुप से नये नियम के साथ जोड़ सकते है, और देख सकते है कि मसीह के साथ ऐसा ही हुआ है। परमेश्वर की महिमा की पूर्णता उसके पुत्र के मृत्यु और पुनरुत्थान में दिखाई देती है और इसका प्रमाण मसीह के उत्कर्ष तथा मृत्यु को वश करने में पाया जाता है। हम भी इसी अभिप्राय से अस्तित्व रखते है। मेरा कहने का मतलब यह है कि जीवन को जानने के लिए हमे बार-बार मृत्यु को जानना होगा। पर हम मृत्यु के साथ खत्म नही होते; हमारा अन्त पुनरुत्थान तथा परमेश्वर की महिमा से होता है। हम इसे पकड़े रहे। यद्यपि मृत्यु बहुतेरे हो, उनका अन्त परमेश्वर की महिमा होगा। अन्ततः उसकी महिमा उसके पुत्र में, कलीसियामें, उसकी पूर्णता में होगी जब मृत्यु नष्ट किया जायेगा, सिर्फ मसीह में नही, बल्कि कलीसिया में और कलीसिया के द्वारा।

चुने हुओं के लिए भवन की सेवकाई

(THE MINISTRY OF THE HOUSE TO THE ELECT)

फिर इस आत्मिक घर (भवन) का तीसरा भाग परमेश्वर के चुने हुए लोगों के छुटकारे संबधी है। जिन्हे परमेश्वर ने अनादि काल से ठहराया है। यह यहाँ पर शैतानी उद्देश्यों के खिलाफ परमेश्वर की सेवा करने हेतु उपस्थित है, और इसकी परीक्षा इससे होगी कि हम परमेश्वर के लोगों के छुटकारे के लिए परमेश्वर की सेवकाई में कितने समर्पित है। यह रही परीक्षा। इसके विषय बोलना आसान है, पर यह बात हमारे

जीवन में खरी उतरनी चाहिए। परीक्षा इसमे नही कि हमने सही सिद्धान्त को अपनाया है या नही: परिक्षा इसमें है कि हम उसी के मुताबिक कार्य करते है या नही।

मेरे प्रिय मित्रो, आपके अस्तित्व के इस तत्व (law) का सामना करने हेतु मै आपको चुनौती देता हूँ। क्या आप परमेश्वर के लोगों की सेवकाई कर रहे है या यूँ ही समय बरबाद कर रहे हो, या उसके भी बदतर, मृत्यु की सेवकाई कर रहे है? आपकी उपस्थिति प्रभु के लोगों के लिए क्या मायने रखती है? क्या वह जीवन का अर्थ रखती है? यदि ऐसा है तो, परमेश्वर के घर का सही प्रतिनिधित्व हम करते है। अगर ऐसा नही है, तो यह नकारात्मक, विरोधात्मक तथा जीवन विरोधी है। ये सब बातें जीवन और आत्मिकता का विषय है।

अंत में जीवन तथा आत्मिकता ही मायने रखती है, और हमारे विषय मे सच होना चाहिए। हम परमेश्वर के लोगों के छुटकारे के लिए वाहन (vehicle) है। पौलुस स्वयं विश्वासियों की प्रार्थना की आशा करता है।

मसीह की अभिव्यक्ति

(AN EXPRESSION OF CHRIST)

फिर चौथी बात यह है कि सामूहिक रुप से कलीसिया का अस्तित्व वर्तमान अभिव्यक्ति नुसार जहाँ दो या तीन मसीह के नाम से इकठ्ठे होते है, मसीह भी उनके बीच उपस्थित होता है। मै अचम्भित हूँ कि आप मत्ति १८ में उस शब्द को सही रीति

से समझे है या नही? यहाँ पर एक ऐसा व्यक्ति है जो प्रभु का है, जो अपराधी है, या गलती के लिये जिम्मेदार है। "अगर तेरा भाई तेरे विरुद्ध पाप करे।" कुछ लेखकों द्वारा" तेरे विरुद्ध" इस शब्द को लोप कर दिया है। इसलिए ऐसा पढ़ा जाएगा, "अगर आपका भाई अपराध करे, जाओ, उसे अपनी गलती दिखा..... अगर वह आपकी सुनता है, तो तू ने तेरे भाई को पाया। परंतु यदि वह तेरी न सुने, तो तु तेरे साथ एक या दो और साक्षिदारों को लेकर उसे समझा। अगर वह उनकी भी न सुने, तो कलीसिया से कह दे: अगर वह कलीसिया की भी न माने, तो तू उसे अन्य जाति तथा महसूल लेनेवाले के समान मानना। परमेश्वर स्वयं इस बात का आदर करता है। वह उनके बीच उपस्थित है और वह स्वयं कार्यवाही कर रहा है। कलीसिया का निकाल (virdict) प्रभु का निकाल (फैंसला) है; कलीसिया का निर्णय प्रभु का निर्णय है जब कलीसिया उसके नाम मे इकठ्ठी होती है।

अब हम इसे छोड़कर एक तत्व को देखेंगे। जहाँ कही मसीह का प्रतिनिधित्व किया जाता है, वहाँ सामूहिक अभिव्यक्ति के रुप में कलीसिया का अस्तित्व होता है। कलीसिया दो से कम व्यक्तियों से नही बनती, क्यों कि कलीसिया एक देह है, और अब तक एक ईंट से कोई मंदिर नही बना है। कलीसिया हमेशा सामूहिक (Corporate) है।

देखिए, सामूहिक जीवन एक आत्मिक जीवन है। यह जीवन का विषय है। हमारी एकता, हमारी प्रभु के साथ सहभागिता जीवन के तत्व पर आधारित है। हम सब "जीवित पत्थर"(living stones) है। मैं फिर से कहता हूँ, परमेश्वर हमसे ईंटों

(bricks) सा नही बल्कि जीवीत पत्थर (living stones) सा व्यवहार करता है। इसका मतलब वह हमसे जिन्हे प्रभु यीशु के साथ सहजीवन है, व्यवहार करता है, जीवित पत्थर के साथ हमारी सहभागिता एक ही जीवन को दर्शाता है। यह आत्मिक रिश्ता (relationship) है जो सामूहिक जीवन द्वारा अभिव्यक्त होता है। यह जीवन सीर्फ मसीह के विषय की बातों का प्रचार नही करता। यह जीवन मसीह को हमारे अन्दर लाता है और मसीह उनके द्वारा कार्य करता है।

आप देखिए, रोमी कलीसिया (Roman Church) भी यह दावा (claim) कर सकती है, कि जहाँ कलीसिया है वही मसीह है। हाँ, सही है, पर उसने बड़ा फर्क है। यह सीर्फ एक दावा नही, पर एक हकीकत है, कि जहाँ ये आत्मिक और जीवित पत्थर है, प्रभु उनके बीच सच्चा रुप से मौजूद होता है और लोग उसे जानते है – जैसा कि प्रेरित ने कहा। कलीसिया इसी उद्देश्य से मौजूद है कि वह हर एक जगह में प्रभु को ले आए, यहाँ तक कि जहाँ दो या तीन उसका प्रतिनिधित्व करते है। परमेश्वर करे यह सब हमारे लिए सच्चा साबित हो। मैं जानता हूँ कि आपके हृदय इस बात को प्रतिसाद दे रहे है। जहाँ तक हम व्यक्तिगत रुप से जीवित पत्थर है, यह हमारे विषय सच साबित हो जाए; कि हम जीवन की सेवकाई कर रहे है, मसीह का प्रतिनिधित्व कर रहे है, परमेश्वर की महिमा कर रहे है और परमेश्वर के पुत्र को हमारे जीवनों में ऊँचा कर रहे है।

पाठ – छः

लेपालकपन की पाठशाला

(THE SCHOOL OF SONSHIP UNTO ADOPTION)

शास्त्रपाठ : रोमियों ८:१४, १७, १९, २१, २३, २९

गलतियों ४:५-७; इफिसियों १:५-६

इब्रानियों १:१-२, ३:६-८, १४-१५;

५:८-१४, १२:५-७, ९, ११

इस आत्मिक भवन के विषय हमारे अध्ययन को जारी रखत हुए अब हम लेपालकपन की पाठशाला के बारे में सोचेंगे।

"लेपालकपन" की दैवी संकल्पना

(THE DIVINE CONCEPTION OF "ADOPTION")

जब हम परमेश्वर की चीजों पर विचार करते है, तो हमे पता चलता है कि हमे हमारी मानवी कल्पनाएँ तथा विचारधारा को बदलना चाहिए। परमेश्र की लेपालकपन विषयक संकल्पना हमारी संकल्पना से बिल्कूल निराली है। हमारी संकल्पना यह है कि बाहर से अपने परिवार मे कुछ लाए, पर यह पमरेश्वर की लेपालकन विषय में यह कल्पना नही है। "लेपालकपन" (गोद लेना) इस शब्द का अर्थ "पुत्रों के स्थान पर

रखना" ऐसा होता है, और आपने पहचाना होगा, अगर आप बारकाई से इसका निरिक्षण किया हुआ है तो, कि धर्मशास्त्र के उन अनुच्छेदों के अन्त में लेपालकपन आता है। यह आनेवाली घटना है। हम, जिन्हे आत्मा का दान मिला है, आतुरता से लेपालकपन की प्रतिक्षा करते है। हमे परमेश्वरने गोद लेने हेतु पहलेसे ठहराया था। परमेश्वर के वचन के अनुसार हम इसी की प्रतिक्षा में है।

इस सिलसिले में रिव्हाइज्ड् वर्जन (RSV) विशेष महत्व रखता है। वहाँ पर इस फर्क को स्पष्ट किया गया है कि परमेश्वर की सन्तान होने के नाते, हम इसे हमारे जन्म की धरती पर पाते है। हत उस ईश्वरीय विचार से "लेपालकपन" शब्द की अर्थ से दरअसल परमेश्वर के पुत्र है। बालक होना एक पीढ़ी का सवाल है; "बालक" एक प्रजातीय (Generic) शब्द है, परंतु लेपालकपन (Senship) से अभिप्राय है पाना, दिया जाना, प्रदान करना। यह केवल जन्म लेने से बढ़कर है।

इस विषय बायबलीय प्रकाशन

(THE SCRIPTURAL UNFOLDING OF THE SUBJECT)

यह शब्द, जैसे कि आप जानते है, धर्मशास्त्र में भिन्न – भिन्न रुप में प्रयोग किया गया है। उदाहरण की तौर पर रोमियों, गलातियों में हम लेपालकपन के विषय में कुछ प्रकाशन पाते है। ऐसा देखा जाता है कि हमारे आत्मा पाने का सीधा संबंध परमेश्वर के साथ हमारा जो संबंध है उससे जुड़ा हुआ है। हमने आत्मा पाई है, और

आत्मा पाने के कारण ही हम पुत्र कहलाते है: परन्तु रोमियों तथा गलातियों की पत्रियों में हम इस शब्दों को खतरे में देखते है क्यों कि वहाँ के विश्वासी कुछ समय बाद बिल्कुल रुक गये थे और उनकी आत्मिक उन्नति के लिये मानो ताला लग चुका था। वे परिपुर्णता (Perfection) की ओर नही जा रहे थे। उनका खतरा यहुदी धर्मशास्त्र के शिक्षक (Judaisers) थे, जो उन्हे वापस व्यवस्था तथा यहूदी प्रणाली की तरफ खींच रहे थे।

इसलिये पवित्र आत्मा प्रेरित पौलुस के जरिए, इन दो पत्रियों में, लेपालकपन को प्रकाशन में लाता है; और इसका अधिक परिपूर्ण अर्थ बताता है कि पवित्र आत्मा के पाये जाने से हमे लेपालकपन (Adoption) मिल चुका है, परंतु उसे हम अभी तक पूरी रीति से अनुभव नही कर पा रहे है। उसके लिये हमे कोशिश जारी रखनी पड़ेगी। क्यों कि इसी उद्देश्य से सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती है और पीड़ाओं में पड़ी तड़फती है ताकि एक दिन उसे छुटकारा मिले। जब वह दिन आएगा, सृष्टि अपने दास्यत्व से छुटकारा पाएगी। पर यह बिल्कुल साफ है कि हम अब तक नाबालिग (Minor) है। इस बात को गलातियों की पत्री में प्रस्तुत किया गया है। और जब तक हम समझदार (Major) नही बन जाते, तब तक हम अपने विरासत (Inheritance) को प्राप्त नही कर सकते। यही लेपालकपन है – सयाना बनना, प्रौढ़ बनना, परिपुर्णता को पहुँचना।

पूर्ण लेपालकपन : एक सामूहिक तथा बड़ी चुनौतीपूर्ण विषय

(FULL SONSHIP: A CORPORATE AND GREATLY WITHSTOOD MATTER)

तो फिर हम इस लेपालकपन के विषय में परमेश्वर की पाठशाला में वीरायत की पुष्टि करते हुए आमने – सामने हो गये है। मुझे लगता है कि मै कहूँ कि, जब कि यह व्यक्तिगत तथा नीजि मामला है और लागुकरण में ऐसा ही होना चाहिए, लेपालकपन का विषय एक चुनाव (election) का विषय हो जो कलीसिया से संबंधित है, ताकि व्यकितगत। यह एक कलीसिया है जो चुनी हुई देह (electbody) है, और यह एक कलीसिया है जो चुना हुआ "पुत्र", (elect son) है जिसके विषय हम अध्ययन कर रहे है; और यह कलीसिया ही है जिसे लेपालकपन तथा पुत्र की जगह वीरासत प्राप्त करने हेतु ठहराया गया है; और कलीसिया में ही परमेश्र इसकी परिपूर्णता करेगा। मै यह इसलिए कहता हूँ कि लेपालकपन का विषय कलीसिया से सच्चा और गहरा संबंध रखता है। हकीकत में यह उसके ऊपर ही निर्भर है। मेरा मतलब है कि लेपालकपन के लिए मसीह की देह की आवश्यकता है, और हम उसी के साथ संगी-वारीश (Fellow-heirs) बनने हेतु इससे जुड़े हुए है ताकि हम इसमे बढ़े और अन्त में इसकी पूर्णता को प्राप्त करे। आप और हम इसे एकल (Singly) रुप से नही, बल्कि सामूहीक रुप से ही प्राप्त कर सकते है।

मै जानता हूँ कि यह सच्चाई मेरे कहने से भी बहुत बड़ी है; पर हम प्रतिति करेंगे कि शत्रु कलीसिया की ज्योती को उसके लोगों से दूर रखने की पूरी कोशिश

कर रहा है। इसकी एक ही वजह है और वह है परमेश्वर ने हम लेपालकपन के लिए पहले से ही ठहराया (fore ordained) है। यही उसके लिए सबकुछ मायने रखता है। वह अपने स्थान को खो बैठता है, राज्य को खो बैठता है, अपने पद (Title) को खो बैठता है, सबकुछ खो बैठता है जब यह "सामूहिक पुत्र"(Corporate son) अपनी महिमा के साथ प्रकट होता है, जब यह काम वह कलीसिया में पूर्ण करके अपने सिंहासन पर विराजमान होता है। इसलिए वह मसीह की कलीसिया की ज्योति को विश्वासियों तक पहुँचाने के काम में जी – जान से बाधा उत्पन्न करेगा : और यही कारण है जसका जिक्र करते हुए प्रेरित पौलूस यह कहते हुए, "लेपालकन के लिए हमे पहले से ठहराया है", (Foreordained unto adoption of sons), अपने घुटने पर आकर प्रार्थना करता है:

> "हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हे अपनी पहिचान में, ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे। तुम्हारे मन की आँखे ज्योतिर्मय हों ताकि तुम जान लो कि उसके बुलाने से कैसी आशा होती है, और पवित्र लोगों मे उसकी मीरास की महिमा का धन कैसा है..." (इफिसियों १:१७, १८)

हम इस पाठशाला में एक भव्य उद्देश्य के साथ है। हम इसके महत्व की कल्पना तक नही कर सकते; इसलिये हमे प्रभु की बालक – प्रशिक्षण (Child-training) प्रणाली की उपेक्षा नही करती चाहिए। हाँ, फिर हमे हमारी मानवी परिकल्पनओं को दैवि परिकल्पनाओं के साथ नही मिलाना चाहिए जब हम

“ताडना”(Chastening) शब्द का इस्तमाल करते है। क्या ही निर्बल अनुवाद है! (What a poor translation!) यहाँ तक कि रिव्हाइज करनेवालों ने भी हमारी विशेष मदद नही की। यह सिर्फ “बालक-प्रशिक्षण” है। मेरे खयाल से जब मैने अपनी युवावस्था में इसे पहली बार सुना तो मेरा मन इसके प्रति बहुत ही घृणित हुआ। मै पूरी तरह से इसके खिलाफ हो उठा। मै समझता हूँ कि यह बिल्कूल स्वाभाविक है; पर यदि उस एक दु:खद (deplorable) शब्द की जगह दो शब्द का प्रयोग किया जाता तो इसका बड़ा असर हो जाता। “मेरे पुत्र, तू अपने प्रभु के “बालक-प्रशिक्षण”(Child-training) को तुच्छ न जान।” यह उससे कई गुणा बेहतर है। “प्रभु जिससे प्रेम करता है उसे प्रशिक्षित (Child-trains) करता है।

“बालक” तथा “पुत्रों” के बीच का व्यावहारिक भेद

(THE PRACTICAL DIFFERENCE BETWEEN “CHILDREN” AND “SONS”)

अब हम व्यावहारिक रुप से नाबालिग, नये नियम में बताये हुए आत्मिक संतान तथा पुत्रों के बीच का भेद देखेंगे। फर्क (भेद) सीर्फ यही है, कि बालकों या बच्चों के लिये सब कुछ किया जाता है क्यों कि वे स्वयं कुछ कर नही पाते। यही फर्क है। परंतु पुत्र, आत्मिक एवं धर्मशास्त्र के दृष्टिकोण से, वह है जो अपने आप में कृति करता है, उसे बाहरी मदद की जरुरत नही पड़ती है पर वह स्वयं अपनी मदद करने में

समर्थ (Competent in himself) होता है, और दूसरे लोग क्या करते है या क्या कहते है उनपर उसे निर्भर नही रहना पड़ता।

परंतु दुर्भाग्यवश बहुतसे लोग अपने आत्मिक बचपना से पुत्र के रुप में स्नातक (graduate) नही होते। और यह क्यों होता है? देखिए, परमेश्वर स्वयं अपने अधिकार और निर्धार से किसी को पुत्र नही बनाता। हमे इसमे जगह है। इन्ही बचनों में देखा जाता है कि परमेश्वर ने हमे जिम्मेदारी दी है, और उसे कडे शब्दों में स्पष्ट किया गया है कि यह जिम्मेदारी विश्वासियों पर सौंप दी गई है। इन्ही शब्दों को निर्जन प्रदेश में यहुदियों के पतन द्वारा प्रमाणित किया जाता है कि इस विषय की जिम्मेदारी परमेश्वर के लोगों पर ही है।

"आज आप उसकी वाणी सुनो, तो अपने

मन को कठोर न करना, जैसा कि क्रोध दिलाने

के समय किया था।" (इब्रानियों ३:१५)

आज इस वचन को अविश्वासियों को सुसमाचार सुनाते वक्त एक टेक्स्ट के रुप में इस्तमाल किया जाता है; पर नये नियम में इसे उस प्रकार कभी भी उपयोग में नही लाया था। यह वैध (legitimate) हो सकता है, पर उसे नये नियम में उस रीति से कभी भी प्रयोग में नही लाया गया। यह हमेशा विश्वासियों, मसिहियों के संदर्भ में चेथावनी के रुप में इस्तमाल किया गया ाि कि वे अपनी जिम्मेदारी को निभाते हुए अपने घर (परमेश्वर के पास) वापस लौट आए।

अभिप्रायपूर्णता: भावी पुत्रों की पात्रता

(PURPOSEFULNESS: A REQUIREMENT IN WOULD BE SONS)

इससे अभिप्राय है कि लेपालकपन के लिये कुछ आधारभूत (Basic) चिज की आवश्यकता है, और वह है परमेश्वर के साथ अभिप्रायपूर्णता के रवैये से चलना। हमोर भितर इस प्रकार का ज्ञानेंद्रिय होना चाहिए जिसके माध्यम से हम परमेश्वर के साथ चले। प्रभु इसकी माँग करता है। नया नियम इस तत्व से भरा हुआ है। अगर हम इस बात को समझकर इकरार करते है तो हमारी बड़ी सहायता होगी। ऐसे लोग जो इस उद्देश्यपूर्ण आत्मा से रहित है तथा अपने आप में संतुष्ट है, जो अपने आप को अभितक एक नाबालिग की तरह मानते है, उन्हे एक आरामदायक समय है। वे अपने जीवन से संतुष्ट है और इससे अधिक किसी चिज की चाहत नही रखते। परंतु यदि कोई मनुष्य ऐसी भावना से भरा हुआ है, तो उसको मुसीबत में गिरने के लिए ज्यादा समय नही लगेगा। अगर आप यूं जारी रखना चाहते है तो आप नर्सरी से प्राथमिक स्कूल में प्रवेश करने के बराबर है, और इस स्कूल का स्वभावचरित्र (nature) बिल्कुल कठिन है।

प्रभु यीशु मसीह कहते है, "यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है।" (युहन्ना ७:१७) यह सीर्फ एक बीज रुप में सुसमाचारीय तरिका है जिसके द्वारा लेपालकन की महान सच्चाई प्रकट होती है। वह यह है कि आप स्वयं अपने अनुभव से इस मालूम करते हो न अपने बोद्धिक शक्ति के द्वारा या बाहरी प्रभाव द्वारा। क्यों कि प्रभु हमसे शैक्षणिक

रुप से एक विद्यार्थी समान नही, पर अपने पुत्र के समान बर्ताव (व्यवहार) करता है। इसलिए यह एक आत्मिक वृद्धि, आत्मिक बढोत्तरी है: यही लेपालकपन (गोद लेने) विषयक वृद्धि है। हाँ, यह एक अनुभव है।

अंतिम बल तथा प्रोत्साहन

(A FINAL EMPHASIS AND EXHORTATION)

अब, मुझे विस्मय होता है कि आप मेरी बात समझकर उसी के द्वारा सहायता पा रहे है: ताकि जल्द ही आप परमेश्वर के साथ कार्य (Business) करे। हो सकता है कि आपको परमेश्वर प्राप्ति के लिए नये तरिके से काम करना होगा जैसा इसके पहले आपने कभी नही अपनाया होगा। आपको वहाँ तक पहुँचने के लिये आपकी मदत की जा सकती है; परन्तु आपके लिये कोई और कार्य नही कर सकता क्यों कि परमेश्वर ने यह बात आप और उसी के बीच ही रखी है ताकि आपके जीवन में एक आत्मिक इतिहास बने। अगर आप परमेश्वर के साथ इस प्रकार अभिप्रायपूर्णता के उद्देश्य से आत्मा में जुड़े हुए है, तो इसका मतलब आप उसकी पाठशाला में है, और यह एक अच्छा निर्देश है जब आप गहरे आत्मिक कसरत का अनुभव करते हो।

आप इसे गलत न समझे। ऐसा मत समझिए कि आपको स्वयं को सहभागिता से तथा अन्य उपलब्ध मददगारों से अलग होना पड़ेगा। यह इसकी गलत समझ (misapprehension) होगी, और इसी से आप और भी परेशानी में गिरकर गलत

स्थिति (false position) अपनाएँगे। पर मै कहता हूं आपके हृदयों के हृदय में पाएँगे, जब कि आपको सेवकाई, सहभागिता, परामर्श तथा कौन्सिल द्वारा मदम दी जाएगी, सही बात आप स्वयं के जीवन से उगम होकर स्वयंचलित रुप से बढ़ेगी। आप स्वयं के अन्दर एक जड़ होना चाहिए जो कोई बाहरी प्रभाव से नही बल्कि परमेश्वर के आपके साथ कार्यवाही (dealing) करने के द्वारा ही बढ़ेगा।

अब, समझिए, कि यह सब कुछ प रमेश्वर कर रहा है। वह कहता है, मै नही चाहता कि आप हमेशा नाबालिग (babes) ही बने रहे, मैं आपके ऊपर जिम्मेदारी देना चाहता हूँ; मेरे पास आपके लिये बड़े-बड़े काम है। तो चलिए, वह हमे शायद भारी कठिनाई भरी स्थिति में डाल सकता है, परन्तु हमारी जिम्मेदारी के प्रति बुलाहट की आहट से ही आपको पता चलेगा कि आप कठिन परिस्थिति का सामना किस प्रकार कर सकते हो। तैरना सीखने हेतु समुद्र में छलाँग लगाया हुआ व्यक्ति उस व्यक्ति से बेहतर सीखता है जिसके पास सीर्फ तैराकी के सिद्धान्त (Doctrine about swimming) है। परमेश्वर यह बड़े प्यार से करता है; परन्तु वह जरुर पूरा करता है। प्रभु जिससे प्रेम करता है उसे बालक-प्रशिक्षण (Child training) देता है।

यदि यह सच नही है, तो इसका मतलब मै नये नियम की वृद्धि (growth) विषयक शिक्षा को नही जानता, और मै प्रभु की उसकी कलीसिया के साथ होनेवाली कार्यवाही (dealing) भी नही जानता। अगर सीर्फ नया जन्म पाना, पापों की क्षमा पाना और स्वर्ग में जाना यही मायने रखता था, तो ये सब बातें बाइबल (धर्मशास्त्र) में लिखने तथा हमारे उनके अनुभव लेने की आवश्यकता न थी। यह सबकुछ हमारी

आत्मिक उन्नति के लिये दिया गया है। यह हमारी "उच्च सेवकाई" (Higher service) हेतु लिखी गई है।

प्रभु हमे 'बालक प्रशिक्षण' (Chastisement, child training) मे पुत्र बनने हेतु हमारी मदतकरे, ताकि जो जिम्मेदारी वह हमारे ऊपर डालता है, उसे उसकी इच्छा के मुताबिक हम पूरा कर सके।

पाठ : सात

लेपालकपन की पाठशाला से उपाधि प्राप्ति

(GRADUATION FROM THE SCHOOL OF SONSHIP)

शास्त्रपाठ : रोमियो ८:१९, २१-२३; इब्रानियों १:२; २:५-८, ९, ११, ३:१, ७, ८, १२:५-६; प्रकाशितवाक्य १२:५)

हमारे पीछले अध्ययन (पाठ) में हमने लेपालकपन की पाठशाला विषयक अध्ययन किया था। अब हम इसे इगले स्तर (next stage) तक पहुँचाएँगे।

हम आत्मिक बचपना से लेपालकपन की पाठशाला तक के बीच के परिवर्तनशील स्वभव, अर्थ तथा आवश्यकता के बारे में थोड़ासा अध्ययन किया है। वह परिवर्तन बिंन्दू (transition) बहुत ही सच्चा अनुभव है, और जो इसमें प्रवेश करते है उनके लिए यह बहुत ही गहरा अनुभव होगा।

मेरे खयाल से हम मे से बहुतसे जब हम नई स्कूल में गये थे उस क्षण को स्मरण रखे होगे, या उस घड़ी को जब हम पहली बार स्कूल गये थे। सबकुछ अजिब था, सबकुछ नया था। हमे हर एक बात शुरु से सीखनी पड़ी थी। वह एक सम्पूर्ण नई दुनिया थी: और परमेश्र की संतान के विषय में भी यह बात उतनी ही सच है। यह एक पूर्ण रीति से नई दुनिया है, नई व्यवस्था, ऐसी परिस्थिति जिससे हम कभी परिचित न थे, जब वह बिंदू पार करके परमेश्वर हमे हाथ पकड़कर आगे बढाते हुए कहता है

कि अब आप नाबालिग नही रहे, पर अब लेपालकपन की पाठशाला में दाखिला ले चुके है। यहाँपर 'लेपालकपन' शब्द का इस्तमाल इसके स्वाभाविक नही बल्कि दैवी अर्थ (Divine meaning) से किया गया है।

पुत्र के रुप में उपाधिप्राप्ति का उद्देश्य

(THE PURPOSE OF OUR GRADUATION AS SONS)

अब हम थोडे समय के लिये पुत्र के रुप में उपाधिप्राप्ति (graduation) के ऊपर अध्ययन करेंगे। जिस उद्देश्य से स्कूल जारी है, उस उद्देश्य की पूर्णता होगी। सभी प्रकार का बालक-प्रशिक्षण समाप्त हो जाएगा। हम जानते है और प्रभु भी जानता नही बल्कि दु:खदायी है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो क्यों कि उपाधि-प्राप्ति दिन (graduation day) आनेवाला है।

बड़ी उत्कंठा के साथ इस दिन की प्रतिक्षा सारी सृष्टि के द्वारा की जा रही है, ताकि वह दिन आए जिसमे परमेश्र के पुत्रों का प्रगटन होगा। पुत्र की जगह रखना (गोद लेना) जिसे हमने पिछले पाठ में देखा है, जिसका अर्थ "लेपालकपन"(Adoption), परिवार में बढ़ा – पला नही, परंतु उन्हे पुत्र की जगह पर रखना जो इस स्कूल द्वारा पात्र बन गये है। और लेपालकपन की उपाधि प्राप्ति किसलिए है? वह सिंहासन के लिये है।

इब्रानियो १:२ में हम उस वारिश (heir) को पाते है – "... जिसे उसने अपने सर्वस्व पर वारिश (अधिकारी) ठहराया है..."

दुसरे अध्याय मे भी इसे हम पाते है – "... बहुत से पुत्रों की महिमा होगी...।"

इस पाठशाला के अन्त में सिंहासन है, उपाधि- प्राप्ति, और इसे प्रकाशितवाक्य १२ अध्याय में हम पाते है। प्रकाशित वाक्य १२ अध्याय का कार्यकारी तत्व लेपालकपन की पुर्ति है।

> "वह बेटा जनी। वह लोहे का दण्ड लिए हुए सब जातियों पर राज्य करने पर था। उसका बच्चा अचानक परमेश्वर के पास, और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुँचा दिया गया।"

यही उपाधि-प्राप्ति (graduation) है।

सिंहासन तथा परमेश्वर की महिमा संबंधि आत्मिक बढौती

(SPIRITUAL INCREASE RELATED TO THE THRONE AND THE GLORY OF GOD)

सर्वप्रथम, इससे यह अभिप्राय है कि आत्मिक बढौती हेतु हमे बुलाया गया है, या इसे दूसरे किसी शब्द प्रयोग द्वारा बताया गया हो, यह हमारी परिपूर्ण आशिष प्राप्ति का विषय नही है। अगर हम इसे व्यक्तिगत रुप से देखते है, तो हम हमारा मार्ग भूल जाएँगे, और हम मुसीबत में फँस जाएँगे; क्यों कि, जैसे कि हमने हमेशा इस बात को प्रमाणित करने की कोशिश की है, जब हम हमारी आत्मिक शैषव (Spiritual infancy) से बाहर आकर लेपालकपन की पाठशाला में प्रवेश करते है, हम हमारे व्यक्तिगत चाहत तथा आशिषों को छोड़कर प्रभु के लिये जीवन देते है। उसी समय के बाद पूरा मकसद मुझे क्या मिलेगा ऐसा नही होता, बल्कि परमेश्वर को क्या मिलेगा ऐसा होता है। यह इफिसियों है। "ताकि आप जाने कि उसकी महिमा का खजाना क्या है जो विश्वासियों के लिये रखा गया है।"

हम इस पाठशाला में परमेश्वर के शाश्वत उद्देश्य से आए है, और परमेश्वर का शाश्वत उद्देश्य हमारे नए जन्म प्राप्त करने से शुरु या खत्म नही होता। उसका उद्देश्य तभी खत्म होता है जब हम सिंहासन पर विराजमान होते है। यह मेरे लिए महिमा होगी, पर इसका उद्देश्य अब यही नही है। हमे इस महान उद्देश्य के लिए बुलाया गया है जिसका अन्त सिंहासन है।

विश्व प्रभाव : वर्तमान समय का प्रभावकारी मुद्दा

(WORLD DOMINION : THE PRESSING ISSUE OF THE HOUR)

मै विशेष जोर देकर यह कहना चाहता हूँ, जो मुझे लग रहा है – और इसे मैं आप लोगों पर ही छोडता हूँ ताकि आप इसकी सच्चाई को परखे, वह यह है कि जो आज संसार में हो रहा है। मुझे ऐसा लग रहा है कि यह मुद्दा अब जिस प्रकार सामने आया है वैसा इसके पहले कभी नही आया था। यह मुद्दा इस संसार के राज्यों का, मसीह के विरोधी (Antichrist) का है जो बहुत ही स्पष्ट है। यह इस पृथ्वी के नियंत्रण तथा शासन संबंधी, और इसका उद्देश्य परमेश्वर तथा मसीह को अलग करना है। यह एक दुष्ट बात है, और इसके परखने के लिये कोई आत्मिक धारना रखनेवाले प्रचारक की आवश्यकता नही, क्यों कि हमारे बहुतसे उसे देखा है तथा इन शब्दों का इस्तमाल किया है। उनकी दुरदृष्टि कहाँ तक है यह हम नही जानते। परंतु वे देख रहे है कि आज मसीहत (Christianity) के नाम से जो कुछ खड़ा है, खतरे में है। वे कहते है यह शैतानी क्रिया है! और वे वही मुहावरे का प्रयोग करते है – मसीह विरोधक (Antichrist)

इसलिए मै कहता हूँ कि यह संसार इस समय के लिये योग्य है, और मै अपने आप से तथा आप लोगों से प्रार्थनापूर्वक इस बात पर गौर करने के लिये कहता हूँ कि इस समय को पहचान ने के लिये परमेश्वर हमे अनुग्रह दे और हम अपनी बुलाहट की खात्री करते हुए परमेश्वर को प्रतिसाद दे। विश्वासी गण इस राज्य को आत्मिक रुप से समझे ताकि वे आनेवाले युग के सिंहासन के समीप पहुँचे।

वास्तविक पाठ तथा खुले दिल से पूछताँछ की आवश्यकता

(AN OBJECT LESSON AND THE NEED FOR OPEN – HEARTED INQUIRY)

आप जानते है कि कुछ राष्ट्र हमारे पड़ोस में ही दु:ख भुगत रहे है, क्यों कि कमसे कम सात साल पहले उन्हे उनकी सीमा रेखा पर जारी गुप्त प्रचार के बारे में बताया गया था। उन्हे बताया गया था कि इसका अंत कैसे होगा, उसकी वास्तविकता (object) क्या थी, इसका नतिजा क्या होगा, और उन्होने कहा, नही, यह असंभव है! परंतु असंभाव्य हो गया और हो रहा है। शायद इस पर कोई भरोसा न रखे या इसे ग्रहण न करे। देखिए असंभव! हास्सास्पद! कहने के कारण वे कैसा दु:ख उठा रहे है/

हाँ, मै कहता हूँ कि यह हमारे लिये एक अच्छा पाठ होना चाहिए। यह शैतान की चाल है। यह उसकी रणनीति का हिस्साहै कि वह धूर्तता से कार्य करके लोगों को सच्चाई के राह से हटाए। मै तुम्हे एक ही काम करने के लिए कहता हूँ कि परमेश्वर के वचन की सच्चाई पर पूरा विश्वास किजिए। परमेश्वर अपने लोगों के द्वारा कुछ विशेष कार्य करता है, और खास करके उनके जरिए जो परमेश्वर की सेवा के प्रति पूर्ण रुप से समर्पित है। परमेश्वर का धन्यवाद हो, हमारे पास उसका आश्वासन है, “मैं अपनी कलीसिया बनाउँगा; और अधोलोक के फाटक उसपर प्रबल न होगें।”

रहस्य का स्पष्टिकरण तथा दु:खद तैयारी

(THE EXPLANATION OF THE MYSTIFYING AND PAINFUL PREPARATION)

तो फिर यह रही लेपालकपन के स्कूल विषय हमारी परिकल्पना, यानी, सिंहासन। मेरे प्रिय मित्रों, मै उसे मेरे हृदय से बाँधकर रखना चाहता हूँ, और मैं आप से भी यही उम्मीद रखता हूँ। आप देखीए, हम अपनी इस दुनिया की यात्रा को बहुत ही जल्द पूरा करना चाहते है; मेरा मतलब है उस विषय में जो हम करने के काबिल है, हमारे जीवन काल में जो कुछ हम कर सकते है, हम कर लेते है, और जब हम देखते है कि प्रभु हमें बन्द करता है, मर्यादित करता है, और कारागृह में डालने जैसा प्रतित होता है, बहुदा इसी तनाव से जब लोहा हमारी आत्मा में युसुफ की नाई प्रवेश करता है, हम सोचना आरंभ करते है कि हमने गलती की। जीवन बित रहा है; और सबकुछ निष्फल (unfruitful) है; हम कुछ नही कर रहे है। अन्य लोग कर रहे है, हम नही। इस प्रकार हम इस वर्तमान जीवन को हम जो कुछ कर सकते है उस विषय से संबंधित कर देते है। परंतु परमेश्वर बहुदा ऐसे लोगों में अत्याधिक प्रभावशाली रीति से कार्य करता है जो स्वयं के लिए बन्द हो चुके है, पर परमेश्वर के लिए खुले है।

हमे इस दुनिया में रहते समय बहुत सी बातों के ऊपर जय पाना है। हमे बड़ी ऊँचाई तय करनी है, इससे अभिप्राय है कि हमे शैतान तथा उसके राज्य के ऊपर भी जय पाना है। वर्तमान समय में, इस घडी में जहाँ पुत्रों का प्रकट हो जायेगा, जब

बालक सिंहासन पर बैठेगा, तब सारी सृष्टि भ्रष्टाचार (corruption) से छुटकारा पाएगी।

तो फिर हम जिन दिनों में रहते है, उसका अर्थ जानने की कोशिश करे। उन दु:खद घटनाओं को जाने जिन्हे हमे और गहराई से पार करना है। परमेश्वर शैतान को किस प्रकार उत्तर देता है इसे भी जाने। शैतान अपने घमंड के कारण नीचे पृथ्वी पर डाल दिया गया था। पर आप और मै प्रभु यीशु मसीह का शरीर होने के लिए बुलाए गए है, हम स्वयं परमेश्वर का उत्तर हे, हमे इसे आत्मिक रीतिसे समझना चाहिए। वर्तमान में यह पूर्ण रुप से, शब्दश: होगा, ताकि विश्वासी राज्य को ग्रहण करेंगे, और उसका आगमन होगा जो अभिषिक्त राजा है। तब यह सारा राज्य (dominion) परमेश्वर के विश्वासियों को सौंप दिया जाएगा।

पाठ – आठ

"सर्वश्रेष्ठ – विश्वास", और अंतिम लिहाज

("OVER FULL – FAITH", AND A FINAL CONSIDERATION)

शास्त्रपाठ : एहेज्केल ४३:१-२, ४-५, ७; इफिसियों १:१२, ३:२१; ५:२५-२७; कुलिसियों १:२७; १ पतरस ४:१४, इब्रानियों १०:३७-३९; ११:१

इन अध्ययन श्रृंखला में हम परमेश्वर के भवन के कुछ मुख्य पहलूओं का अध्ययन करते आए है। इस आत्मिक भवन में हम जीवित पत्थर है। हम इस बात को समझने की कोशीश करते आये है कि हम इस भवन के आत्मिक अंग किस प्रकार बने हुए है, ओर दो बाते यहाँ पर वर्तमान समय में बची हुई है, जिन्हे हम विश्वास करते है कि परमेश्वर हमे कहते हेतु सामर्थ देगा। पहली है जो इन सभी बातों पर कार्यकारी है, और दूसरी बात इस आत्मिक भवन का अंतिम भाग है। मैने इन्हे इस प्रकार क्रमित किया है ताकि आपको बाकी सभी बातें समझने के लिए आसान होगा।

यह बात जो परमेश्वर के आत्मिक भवन को संचालित करती है वह है – विश्वास।

निम्न संबंध विश्वास

(FAITH IN RELATION TO)

अ) प्रभु यीशु मसीह के उत्कर्ष संबंधी :

(THE EXALTATION OF THE LORD JESUS)

सर्वप्रथम भाग जो हमने अध्ययन किया कि यह आत्मिक घर जिसके हम मसीह में जीवित अंग है, प्रभु यीशु के उत्कर्ष हेतु खड़ा है। इसे हम पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया के इतिहास में प्रथम महान उल्लेख के रुप में देखते है।

"परमेश्वर ने उसी यीशु के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाया... उसने हम पर यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो।" (प्रेरित २:३३)

यह प्रभु यीशु के उत्कर्ष के लिए एक महिमामय अभिव्यक्ति था अद्भुत गवाही थी, और इसी उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए कलीसिया की स्थापना की गई है।

इस प्रकार विश्वास इस विषय पर संचालन करता है, और जैसे-जैसे हम अंत के करीब जाएँगे तो महसूस करेंगे कि प्रभुता विषयक चुनौती, उत्कर्ष, सिंहासन (kingship), तथा प्रभु यीशु का राज्यभिषेक (enthronment) और अधिक चुनौतीपूर्ण होगा। यह एक कड़वी चुनौती होगी और ऐसी परिस्थिति आएगी जब सीर्फ विश्वास, खरा विश्वास ही चुने हुओं को अपनी सच्चाई में खड़े रहने हेतु मदद करेगा। तब उन्हे पता चलेगा कि सभी अधिकारों के सुत्र (reins) प्रभु यीशु के हाथ में है। जो जय पाते

है उनके विषय में एक सत्य है कि वे विश्वास के कारण ही जय पाते है। यह ऐसा जीवन नही होगा जो आपको हर एक समय चिन्ह या सबुत द्वारा यीशु की प्रभुता को प्रकट करेगा। यह ऐसा नही होगा। इसकी अपेक्षा भी न करे। परमेश्वर का वचन हमे स्पष्ट करता है कि ऐसा नही होता है। उदाहरण के लिए इब्रानियों की पत्री के १० वे अध्याय के हमने पढ़े हुए आयत (verses) को निशान (mark) लगाए।

"अब बहुत ही थोडा समय रह गया है: आनेवाला आएगा, और देर न करेगा। मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा।"

ब) प्रभु की सेवकाई में

(MINISTERING UNTO THE LORD)

फिर हमने इस आत्मिक भवन के दूसरे भाग (Feature) पर चर्चा की, कि यह परमेश्वर की संतुष्टि तथा आनंद हेतु अपना अस्तित्व रखता है। यह एक बहुत खुबसुरत कल्पना है! यह बहुत ही अच्छा विचार, अच्छि बात है कि हम उसकी सेवकाई, उसके आनंद और उसकी महिमा के लिये अपना अस्तित्व रखते है। जब हम शुरुआंत करते है तो कुछ दिन तक हमे अच्छा लगता है, हम आत्मिक अनुभव लेते है, हमे परमेश्वर को प्रसन्न करने की खुशी होती है। यह काम शुरु में हम आसानी से कर लेते है।

पर कुछ समय बाद हम महसूस करते है कि, प्रभु के लोग होने के नाते हमे निर्जन प्रदेश (wilderness) में ले जाया जाता है। हमारे अस्तित्व की यह वह भुजा है जिसकी कार्यवाही करनी है। यह वह भुजा है जो हरएक बात में मसीह को प्रथमस्थान (preeminence) देने की माँग करती है और ऐसा करते समय हम उस क्षेत्र में आते है जिसके विषय प्रेरित लिखता है – "क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में इच्छा करता है। ये एक दूसरे के विरोधी है।" (गलतियों ५:१७) हमारे अंदर ऐसा कुछ चलता रहता है, और जब हम उस निर्जन क्षेत्र मे पहुँचते है और परीक्षा की गहरी सच्चाई में प्रवेश करते है, तो विश्वास का बड़ा महत्व महसूस होता है। मैं इस्त्राएल के ४० वर्ष जो उन्होंने जंगल (wilderness) में बिताए उस विषय में सोचता हूँ। प्रभु उन्हे उन्हे ताड़ना (discipline) दे रहा था, ताकि वे क्रूस के महत्त्व को जाने जो यरदन द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया था। यह उनकी विश्वास की परीक्षा थी। पर यह उस जंगल यात्रा द्वारा हमे सीखने को मिलता है कि परमेश्वर के सामने कोई मनुष्य घमण्ड नही कर सकता क्यों कि हमारे अंदर, हमारे शरीर में कुछ भी अच्छा नही है, हमे इस बात को अपने व्यक्तिगत जीवन में लागू करना है ताकि यह सीर्फ एक सिद्धान्त (theory) ही नही, बल्कि एक असाध्य और भयानक सत्य (a desperate and awful reality) साबित हो। इसलिए हम पुकाराते है, "मै कैसा अभागा मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुडाएगा?" (रोमियों ७:२४)

परंतु कोई भी समय में, अंधकारमय दिन में, सबसे कठिन समय में, जब हम सोचते है कि यह क्षण मेरे जीवन का सबसे निराशामय है, उसी समय अगर हम अंदर

झाँककर देखते तो, वहाँ पर परमेश्वर की महिमा हम देख पाते थे, और यह सीर्फ हमारे विश्वास का मामला था। अगर वे उन परिस्थितियों को मापदण्ड (criterion) के रुप मे लेते, तो वे कह सकते थे, ओह, हम प्रभु को नही देख सकते; सबकुछ बिल्कुल उदासिन है, और हमारी परिस्थिती बहुत दयनीय है और यह सबकुछ जिससे हम गुजर रहे है तथा प्रभु की उपस्थिति को देखने की दृष्टि की कमी ठीक, इस में कुछ नही है! हम कोशीश करना छोड़ देते है! नये नियम में इस नजरिए (attitude) के खिलार्फ कलीसिया को चेतावनी दी गई है। "उनके अविश्वास के कारण वे प्रवेश न कर सके।" (इब्रानियों ३:१९) और उनका अविश्वास इस प्रकार था, "क्या प्रभु हमारे मध्य में है या नही?" यही बात की वजय से प्रभु का क्रोध उनपर आ गया, यहाँ तक की उसने उनको (उस पीढ़ी को) उस भूमी में प्रवेश करने से मना कर दिया। उन्होने वही आखरी सवाल पूछा था, क्या प्रभु हमारे बीच में है या नही?

हम हर समय मसीह को हमारे अंदर महसूस नही करते। हम हर पल इस होश के साथ नही जीते कि प्रभु हमारे अंदर है; परंतु वह है, जिस प्रकार परमपवित्र स्थान में बिना किसी बाहरी प्रमाण के 'शकीना महिमा' (shekinah glory) हुआ करती थी। परमेश्वर के आत्मिक भवन का भी ऐसा ही दस्तूर है। हम वह आत्मिक भवन है।

आप देखिए परमेश्वर उस पीढी से कितना निराश था। उनके विषय में उसने कहा, "वे मेरे विश्रामस्थान में कभी प्रवेश न करने पाएँगे।" वह उनके ऊपर इतना निराश (क्रोधित) क्यों हुआ था? क्यों कि उन्होने परमेश्वर के उद्धार की उपेक्षा की।

उन्होने अपने आप को परिस्थितियों के सामने झुकाया। उन्होने परिस्थिति के सामने हथियार डाल दिए।

क) दूसरों की सेवकाई में

(MINISTERING TO THE LIFE OF OTHERS)

फिर तीसरी बात के विषय हम ने कहा था कि कलीसिया आत्मिक भवन के रुप में दूसरों की सेवा करने हेतु अपना अस्तित्व रखती है। दूसरों की सेवा करना यह बहुत ही अच्छा परिकल्पना तथा चिार है। यह भव्य बात है! अगर हम ऐसा कर पाते है, तो यह बहुत ही अच्छी बात है, और यही सुझाव हमारे सरों कों ऊँचा उठाकर हमे बेहतरिन बनाता है। परंतु स्मरण रखें कि प्रेरित पौलुस ने क्या कहा, "मृत्यु तो हम पर प्रभाव डालती है किंतु जीवन तुम पर।" (२ कुरिंथ ४:१२) आप देखिए, यह गिदोन की ऊन (fleece) है जो बार-बार निचोड़ चुकी है, सुखी है, तथा चारों तरफ से गीली हो चुकी है, और हमारे दूसरों के खातीर सेवा करना भी ठीक उसी प्रकार का है। हम मानो उसी सूखी हड्डियों की नाईं सूख गये है, निचोड़े गये है। हमे इस बात का भी होश नही हैं कि हमारा कटोरा उमड़ रहा है, और हम दूसरों को जीवन प्रदान करने की सेवा में लगे हुए है, और फिर भी ऐसी ही अवस्था में लोग हमारे द्वारा आशिषित होते है जिससे परमेश्वर की महिमा होती है। ओह, हमने सोचा ऐसे काम में कोई आशिष नही होगी! ठीक, प्रभु नही चाहता था कि हम इस कार्य के विषय घमण्ड करे, पर वे जीवन प्राप्त कर रहे थे।

देखिए, फिर यह विश्वास की बात है। हम ऐसा कभी न सोचे कि यह जीवनदान करने की सेवा हमसो बलबूते पर आधारित हैं, क्यों कि यह प्रभु का कार्य है जो वह हमारे जरिए करवाता है। तो आइए हम विश्वास करे; विश्वास के साथ हमारी सेवकाई को पूरा करे।

"चाहे बोनेवाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पुलियाँ लिए जयजयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा।" (भजन १२६:६)

ड) मसीह के स्थानिक सामूहिक प्रतिनिधित्व में

(A LOCAL CORPORATE REPRESENTATION OF CHRIST)

तो फिर इस आत्मिक भवन का चौथा भाग मसीह के स्थानिक सामूहिक प्रतिनिधित्व करने हेतु है। हमने उसके इस वचन पर अध्ययन किया है, "जहाँ दो या तीन मेरे नाम से इकठ्ठे होते है, मै उनके बीच उपस्थित होता हूँ" (मत्ति १८:२०), और इस महान सत्य को अपनाते है कि मसीह की देह के (church) दो या तीन सदस्य जहाँ पर उपस्थित होते है, उनके बीच मसीह के प्रतिनिधित्व की अभिव्यक्ति होती है।

जब हम जीवित रीति से जीवित विश्वास के साथ आते है, तो हम कोई भाषण (address) सुनने के लिये नही, बल्कि हम निश्चित रुप से प्रभु से मिलने हेतु आते है, और उसने हमे इस विषय में अभिवचन भी दिया है, कि जहाँ दो या तीन उसके नाम से

एकत्रित होते है, वह हमसे मिलेगा। यदि हमारे पास यही आत्मा है, यही रवैया है, तो वहां पर प्रभु की जीवित अभिव्यक्ति (living expression) होगी। हमे हमारे सामुदायिक जीवन में मुल्यवान बनाने के लिये विश्वास अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन है। मैं इसके आगे नही बढ़ सकता हूँ।

इ) शैतान के विनाश की गवाही

(TESTIMONY TO THE OVERTHROW OF SATAN)

पाँचवा भाग इस आत्मिक घर का यह था कि वह शैतान के विनाश की गवाही दे। हाँ, यह एक हकीकत है, शैतान को मसीह ने हरा दिया है। जहाँ तक मसीह का खयाल है, शैतान का विनाश हो चुका है और इसकी पुष्टि भी हो चुकी है, और पिन्तेकुस्त के दिन पर इसके विश्वास करने, मनाने तथा प्रचार करने में कोई कठिनाई महसूस नही हुई थी। परंतु ये इस बात को देखने हेतु जीवित रहे कि अन्य दिनों में एक सा अनुभव नही था। अन्य दिनों में उन्होने देखा और प्रतिती कि की शैतान एक हारा हुआ तथा पूर्ण रुप से नाश हुए व्यक्ति को छोड अन्य कुछ नही है। उन्होने देखा कि शैतान अपनी बुरी चाल चल रहा है। उन्होने देखा कि उनके संगी-विश्वासी (fello believers) तथा उनके सहकर्मी शैतान द्वारा मारे जा रहे है। उन्होने उनके दायें और बाई और शैतानी हमले देखे। क्या इसका यह मतलब होता है कि एक समय में उन्होने जो कहा था औ जिसके विषय उन्हे दृढ विश्वास तथा खात्री थी, वह अब सच न था और यह उनकी गलत धारणा थी? कदापि नही! यह विषय (matter) प्रभु के

विश्वासियों के लिये विश्वास का विषय होना अनिवार्य है। जहाँ तक यह संसार का खयाल है, शैतान का विनाश (Over throw of satan) कलीसिया के लिए एक लड़ाकू विश्वास (militant faith) का विषय है।

मै इफिसियों की पत्री में से इस सत्य को सीखा हूँ। जब कि प्रेरित पौलुस हमें शैतान की युक्तियों से बचने के लिए पूरा हथियार धारण करने को कहता है, वह इस प्रकार कहता है, अब इन सबके साथ विश्वास की ढाल लो। पौलूस के कथन को समझने के लिए हमारी अँगेजी भाषा इतनी सक्षम नही है। पौलुस "सबके ऊपर"(above all) ऐसा इसलिये नही कहा कि हम उसे इस प्रकार समझे। उसने कहा, अब इन सबके ऊपर विश्वास की बड़ी ढ़ाल लो। शायद आप जानते होंगे रोमी सिपाई के पास कई प्रकारकी ढालें (shields) हुआ करती थी। उनके पास एक गोलाकार छोटी ढ़ाल हुआ करती थी जो उनके चेहरे तथा सिर पर होने वाले हमलों के प्रति उनकी रक्षा करती थी। पर फिर उनके पास एक बड़ी ढ़ाल हुआ करती थी, जो उनको पूरी रीति से ढक लेती थी, और जब वे शत्रु से लड़ने युद्ध पर जाते थे, इसी बड़ी ढ़ाल का प्रयोग करते थे। जैसे कि वे इस ढ़ाल को अपने ईर्द-गिर्द रखा करते थे, तो वह ढ़ाल उनके पूरे शरीर को सुरक्षा देने हेतु एक 'ढोस कवच' (solid mail roof) सा बन जाता था। वे उस ढाल के नीचे आगे बढ़ते थे, और वह ढ़ाल उन्हे सुरक्षा प्रदान करती थी।

कलीसिया के लिये यह अनिवार्य है कि वह इस प्रकार का लड़ाकू विश्वास बनाए रखे ताकि वह शैतान की सभी दुष्ट शक्तियों का मुकाबला कर सके। क्यों कि

यह सीर्फ विश्वास के द्वारा ही संभव है कि हम शैतान से लड़ सके और उस पर प्रबल हो सके। पर हाँ, हमारा यह विश्वास कुछ और बननेवाला नही, पर वही मसीह यीशु का विश्वास जिसने शैतान को पहले से ही हराया है।

फ) आनेवाली महिमा के लिये वर्तमान गवाही

(PRESENT TESTIMONY TO THE COMING DAY OF GLORY)

अब मैं अंतिम बात (विषय) पर आता हूँ जिसको हमने अब तक उल्लेख नही किया है। इस आत्मिक भवन का अंतिम भाग (final feature) जो अनुच्छेद हमने पढ़ा है, उससे जुड़ा हुआ है कि कलीसिया परमेश्वर की आनेवाली महिमा को इस वर्तमान समय में प्रकट करने हेतु एक गवाही के रुप में मौजूद है।

येहेज्केल के मंदिर में, हमने देखा है कि किस प्रकार उसमे अंदर जाना तथा बाहर आना, उपर-नीचे तथा बीच प्रवेश करना हुआ करता था, अन्त में एक मनुष्य उसे उस द्वार (gate) पर ले गया जो पूर्वी तरफ था तथा वह महिमा का द्वार था। पूर्व से सूरज निकलता है, दिन की शुरुआत होती है, और उसी रीती से परमेश्वर की महिमा भरपूरी के साथ उस द्वार से प्रवेश करती थी। यह भवन, हम देखते है, कि बिल्कूल परमेश्वर की आनेवाली महिमा के बीच रासते में खड़ा है। इस भवन का प्रवेशद्वार सुर्योदय की तरफ, महिमा की तरफ है। यह रही येहेज्केल की परछाई (type), पर हमारे पास दूसरे भी बहुतसे अनुच्छेद (Passage) है।

“हम उसकी महिमा की स्तुति के लिये होना चाहिए।”

यह इफिसियों की कलीसिया है। परन्तु यह अनुच्छेद इब्रानियों में पाया जाता है।

> “अब बहुत ही थोड़ा समय रह गया है:
> आनेवाला आएगा, और देर न करेगा।
> मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा,
> यदि वह पीछे हट जाए तो मेरा मन
> उस से प्रसन्न न होगा। पर हम विश्वास
> करने वाले है कि प्राणों को बचाएं। अब
> विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय,
> और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।”
> (इब्रानियों १०:३७-३९; ११:१)

मैं भविष्यवाणी (prophecy) का काफी अभ्यास करता था, और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को इसमें बड़ा महत्व है। पर जितना अधिक मैं इसका अध्ययन करता था, उतना ही मैं चकरा (confused) जाता था, उतनी ही अधीक कठिनाई इसके समझने में मै महसूस करता था। इसके भीतर मै अधीक गहराई तक न पहुँच पाया। परन्तु फिर प्रभु ने मुझे एक सुराख (clue) दिया, और दिखाया कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के पीछे एक अध्यात्मिक तत्व है, और फिर मैं उस पुस्तक

को समझने में समर्थ हुआ। मै यह नही कहता कि मैने सबकुछ आत्मिकता की दृष्टि से देखा, पर यह कि मैं उसे आत्मिक रुप से समझ चुका था। एक बादल उठाया गया और वहाँ पर जीवन था।

प्रभु के आगमन विषय इस बात को हम लागू करे; और, जरुर यह प्रभु का महिमामय आगमन है, जब वह महिमा के बादलों पर आएगा, जब वह अपने संतों में महिमा पाएगा – पूर्व की तरफ से प्रभु की आती हुई महिमा। हम में से बहुत से लोग काफी साल जीए है पर उनको यह महिमा उनके जीवन काल में देखने को नही मिली। वे कहते थे कि प्रभु उनके जिवन काल मे ही आनेवाला है, पर वे अभी भी अपनी कब्र में इसकी प्रतिक्षा कर रहे है। यह बात आपको अपने विषय से हटाकर यह कहने के लिए काफी है, कि हमने इसके विषय में पहले सुना है! यह बात आप को उन निन्दकों (scoffers) के बीच सम्मीलीत कराने के लिये पर्याप्त हो सकती है जिनके विषय पतरस लिखता है, "वे कहते है, कि उसके आने की प्रतिक्षा कहाँ गई? क्यों कि जब से हमारे पूर्वज सो गये है, सब कुछ वैसा ही है, जैसा सृष्टि के आरम्भ से था। वे जान बूझकर यह भूल गये।" (२ पतरस ३:४)।

अगर आप चाहे तो इस रवैया को अपना सकते है; पर यह इन सब के बावजूद भी, जब हम प्रभु के आगमन पर मनन (contemplate) करते है, तो हमारी विचारधारा (mentality), हमारे विवाद (arguments), और हमारे सभी बुरे इतिहास में बदलाव आता है, और इन में से हम प्रभु की महिमा उभरती हुई देखते है। इन सब के बावजूद भी ऐसा होता है। क्यों? ऐसा शुरु से ही कलीसिया के कार्यकाल के आरंभ से होता

आ रहा है, और हर एक युग (age) में ऐसा ही है; फिर भी पवित्र आत्मा जानता था कि प्रभु का आना कुछ हजारों साल तक न होगा। फिर भी जब परमेश्वर के आत्मिक लोग प्रभु के आगमन पर निर्भर होते है, तो उनके अन्दर एक बडी फुर्ती तथा सच्चे आनंद और महिमा का उगम हो जाता है। ऐसा क्यों होता है?

क्यों कि पवित्र आत्मा समय में निवास नही करता, वह समय के साथ संबंध नही रखता। पवित्र आत्मा समय (time) के बाहर रहता है और पहले से ही उसके साथ अन्त है और वह अन्त की आत्मा है, और जब हम आत्मा के अंदर आते है तो हम पवित्र आत्मा के अन्त में आ जाते है। पवित्र आत्मा समयहिन (timeless) है और हम समय के चक्र से बाहर आ जाते है तथा हमे सबकुछ मिलता है; हमे हमारा अन्त तथा परिपूर्णता का एहसास होता है। यही बात युहन्ना के पातमोस टापू पर आत्मा के द्वारा पकडे जाने से प्रकट हुई। इस प्रकार हम भी पवित्र आत्मा के प्रकाशन तथा उसकी महिमा की परिपूर्णता में जीवन बिता सकते है। हम यहाँ पर एक गवाह बनकर जीवन बिताना चाहिए, भविष्यवाणी के विषय में नही, प्रभु यीशु मसीह के द्वितिय आगमन की शिक्षा तथा उस संबंधी जुड़ी हुई सभी समस्याओं के विषय में नही, बल्कि उसकी आत्मिक अभिव्यक्ति (Spiritual meaning) के गवाह। यह क्या है?

यह ऐसा अन्त क्यों है जिसके लिये सदियों से परमेश्वर कार्य कर रहा है, इसी एक बात पर उसने उसका सारा मन लगाया है, इसी में उसे संतुष्टि, महिमा, स्तुति, परिपूर्णता मिलती है, और पवित्र आत्मा हमेशा उसीसे कुछ भला उत्पन्न करता है जब हम उस पर निर्भर होते है तथा उस की शरण लेते है। वह "हमारे विरासत की

खात्री”(the earnest ofour inheritance) है तथा यह विश्वास का मामला है इस विषय हमे चिताता है।

हम हमेशा प्रभु के आगमन की महिमा को महसूस नही करते, हम हर समय उस दिन के प्रकाशन में नही जीते; परन्तु “विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है,” और जब हम हमारे तर्क (arguments) से बाहर आकर आत्मा की सहभागिता में विलिन हो जाते है, तो सभी संदेह दूर हो जाते है। परमेश्वर की महिमा पूर्वी फाटक (east gate) से अंदर आने लगती है।

“अब बहुत ही थोड़ा समय रह गया है; आनेवाला आएगा,

और देर न करेगा। धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा।”

परमेश्वर करे हमारे विश्वास को मजबूत करे और हृदयों को स्थिर करे।